Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परोपकाराय सतां विभुतयः

श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह.

चतुर्विध संघने जिनमंदिरादिकमां हर हमेश उपयोगमां लेवा निमित्ते.

संग्रह करनार

शा. शिवनाथ लुंबाजी-वेताळपेठ पुना सिटी.

छपावी प्रसिद्ध करनार

पोरवाल एन्ड कंपनी.

वेताळपेठ घर नंबर ३५६ पुना सिटी.

वीर संवत २४५२] विक्रम संवत १९८२ [सन १९२५

आवृत्ति पहेली प्रत ५००

किंमत दस आना.

पोष्ट पेकींग खर्च बे आना.

एक पुस्तक मंगावनारे पोष्ट साथे बार आनानी पोष्ट टीकीटो मोकलीने मंगाववी. वी. पी. थी मगाववी नहीं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परोपकाराय सतां विभुतयः

श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह.

चतुर्विध संघने जिनमंदिरादिकमां हर हमेश उपयोगमां लेवा निमित्ते.

संग्रह करनार

शा. शिवनाथ लुंबाजी-वेताळपेठ पुना सिटी.

छपावी असिद्ध करनार

पोरवाल एन्ड कंपनी.

वेताळपेठ घर नंबर ३५६ पुना सिटी.

वीर संवत २४५२] विक्रम संवत १९८२ [सन १९२५

आवृति पहेली प्रत ५००

सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेसमां पटेल मूलचंदभाइ श्रीकमलाले छाप्युं, ठे. कालुपुर टंकशाळ—अमदावाद.

किंमत दस आना.

पोष्ट पेकींग खर्च बे आना.

एक पुस्तक मंगावनारे पोष्ट साथे बार आनानी पोष्ट टीकीटो मोकलीने मंगाववी. वी. पी. थी मंगाववी नहीं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तावना रुपे बे बोल.

हालना वखतमां पुस्तकोनो प्रचार दिवसे दिवसे वधतो जाय छे, अने तेथी घणा लोकोने ज्ञाननो बोध थाय छे. जिनेश्वर भगवाननी स्तुति स्तवनादी करवा निमीते प्राचिन अने अर्वाचिन कवियोए जुदी जुदी अनेक देशीओ उपर स्तवनादीको रचेला छे तथा चैत्यवंदनो अने स्तुतीओ विगेरे पण रचेली छे तेमांथी कोइ कोइ बाबतो अप्रसिद्ध होवाथी तेवी बाबतो लखेला पाना उपरथी अने कोइ कोइ बाबतो छापेला जुदा जुदा अनेक पुस्तको उपरथी चुंटी काढी तेनो संग्रह आ पुस्तकमां गोठवेलो छे.

पुस्तकमानां कोइ कोइ विषयो लखेला पाना उपरथी लेवाथी तेमां कोइ अशुद्धी रही हशे तेमज प्रेसदोषथी अथवा प्रुफ तपासनारनी दृष्टी दोषथी पण कोइ भुल रही हशे वास्ते सज्जनोए सुधारीने पुस्तकनो उपयोग करवो अने तेवी भुलो अमने पण लखी जणाववाथी बीजी आवृत्तिना वखते ते भुलो सुधारवामां आवशे.

संवत १९८२
मागशर शुदी १५
सोमवार तारीख
३० नवेम्बर
सने १९२५

प्रसिद्ध कर्ता.
पोरवाल एन्ड कंपनी.
वेताळपेठ नं ३५६ पुना सिटी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ विषयानुक्रमणीका ॥

॥ चैत्यवंदन १५१ नी अनुक्रमणीका ॥

अनुक्रम नंबर	नाम	पृष्ठ
१ थी ५	श्री ऋषभदेवजीनां पांच	१–२
६ थी ७	श्री अजितनाथजीना बे	३–४
८ थी ९	श्री संभवनाथजीना बे	४
१० थी ११	श्री अभिनंदनजीना बे	४–५
१२ थी १३	श्री सुमतिनाथजीना बे	५
१४ थी १५	श्री पद्मप्रभुजीना बे	६
१६ थी १७	श्री सुपार्श्वनाथजीना बे	६–७
१८ थी १९	श्री चंद्रप्रभुजीना बे	७
२० थी २१	श्री सुविधिनाथजीना बे	८
२२ थी २३	श्री शीतलनाथजीना बे	८–९
२४ थी २५	श्री श्रेयांसनाथजीना बे	९
२६ थी २७	श्री वासुपूज्यजीना बे	९–१०
२८ थी २९	श्री विमलनाथजीना बे	१०
३० थी ३१	श्री अनंतनाथजीना बे	११
३२ थी ३३	श्री धर्मनाथजीना बे	११–१२
३४ थी ३६	श्री शांतिनाथजीना त्रण	१२–१३
३७ थी ३८	श्री कुंथुनाथजीना बे	१३
३९ थी ४०	श्री अरनाथजीना बे	१४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४१ थी ४२	श्री मल्लिनाथजीना बे	....	१४
४३ थी ४४	श्री मुनिसुव्रतजीना बे	....	१५
४५ थी ४६	श्री नमिनाथजीना बे	....	१५–१६
४७ थी ५१	श्री नेमनाथजीना पांच	....	१६–१७
५२ थी ६०	श्री पार्श्वनाथजीना नव	....	१८–२२
६१ थी ६५	श्री महावीर स्वामीना पांच	....	२३–२४
६६ थी ६७	श्री चोवीश तीर्थंकरना बे	....	२५
६८ थी ७२	श्री मंधरस्वामीना पांच	....	२६–२८
७३ थी ७५	श्री सिद्धाचलजीना त्रण	....	२८–२९ तथा ३३
७६ थी ८४	श्री चैत्रीपुनमना नव	....	३०–३२
८५	श्री गिरनारजीनुं एक	....	३४
८६ थी ८७	श्री पंच तीर्थनां बे	....	३५
८८ थी ९२	श्री सिद्धचक्रजीनां पांच	....	३६–३८
९३ थी ९९	श्री दीवाळी पर्वनां सात	....	३९–४१
१००थी१०४	श्री पर्युषण पर्वनां पांच	....	४२–४४
१०५	बीस विहरमाननुं	....	४६
१०६	सर्व जिननुं एक	....	४७
१०७थी१०८	श्री चोवीश जिन लंछनना बे	....	४७–४८
१०९	तीर्थंकरनी राशीनुं	....	४९
११०	एकसो सितेर जिननुं	....	४९
१११	सिद्ध भगवाननुं	....	५०
११२	आवती चोवीसीनुं	....	५१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११३	सामान्य जिननुं	५२
११४	श्री जिननुं	५३
११५	जिन पूजानुं	५३
११६थी१२०	पांच ज्ञाननां पांच	५४–५७
१२१थी१२३	बीज तीथीनां त्रण	५८–५९
१२४थी१२६	पंचमी तीथीनां त्रण	६०–६१
१२७थी१२९	अष्टमी तीथीनां त्रण	६१–६४
१३०थी१३२	एकादशी तीथीनां त्रण	६५–६६
१३३थी१३४	मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनां नामनां बे	६६थी६८
१३५थी१३६	चौदश तीथीनां बे	७०
१३७	पंच तीथी महिमा वर्णननुं	७०
१३८	श्रीमहावीर स्वामीनां पंच कल्याणकनुं एक	७१
१३९	श्री अतित चोवीशीनुं	७२
१४०	श्री सिद्ध भगवाननुं	७२
१४१	श्री परमात्मानुं	७३
१४२	चउदसें बावन गणधरनुं	७३
१४३	श्री बावन जिनालयनुं	७४
१४४	प्रदक्षिणानुं	७४
१४५	विहरमान जिननुं	७५
१४६थी१४७	अढार दोष वर्जित जिननां बे	७५–७६
१४८	रोहीणी तपनुं	७६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४९	आंबील वर्द्धमान तपनुं	७७
१५०	वीसस्थानक नामनुं	७७
१५१	वीसस्थानक तपना काउसग्गनुं ...	७७

॥ स्तुति (थोय) जोडा २५ नी अनुक्रमणिका ॥

१–२	श्री ऋषभ देवजीना बे	७८–७९
३	श्री अजितनाथजीनी	७९
४	श्री शीतलनाथजीनी	८०
५–६	श्री शांतिनाथजीना बे	८१
७–८	श्री नेमनाथजीना बे	८२–८३
९–१०	श्री पार्श्वनाथजीना बे	८३–८४
११–१२	श्री महावीर स्वामीना बे	८५–८६
१३–१४	श्री मंधर स्वामीना बे	९५–९६
१५–१६	श्री सिद्धाचलजीना बे	९६–९७
१७	श्री चैत्री पुनमनी	९७
१८	श्री सिद्धचक्रजीनी	९८
१९	श्री पर्युषण पर्वनी	९९
२०	श्री वीशस्थानकनी	१००
२१	बीज तीथीनी	१०१
२२	पंचमी तीथीनी	१०२
२३	अष्टमी तीथीनी	१०२
२४	एकादशी तीथीनी	१०३
२५	चौदशी तीथीनी	१०४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तुति (थोय) छुटी एक गाथानी २५ अनुक्रमणिका ॥

१ थी १४ श्री अजितनाथजीथी धर्मनाथजी सुधी चौद ८७थी९१
१५ थी १९ श्रीकुंथुनाथजीथी नमिनाथजी सुधी पांच ९१थी९३
२० थी २४ श्री पांचज्ञाननी पांच .... ९३थी९५
२५ वर्धमान तपनी ९५

॥ स्तवनो १२५ नी अनुक्रमणीका ॥

१ थी २४ श्री रत्नविजयजीकृत चोवीश तीर्थंकरना स्तवनो २४ ... . १०५थी१२६
२५ थी ४८ श्रीमद् यशोविजयजी कृत चोवीश तीर्थंकरना स्तवनो २४ .... १४५थी१५८
४९ थी ७२ ,, ,, चौद बोलनी ... चोवीसीना स्तवनो २४ .... १५९थी१७७
७३ थी ९६ जुदा जुदा कवियोना रचेलामांथी चुंटी कहाडेला चोवीश तीर्थंकरना स्तवनो २४ १७८थी१९५
९७ श्री ऋषभदेवजीनुं (प्रथम जिनेश्वर पुजवा) १९५
९८ श्री शांतिनाथनुं (शांतिप्रभु विनती एक मोरोरे) १९७
९९ श्री नेमनाथजीनुं (सहसावनमां एक दिनस्वामा) १९७
१०० श्री पार्श्वनाथजीनुं (मोहन मुजरो लेज्यो राज) १९८
१०१ श्रीमहावीर स्वामीनुं (सुरसिद्धारथ भूपनोरे) १९९
१०२थी१०६ श्रीसाधारण जिनना पांच .... २००थी२०४
१०७थी१११ श्री मंधर जिनना पांच ... . १२७थी१३१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११२थी११६ श्री सिद्धाचलजीनां पांच .... १३२थी१३६
११७थी१२१ श्री सिद्धचक्रजीनां पांच ... . १३७थी१४०
१२२ श्री वीशस्थानकनुं (हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती) १४१
१२३ दीवाळीनुं (दीवाळीने दहाडेरे वीरप्रभुपामी) १४२
१२४ श्री पर्युषणनुं (प्रभु वीर जिणंद विचारी) १४३
१२५ श्री गौतमस्वामीनुं (पहेलो गणधर वीरनो रे) १४४

॥ छंद पांचनी अनुक्रमणिका ॥

१ श्री जिन सहस्रनाम वर्णन (जगन्नाथ जगदीश जग) २०४
२ श्री शांतिजिन विनति रूप (शारद माय नमुं शिर) २०७
३ श्री पार्श्वनाथनो (वंदो देव वामेय देवाधि देवं) २०९
४ श्री नवकारनो लघु छंद (सुखकारणभवियण) ... २१०
५ आत्महित विनति (प्रभु पाय लागी करुं सेव तारी) २११

॥ परचुरण विषय नव नी अनुक्रमणीका ॥

१ प्रभातमां भाववा नो भावना २१२
२ प्रभातनां पच्चरकाण बार ....२२०थी२२४
३ सांझना पच्चरकाण पांच ... ...२२४थी२२५
४ श्री रत्नाकर पच्चीशीना गुजराती अनुवादना काव्यो ... ...२२५थी२३०
५ थी ६ आरती बे २३०
७ थी ८ मंगल दीवा बे २३१
९ पुस्तकोनी जाहेर खबर २३२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादी संग्रह ॥

॥ श्री रुषभदेवजीनुं चैत्यवंदन पहेलु. ॥

॥ प्रथम नमुं श्री आदीनाथ, शत्रुंजय गीरी सोहे ॥ नाभिराया मारुदेवी नंदन, त्रिभुवन मन मोहे ॥ १ ॥ लाख चोराशी पूर्व आय, सोवनमय काया ॥ राणी सुनंदा सुमंगला, तस कंत सोहाया ॥ २ ॥ लंछन वृषभ वीराजतुए, धनुष पांचशे देह ॥ विनीता नगरीनो धणी, रूप कहे गुणगेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेवजिन चैत्यवंदन बीजुं ॥

॥ सर्वार्थ सिद्धे थकी, चविया आदि जिणंद ॥ प्रथम राय बनिता वसे, मानवगण सुखकंद ॥१॥ योनिनकुल जिणंदने, हाय[1] न एकहजार॥ मौनाती[2]ते केवली, वड हेठे निरधार ॥२॥उत्तराषाढा जन्म छे ए, धनराशि अरिहंस ॥ दशसहस परिवारशुं, वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ वर्ष. २ छद्मस्थपणुं व्यतित थयें.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ आदि जिन चैत्यवंदन त्रीजुं. ॥

॥ जय त्यादिम तीर्थेश, त्रिलोकी मंगल द्रुमः ॥ श्रेयः फलं सदालोका, यथालोका दुपासते ॥ १ ॥ श्रीमन्नाभि कुलादित्य, मरुदेव्यं गजप्रभो ॥ संसाराब्धि महापोत, जयत्वं वृषभ ध्वजं ॥२॥ नमस्ते जगदानंद, मोक्षमार्ग विधायक ॥ जैनेन्द्र विदिताशेष, भाव-स्तद्भाव नायकः ॥ ३ ॥ प्रक्षीणाशेष संस्कार विस्तार परमेश्वर ॥ नमस्ते वाक्यथातीत, त्रिलोक नर शेखर ॥ ४ ॥ भवाब्धि पतित्वा-नंत, सच्च संसार तारक ॥ घोर संसार कंतार, सार्थवाह नमो-स्तुते ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीनुं चैत्यवंदन चोथु ॥

॥ पदम जिनवर पदम जिनवर, पाय पणमेव ॥ शेत्रुंजा गिरि-वर मंडणो, नाभिराय कुल चंद सामो ॥ सत शाखा जे परवर्यो, करे सेव नित दिवस गामी ॥ जुगला धर्म निवारीओ, शुगवि रमणी उरहार ॥ वृषभ लंछन दुःखभंजणो, मरुदेवी तणो मल्हार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेव जिन चैत्यवंदन पांचमुं ॥

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरि॰ ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजर अमर अद्भुत अतिशय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अरि० ॥२॥ तिहुयण भवियण जणमण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं भाले, करजोडीनें त्रिकाल नमो ॥ अरि० ॥३॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन सज्जन, नयना नंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अरि० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत भविने हितवत्सल, तुंही कृपारस सिंधु नमो ॥ अरि० ॥५॥ केवलज्ञाना दर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जगहित, कारण जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ ॥ अरि० ॥ ७॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीओ अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरि० ॥८॥ इति ॥

॥ श्री अजितनाथनुं चैत्यवंदन ॥

॥ आव्या विजय विमानथी, नयरी अयोध्या ठाम॥मानवगण रिख रोहिणी, मुनिजनना विसराम ॥१॥ अजितनाथ वृष राशिए, जनम्या जगदाधार॥ योनि भुजंगम भयहरु, मौने वर्ष ते बार ॥२॥ सप्तपर्ण तरू हेठखेप, ज्ञान महोत्सव सार ॥ एक सहसशुं शिव वर्या, वीरधरे बहु प्यार ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बीजुं. ॥

॥ अजित अयोध्यानो धणो, गज लंछन गाजे ॥ जीतशत्रु विजया तणो, सुत अधिक दीवाजे ॥१॥ साडाचारशे धनुष्य देह, हेमवरण बीराजे ॥ बहोंतेर लाख पूर्व आयु, त्रिभुवन पति छाजे॥ ॥२॥ समेतशिखर अणसण करीए, पहोत्या मुक्ति मोझार ॥ रूपविजय कहे साहीबा, आवागमन निवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री संभवनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ संभवनाथ सदा जयो, मन वंछीत पुरे ॥ हय लंछन हेम वरण देह, दाखे दुःख दुरे ॥ १ ॥ राय जीतारी कुळ तिलो, सावथ्थी राया ॥ सेना माता जनमीयो, जग सुजश गवाया ॥ २ ॥ धनुष चारशे देहडीए, साठ लाख पूर्व आय ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप नमे नीत पाय ॥ ३ ॥इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सत्तमगेविज चवन छे, जनम्या मृगशिर मांहि ॥ देवगणे संभव जिना, नमीयै नित्य उत्सांहि ॥१॥ सावथ्थी पुरी राजीयो, मिथुन राशि सुखकार ॥ पन्नाग योनि पामिया, योनि निवारण हार ॥२॥ चौद वरस छद्मस्थमांए, नाण शाल तरु सार ॥ सहस व्रतीथुं शिव वर्या, वीर जगत आधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, अभिनंदन जिनचद ॥ पुनर्वसुमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जनमिया, राशि मिथुन सुखकंद ॥ १ ॥ नयोरी अयोध्यानो धणी, योनिवर मंजार ॥ उग्रविहारे तप तप्या, भूतल वरस अढार ॥२॥ वळी रायण पादप तलेंए, विमलनाण गणदेव ॥ मोक्ष सहस मुनिशुं गया, वीर करे नित्य सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

उंचपणे त्रणेशह, पंचाश धनुष प्रभु देह ॥ संवर राया सिद्धार्था, सुत सुमुज नेह ॥ १ ॥ लाख पंचाश पूर्व आयु, अयोध्यानो राणो ॥ सोवन वान बीराजतो, कपी लंछन जाणो ॥२॥ अभिनंदन प्रभु विनतोए, अंतरजामी देव ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप नमे नीत मेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सुमतिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ मेघराय अयोध्यानो धणी, मंगला पटराणी ॥ धनुष त्रणशें देहमान, लंछन क्रौंच जाणी ॥ १ ॥ हेमवरण बीराजतो, सुमति जिन सेवो ॥ लाख चालीश पूर्व आय, आपे शिव मेवो ॥ २ ॥ समेतशिखर मुक्ते गयाए, जगजीवन जगदीश ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुं मुज मळीयो इश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सुमतीजयंत विमानथी, रह्या अयोध्या ठाम ॥ राक्षस गण पंचम प्रभु, सिंह राशि गुणग्राम ॥१॥ मघा नक्षत्रे जनमिया, मुषक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनी जगदिश ॥ मोहराय संग्राममां, वरम गयां छवीश ॥२॥ जीत्यो प्रियंगु तलेए, सहस मुनि परिवार ॥ अविनाशी पदवी वर्या, वीर नमे सोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभुजिन चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवेयक नवमा थकी, कोसंबो घरवास ॥ राक्षस गण नक्षतरु, चित्रा कन्या राशि ॥१॥ वृश्चिक योनि पद्मप्रभु, छद्मस्था षट्मास ॥ तरु छत्रीवे केवली, लोका लोक प्रकाश ॥२॥ त्रण अधिक शत आठशुं ए, पाम्या अविचळ धाम ॥ वीर कहे प्रभु माहरे, गुण श्रेणी विश्राम ॥ ३ इति ॥

॥ बोजु. ॥

॥ पद्मप्रभ छट्ठा जयो, वरणे प्रभु रातो ॥ धरराय कौशंबी धणी, सुशीमा जश माता ॥१॥ कमळ लंछन अढीसें धनुष, शिव संपती दाता ॥ त्रीश लाख पूर्व आय, त्रिभुवननो त्राता ॥२॥ चौतीश अतिशय वीराजताए, सेवे सुरनर कोड ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप नमे कर जोड ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ जगतारण जीन सातमो, प्रतीष्ट रायानंद ॥ पृथ्वी माता उरे धर्यो, मुख पुनमचंद ॥ १ ॥ वीश लाख पूर्व आयु, बशो धनुष तनु दीपे ॥ स्वस्तिक लंछन श्री सुपास, अरोयणने जीपे ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्मठाम वणारशीए, देह कनकनो वान ॥ रुपविजय कहे साहेबा, दीये शीवरमणी दान । ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ ग्रेविज छट्ठेथी चव्या, वाणारसी पुरी वास ॥ तुला वैशाखा जनमिया, वय तपिया नव मास ॥१॥ गण राक्षस वृक योनियें शोभे स्वामी सुपास ॥ सरिस तरू तलें केवली, शेय अनंत विलास॥२॥ महानंद पदवी लहीए, पाम्या भवनो पार ॥ श्री शुभवीर कहे प्रभु, पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रभु चंद्रावती, पुरि चविया वैजयंत ॥ अनुराधायें जनमीया, वृश्चिक राशि महंता ॥१॥ मृगयोनि गण देवनो, केवल विण त्रिक मास॥ पाम्या नाग तरू तले, निर्मल नाण विलास ॥२॥ परमानंद पद पामियाए, वीर कहे निरधार ॥ साथे सलूणा शोभिता, मुनिवर एकहजार ॥३॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ महसेन मोटो राजीओ, सती लखमणा राणी ॥ चंद सम उज्वल वदन कांति, जनम्यो जयकारी ॥ १ ॥ चंद्रा नयरी जेहनी, चंद लंछन कहीए ॥ चंद्र प्रभजिन आठमा, नामे गहगहीए ॥२॥ धनुष दोढशे जोन तनुए, दश लख पूर्व आय ॥ रुपविजय प्रभु नामथी, दीन दीन बहु सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सुविधिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधी भली विध सेवतां, भय भावठ भांजे ॥ सुग्रीव राय सुत सेवतां, दुस्मन नवी गांजे ॥ १ ॥ मगर लंछन मन मोहतुं, नयरी काकंदी ॥ दोय लाख पूर्व आयु जोन, बोले जय वंदी ॥२॥ एकसो धनुषवर देहडीए, उज्वल वर्ण उदार ॥ रुपविजय प्रभु भवी नमो, रामा मात मल्हार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सुविधिनाथ सुविधि नमुं, श्वान योनि सुखकार ॥ आव्या आणंत स्वर्गथी, काकंदी अवतार ॥१॥ राक्षस गणगुणवंतने, धनराशि रिखमूल ' वरस चार छद्मस्थमां, कर्म शशक, शार्दूल[२] ॥२॥ मल्लि-तरु तले केवलीए, सहस मुनि संघात ॥ ब्रह्म महोदय पदवर्या, वीर नमे परभात ॥३॥ इति ॥

॥ श्री शीतलनाथस्वामीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा स्वर्ग थको चव्या, दशमा शीतलनाथ ॥ भद्दिलपुर धन राशिए, मानव गण शिवसाथ ॥ १ ॥ वानर योनि जिणंदनी, पूर्वा षाढा जात ॥ तिण वरसांतरे केवली. प्रियंगु विरुयात ॥२॥ संयम धर सहसें वर्या ए, निरुपम पद निर्वाण ॥ वीर कहे प्रभु ध्या-नथी, भव भव कोडी कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ हरण २ सिंह.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बीजु. ॥

॥ भद्दीलपुर दृढ रथ राय, नंदा पटराणी ॥ शीतल जिनवर जन्मतां, जननी कीर्ती गवाणी ॥ १ ॥ श्री वच्छ लंछन नेवु धनुष, देह सोवन समाणी ॥ एक लाख पूर्व आयु मान, कहे केवलनाणी ॥ २ ॥ सुखदायक दशमो सदाए, दे दोलत भरपुर ॥ रूपविजय कहे भवि नमो, प्रह उगमते सुर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वीष्नुराय कुल केशरी, माता विष्णु जायो ॥ खडग लंछन एंशी धनुष, सवी सुरपती गायो ॥ १ ॥ लाख चोराशी वरस आयु, भवियण मन भायो ॥ श्री श्रेयांस जीनेश्वरु, दीठे सुख पायो ॥ २ ॥ सोवन वरणी देहडोए, सोंह पुरोए अवतार ॥ रूपविजय कहे मुज मल्यो, त्रिभुवन तारण हार ॥३॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ अच्युतथी प्रभु उतरचा, सींहपुरे श्रेयांस ॥ योनि वानर देवगण, देवकरे परशंस ॥१॥ श्रवणे स्वामी जनमीया, मकर राशि दुगवास ॥ छद्मस्था तिदुक तले, केवल महिमा जास ॥ २ ॥ वाचंयम सहसे सहिए, भव संततिनो छेह ॥ श्रीशुभ वीरने सांइशुं अविचल धर्म सनेह ॥ ३ ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणत थकी प्रभु पांगर्या[१], चुंपे चंपा गाय ॥ शिवमारग

१ चव्या.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातां थकां, चंपा तरु विश्राम ॥ १ ॥ अश्वयोनि गण राक्षस, शत-भिषा कुंभराशि ॥ पाडल हेठे केवली, मौनपणे इगवासि[१] ॥ २ ॥ षटशत साथें शिव थयाए, वासुपूज्य जिनराज ॥ वीर कहे धन्य ते वडो, जब निरख्या महाराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ देवलोकथी दीपती, नयरी वर चंपा ॥ वासुपूज्य जिन जन्म ठाम, वसे लोक सुसंपा ॥ १ ॥ वसुपूज राजा राजीयो, जया जस पटराणी ॥ सीतेर धनुष वर देह राती, महीष लंछन जाणी ॥ २ ॥ वरस बहोतेर लाखनुए, आयु कहे जगनाथ ॥ रूप विजय कहे मुज मल्यो, शीव मार्गनो साथ ॥ ३ ॥ इति ॥

श्री विमलनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वंदो विमल जोनंद चंद, सुख संपति दाता ॥ कंपीलपुर कृतवर्मराय, श्यामा जश माता ॥ १ ॥ साठ धनुष वर देहमान, दीपे विख्याता ॥ सोवन वान विराजता. गुण सुर नर गाता ॥२॥ साठ वरस लख आउखुए, शुकर लंछन पाय ॥ श्री विनयविजय उवझायनेा, रूपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ अष्टम स्वर्गथकी चवी, कंपीलपुरमां वास ॥ उत्तरा भाद्रपदे जनम, मानव गण मीन राशि ॥ १ ॥ योनि छाग सुहंकरुं,

१ एकवर्ष छद्मस्थ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमलनाथ भगवंत ॥ दोय वरस तप निर्जली, जंबुतले अरिहंत ॥२॥ षट्सहस मुनि साथशुं, विमल विमल पद पाय ॥ श्री शुभवीरने सांइशुं, मळवानुं मन थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री अनंतनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ देवलोक दशमा थकी, गया अयोध्या ठाम ॥ हस्ति योनि अनंतने, देवगणे अभिराम ॥ १ ॥ रेवतीए जनम्या प्रभु, मीन-राशि सुखकार ॥ त्रण वरस छद्मस्थमां, नहि प्रश्नादि उचार ॥२॥ पींपळ वृक्षे पामीयाए, केवळ लक्ष्मी निदान ॥ सात सहसशुं शिव वर्या, वीर कहे बहु मान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ अनंत जिनेश्वर चौदमां, अयोध्याए अवतरीया ॥ सींह-सेन कुळ केशरी, सुजशा उर धरीया ॥ १ ॥ देह धनुष पंचाश मान, गुणशुं भरीया ॥ वरस त्रीश लाख आउखुं श्री केवळ वरी-या ॥ २ ॥ सींचाणा लंछन तनुए, कनक वर्ण, देह ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुजशुं अविहड नेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री धर्मनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ धर्म धुरंधर धर्मनाथ, धन सुव्रता जायो ॥ भानुराय सुत भानु जेम, सुरवधु हुलरायो ॥ १ ॥ धनुष पीस्तालीश देहमान, वज्र लंछन गायो ॥ वरस लाख दश आउखु, हेमवान सुहायो ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतन पुरी नयरी धणीए, पंदरमो भगवंत ॥ रुपविजयनो साहिबो, केवल कमला कंत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ विजय विमान थकी चव्या, रत्नपुरे अवतार ॥ धर्मनाथ गण देवता, कर्क राशि मनोहार ॥ १ ॥ जनम्या पुष्य नक्षेतरें, योनि छाग विचार ॥ दोय वरस छद्मस्थमां विचर्या धर्म दयाळ ॥ २ ॥ दधिपर्णधो केवलीए, वीर वरया बहु रिद्ध ॥ कर्म खपा बीने हुवा, अडसय साथे सिद्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री शांतिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वारथ सिद्धे थकी, चवीया शांति जिणेश ॥ हस्ति नागपुर अवतर्या, योनि हस्ति विशेष ॥१॥ मानव गण गुणवंतने, मेष राशि सुविलास ॥ भरणीए जनम्या प्रभु, छद्मस्था इगवास ॥२॥ केवल नंदी तरुतलए, पाम्या अंतर ज्ञाण ॥ वीर करमने क्षय करी, नव शतशुं निर्वाण ॥३॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ जय जय शांति जिणंद देव, हथ्थिणापुर स्वामी, विश्वसेन कुलचंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ अचिरा उर सर हंस जिम, जिनवर जयकारी ॥ मारी रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ शोलमा जिनवर प्रणमीयें ए, नित उठी नामी सीस ॥ सुरनर भूप प्रसन्न मन, नमतां वाधे जगदीस ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीजुं. ॥

॥ शांतिकरण श्री शांतिनाथ, गजपुर धणी गाजे ॥ वीस्वसेन अचीरा तणो, सुत सबळ दीवाजे ॥ १ ॥ धनुष चालीश हेमवर्ण काय, मृग लंछन छाजे ॥ लाख वरसनुं आउखुं, अरीयण मद भांजे ॥ २ ॥ चक्रवती प्रभु पांचमाए, शोळमां श्री जगदीश ॥ रुपविजय कहे मुझ मल्यो, पुरण सकल जगीश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री कुंथुनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सतरमां श्री कुंथुनाथ, श्री राणी जायो ॥ गजपुर नयरी सुरीराय, जाडवायस पायो ॥ १ ॥ सहस पंचाणु वरस आयु छाग लंछन धायो ॥ धनुष पांत्रीश वर देहडी, हेम वर्ण सुहायो ॥ २ ॥ चोसठ सहस वधु धणोए, पायक संख्या न पार ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुतयो मुज तार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥लव[1] सत्तम सुरभव तजी, गजपुर नयर निवास ॥ राक्षसगण कृतिका जनि, कुंथुनाथ वृषराशि ॥१॥ शोल वरस छद्मस्थमां, जिनवर योनि छाग ॥ घातिकर्म घातें करी, तिलक तले वीतराग ॥२॥ शैलेसी करणे करीए, एकसहस परिवार ॥ शिव मंदिर सिधावतां, वीर घणुं हुंशीयार ॥३॥ इति ॥

---

१ सर्वार्थसिद्धना देव.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री अरनाथजिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ ठाण सवठ थकी चव्या, नागपुरे अरनाथ ॥ रेवती जन्म महोत्सवा, करता निर्जर नाथ ॥१॥ जयकर योनि गजवरु, राशि मीन गणदेव ॥ त्रण वरसमां थिर थइ, टाळे मोहनी टेव ॥ २ ॥ पाम्या अंब तरु तलेंए, खायिक भावेनाण ॥ सहस मुनिवर साथशुं, वीर कहे निर्वाण ॥३॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ राय सुदर्शन गजपुरी, देवी पटराणी ॥ लंछन नंदावर्त जास, अरजीन गुणखाणी ॥ १ ॥ त्रीश धनुष वर देहडी, हेमवर्ण जाणी ॥ सहस चोराशी वर्ष आयु, करे केवल नांणी ॥ २ ॥ चक्रवर्ती प्रभु सातमोए, अढारमो मुज देव ॥ रुप कहे भवि एहने नमो, करो नीरंतर सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री मल्लीनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

मल्लीनाथ ओगणीशमां, मीथीलापती वंदो ॥ प्रभावती माये जनमीयो, कुंभराय कुळचंदो ॥ १ ॥ सहस पंचावन वरस आयु, नील वर्ण जीणंदा ॥ धनुष पंचवीश प्रभु देहमान, टाळे भव फंदा ॥ २ ॥ लंछन कळश सोहामणुए, सेवे सुर नर वृंद ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप लहे आणंद ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ मल्लिजयंत विमानथी, मिथिलानयरी सार ॥ अश्विनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनि जयंकरु, अश्विनीयें अवतार ॥ १ ॥ सुरगण राशि मेष छे, वंदित स्वर्गीलोक ॥ छद्मस्था अहो रातिनी, केवल वृक्ष अशोक ॥ ॥ २ समवसरणें बेशी करीए, तीर्थ प्रवर्त्तनहार ॥ वीर अचल सुखने वर्या पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतजिन चैत्यवंदन. ॥

॥ सुव्रत अपराजितथी, राजगृही रेहठाण ॥ वानर योनि राजती, सुंदर गण गिर्वाण ॥ १ ॥ श्रवण नक्षत्रे जनमिया, सुरवर जय जयकार ॥ मकरराशि छद्मस्थमां, मौन मास अगियार ॥२॥ चंपक हेठे चांपिया ए, जे घनघाति चार ॥ वीरवडो जगमां प्रभु, शिवपद एकहजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ जपो नीरंतर नेहशुं, वीशमो जीनराय ॥ मित्रराय पद्मावती, सुतसुं मुज माया ॥ १ ॥ कछप लंछन धनुष वीश, श्याम वर्णि काया ॥ त्रीश सहस वरस आउसुं, हरीवंश दीपाया ॥ २ ॥ मुनीसुव्रत महिमा नीलोए, जन्म राजग्रही जास ॥ रुपविजय कहे साहेबा, नामे लील विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री नमिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विजय राय विप्रा धणी, मीथीलानो नाथ ॥ धनुश पंदर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इम वर्ण देह, मेले शिवसाथ ॥ १ ॥ लंछन नीलुं कमळ जास, सरीया भव पाथ ॥ नमी नमतां नेहसुं, हवे थया सनाथ ॥ २ ॥ दश हजार वरसनुं आउखुए, एकवीशमो मुनि स्वामी ॥ रुप कहे मधु सांभलो, मन मोहुं तुमसुं स्वामी ॥ ३ ॥

॥ बीजु. ॥

॥ दशमा प्राणत स्वर्गथी, आव्या श्री नमिनाथ ॥ मिथिला नयरी रानियो, शिवपुर केरो साथ ॥ १ ॥ योनि अश्व अलंकरी, अश्वनी उदयो भाण ॥ मेष राशि सुरगण नमुं, धन्य ते दिन सुविहाण ॥ २ ॥ नव मासांतरे केवलीए, बकुल तळें निरधार ॥ वीर अनोपम सुख वर्यो, मुनि परिवंत हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमीनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ नेमीनाथ बावीशमा, अपराजितथी आय ॥ सौरीपुरमां अवतर्या, कन्याराशि सुहाय ॥ १ ॥ योनि वाघ विवेकीने, राक्षस गण अद्भुत ॥ रिख[1] चित्रा चोपनादिन, मौनवता मनपुत[2] ॥२॥ वेतस हेठे केवलीए, पंचसयां छत्रीश ॥ वाचंयमशुं शिववर्या, वीर नमे निशदिश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ ॐ नमो विश्वनाथाय, जन्मतो ब्रह्मचारीणे ॥ कर्मवल्ली वनच्छेद, नमयेऽरिष्ट नेमये ॥ १ ॥ यदुवंश समुद्रेंदु, कर्म कक्ष हुताशनः ॥ अरिष्ट नामिर्भगवान्, भूयाध्वोऽरिष्ट नाशनः ॥ २ ॥ अनंत परमानंद, पुणधामस्यवस्थितः ॥ भवंतं भवता साक्षी, भव्यतीह

---

१ नक्षत्र, २ पवित्र.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनो खिल ॥३॥ स्तुवंत रतावकं बींव, मन्यथा कथमीदृशं ॥ प्रभो-दाति क्षयश्चित्ते, जायते भुवनातिग ॥ ४ ॥ इति ॥

त्रीजुं.

॥ समुद्रविजय कुंलचंद नंद, शिवादेवी जाया ॥ यादव वंश नभोमणि, सौरीपुर ठाया ॥ १ ॥ बालथकी ब्रह्मचर्यधर, गतमार प्रचार ॥ भोक्ता निज आत्मिकगुण, त्यागी संसार ॥२॥ निःकारण जग जीवनेा ए, आज्ञानेा विसराम ॥ दीनदयाल शिरोमणि, पूरण सूरतरु काम ॥ ३ ॥ पशुआं पुकार सुणी करी, छांडी गृहवास ॥ तत्क्षण संयम आदरी, करी कर्मनेा नाश ॥४॥ केवल श्री पामी करीए, पहोता मुगतिमोझार ॥ जन्म मरण भय टालवा, ध्यान सदा सुखकार ॥ ५ ॥ इति ॥

चोथुं

॥ बावीशमा श्री नेमनाथ, नित्यउठी वदो ॥ समुद्रविजय सुत भानुसम, भविजन सुखकंदो ॥ १ ॥ सघन श्याम द्यति देहनी, दश धनुष्य शरीर ॥ अमित कांति यादव घणी, भांजे भवतीर ॥२॥ राजिमती रमणी तजीए, ब्रह्मचर्य धरधीर ॥ शिवरमणी सुख विल-सतां, भूप नमे धरी धीर ॥ ३ ॥ इति ॥

पांचमुं.

॥ राजुल वर श्री नेमीनाथ, शामलीओ सारेा ॥ शंख लं-छन दश धनुष देह, मनमोहन गारो ॥ १ ॥ समुद्रविजय राय कुल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीलो, शिवादेवी सुत प्यारो ॥ सहस वरस प्रभु आउखुं, पाम्युं सुखकार ॥ २ ॥ श्री गीरनारे मुक्ते गयाए, सौरीपुर अवतार ॥ रुपविजय मन वालहो, जगजीवन जीनराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जयोजयो श्री पार्श्वनाथ, सुख संपतीकारी ॥ अश्वसेन वामा तणो, नंदन मनोहारी ॥ १ ॥ नील वर्ण नव हाथ देह, अही लंछन धारो ॥ एकसो वरसनुं आउखुं, वरीया शिवनारी ॥ २ ॥ जन्म ठाम वणारशीए, प्रत्यक्ष परचयोदेव ॥ सानिधकारी साहीबा, रुप कहे नितमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ नयरी वाणारसीयें थया, प्राणतथी परमेश ॥ योनि व्याघ्र सुहंकरी, राक्षस गण सुविशेष ॥१॥ जन्म विशाखायें थयो, पार्श्व प्रभु महाराय ॥ तुलाराशि छद्मस्थमां, चोराशी दिन जाय ॥२॥ धवतरु पासे पामीयाए, क्षायक दुग उपयोग ॥ मुनि तेत्रिशें शिव वर्या, वीर अक्षय सुख भोग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं. ॥

॥ पुरिसां दाणी पार्श्वनाथ, नमीय मन रंग ॥ नीलवरण अश्वसेन नंद, निरमल निस्संग ॥ १ ॥ कामीत दायक कल्पसाख, वामा सुतसार ॥ श्री गवडीपुर स्वाम नाम, जपिय निरधार ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिभुवन पति त्रेवीसमोए, जास अखंडीत आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोड कल्याण. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ चोथुं. ॥

॥ सकल भविजन चमत्कारो, भागी महिमां जेहनो ॥ निखिल आतम रमा राजित, नाम जपीये तेहनो ॥ दुष्ट कर्माष्टक गजारी, भविक जन मन सुखकरो ॥ नित्य जाप जपीये, पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ॥१॥ बहु पुण्यराशी देश काशी, तथ्य नयरी वणारशी ॥ अश्वसेन राजा राणी वामा, रूपे रति तलुं सारशो ॥ तस कुखे सुपन्न चौद सूचित, स्वर्गथी प्रभु अवतरयो ॥ नित्य० ॥२॥ पोश मासे कृष्णपक्षे, दशमि दिन प्रभु जनमीया ॥ सुरकुमरि सुरपति भक्ति भावे, मेरु शृंगे स्थापिया ॥ प्रभाते पृथ्वी पति प्रमोदे, जन्म महोच्छव अति कर्यो ॥ नित्य० ॥३॥ त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आविया ॥ तब मात तातने परण्य चाते, भामिनि परणावीया ॥ कमठ शठकृत अग्निकुंडे, नाग बळता उधर्यो ॥ नित्य० ॥४॥ पोश वदि एकादशी दिन, प्रवज्यां जिन आदरे ॥ सूर असूर राजो भक्ति ताजी, सेवना झाझी करे॥काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, किध परिसह आकरो ॥ नित्य०॥५॥ तब ध्यान धारारुढ जिनपति, मेघ धारे नवि चळयो ॥ तिहां चलित आसन धरण आयो, कमठ परिसह अटकळयो ॥ देवाधि देवनी खरी सेवा, कमठने काढी परो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ क्रमे पामी केवळज्ञान कमळा, संघ चउवीह स्थापीने, प्रभु गया मोक्षे समेत शिखरे, मास अणसण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाळोने ॥ शिवरमणी संगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करे ॥ ॥ नित्य० ॥ ७ ॥ भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोधर भय टळे ॥ राज्य रमणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मळे ॥ कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत त्राता जयकरो ॥ नित्य० ॥ ८ ॥ जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारता, वढीयार देशे नित्य विराजे, भविक जीवने तारता ॥ ए प्रभु तणा पद पद्म सेवा, रूप कहे प्रभुता वरो ॥ नित्य जाप जपोये, पाप खपीये, स्वामोनाम शंखेश्वरो ॥९॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय । विश्व चिंतामणीयते ॥ ह्रीं धरणेंद्र वैरोट्या । पद्मादेवी युतायते ॥१॥ शांति तुष्टि महा पुष्टि । धृतिकीर्त्ति विधायिने ॥ ॐ ह्रीं धिद् व्याल वैताल । सर्व्वाधिव्याधिनाशने ॥२॥ जया जिताख्या विजया । ख्यापरा जितयान्वित ॥ दिशापाल ग्रहैर्यक्षै । र्विद्यादेवी भिरन्वितः ॥३॥ ॐ असिआउसायनमः । स्तत्रैलोक्य नाथतां ॥ चतुः षष्टिसुरेंद्रास्ते । भाषंते छत्र चामरैः॥४॥ श्री संखेश्वर मंडन । पार्श्व जिन प्रणत कल्पतरु कल्प ॥ चूरय दुष्ट व्रातं ॥ पुरयमे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ छठुं. ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीठुं,त्रीलोकमां एटलुं सार दीठुं॥ सदा समरतां सेवतां पाप नाठुं, मन माहरे ताहरू ध्यान बेठुं॥१॥ मन तुम पासे वसे रात दीवसे, मुख पंकज नीरखवा हंस हीसे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धन ते घडी जे घडी नयण दीसे, भली भगति भावे करी वांनविषे ॥२॥ अहो एह संसार छे दुःख दोरी, इंद्रजालमां चित लागी ठगोरी ॥ प्रभु मानीए विनती एक मोरी, मुज तार तुं तार वलीहारी तोरी ॥३॥ सही मुझ जंजालमां संग मोह्यो, घडीआलमां काल रमतो न जोयो ॥ मुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणे जल विलोयो ॥४॥ एतो भ्रम लोके सुवा भ्रांति धायो, जड सुकतणो तंतु मांहे भरायो ॥ सुके जंतु जाणी ग्रभे दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥ भम्यो भ्रम भुल्यो रम्यो कर्म भारी, दयाधर्मनी वात नवी वीचारी ॥ तोरी नम्र वाणी परम सुखकारी, तीहुं लोकना नाथ नवी संभारी ॥ ६ ॥ विषय वेलडी सेलडी करी जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तोरी वाणी ॥ एवो भलो भुंडो नीज दास जाणी, प्रभु राखीए बांहनी छाह प्राणी ॥ ७ ॥ मारा विविध अपराधना कोड सहीए, प्रभु सरणे आव्या तणी लाज वहीए ॥ वली घणी घणी विनति एम कहीए, मुज मानस परमहंस रहोए ॥ ८ ॥ कलस ॥ कृपामूर्ति पार्श्वस्वामी मुगती गामी ध्याइये। अति भक्ति भावे विपत जावे तास संपती पाइए ॥ प्रभु महिमा सागर गुण वैरागर पास अंतरीक जे स्तवे । तस सकल मंगल जयजयारव आनंद वर्धन विनवे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ सातमुं ॥

॥ जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ॥ अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥ प्रभुनामे आनंदकंद,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख संपत्ति लहीयें ॥ प्रभुनामे भवभय तणा, पातक सब दहियें ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करीए, जपीये पारस नाम ॥ विष अमृत थई परगमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ आठमुं ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथ नमस्तुभ्यं, विघ्न विध्वंस कारिणे ॥ निर्मलं स प्रभानंदे, परमानंद दायिने ॥ १ ॥ अश्वसेना वनीपाल, कुल-चूडामणि प्रभो ॥ वामासुनो नमस्तुभ्यं, श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वर ॥२॥ क्षितिमंडल मुकुटं, धार्मिक निकटं, विश्वप्रगटं, चारुभटं ॥ भवरेणु समीरं, जलनिधितीरं, सुरगिरिधीरं गंभीरं ॥ जगत्रयं शरणं, दुर्गति हरणं; दुर्द्धर चरणं; सुखकरणं ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रं; नत नागेंद्रं; नमत सुरेंद्रं कृतभद्रं ॥ ३ ॥ कमठे धरणेंद्रे च, स्वोचितं कर्म्म कुर्व्वती ॥ प्रभुस्तुल्य मनोवृतिः, पार्श्वनाथ श्रियेऽस्तुवः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ नवमुं. ॥

॥ प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्वजिनं, जिननायक दायक सुख घनं ॥ घनचारु महोत्तम देहधरं, धरणी पति नित्य सुसेवकरं ॥ ॥ १ ॥ करुणा रस रंचित भव्य फणि, फणि सप्त सुशोभित मौलि-मणि ॥ मणि कंचन रूप त्रिकोटि घटं, घटितासुर किन्नर पार्श्वतटं ॥२॥ तटिनीपति घोष गंभीर स्वरं, स्वरनाकर अश्व सुसेन नरं ॥ नरनारी नमस्कृत्य नित्यमुदा, पद्मावतो गावतो गीत सदा ॥ ३ ॥ सहनेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारण मुक्तहठं ॥ हठ हेलित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्म कृतांतबलं, बलधाम धुरंधर पंकनलं॥४॥जलजध्वय पत्र प्रभा-नयनं, नयनंदित भव्य नरेश्व मनं ॥ मन मन्मथ महीरुह वन्हिसमं, समतामय रत्नकरं परमं ॥५॥ परमार्थ विचार सदा कुशलं, कुशलं कुरुमे जिननाथ अलं ॥ अलिनी नलिनी नलिनील तनुं, तनुतामप्रभु पार्श्वजिनं सुधनं ॥ ६ ॥ धन धान्यकरं करुणा परमं, परमामृत सिद्धि महासुखदं ॥ सुखदायक नायक संतभवं, भवभूत प्रभु पार्श्वजिनं शिवदं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामीजीनुं चैत्यवंदन ॥

उर्ध्व लोक दशमा थकी, कुंडपुरे मंडाण ॥ वृषभ योनि चो-वीशमा, वर्द्धमान जिन भाण ॥ १ ॥ उतरा फाल्गुणी उपना, मा-नवगण सुखदाय॥ कन्यारशि छद्मस्थमां, बार वरस वही जाय॥२॥ शाल विशाल तरु तलेंए, केवलनिधि प्रगटाया ॥ वीर बिरुद धरवा भणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं ॥

॥ वर्द्धमान जिनवर धणी, प्रणमुं नित्य मेव ॥ सिद्धारथ कुल चंदलो, सुर निर्मित सेव ॥ १ ॥ त्रिसला उयर सर हंस सम, प्रगट्यो सुखकंद ॥ केसरी लंछन विमल तनु, कंचनमय वृंद ॥२॥ महावीर जगमां वडोए, पावापुरि निर्वाण ॥ सुरनर भूप नमे सदा, पामे अविचल ठाण ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ त्रीजुं. ॥

॥ नव चोमासी तप कर्या, त्रणमासीदोय ॥ दोय दोय अढीमासी, तिम दोय मासी होय ॥१॥ बहोत्तेर पास खमण कर्या, मास खमण कर्या बार ॥ षट मासी आदर्या, बार अठम तप सार ॥ २ ॥ षटमासी एक तिम कर्यो, पण दिन उण षटमास ॥ बर्स ओगणत्रीस छठभला, दिक्षा दिन एक खास ॥ ३ ॥ भद्र प्रतिमा दोय तिम, महाभद्र दिन च्यार ॥ दस दिन सर्वतो भद्रना, लागट निरधार ॥ ४ ॥ विण पाणी तप आदर्यो, पारण दिन जास ॥ द्रव्या हारण नक कह्यो, त्रणसें उगण पंचास ॥५॥ छद्मस्थे एणीपरे रह्या, सह्या परिसह घोर ॥ शुकल ध्यांन अनलें करी, बाल्या कर्म कठोर ॥ ६ ॥ शुकल ध्यान अंतर रह्या ए, पाम्या केवलनाण ॥ यशविजय कहे प्रणमतां, लहीये नित्य कल्याण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ चोथुं. ॥

॥ वर्धमान चोवीशमां, क्षत्रीकुंडे जाणो ॥ सिधार्थ त्रिशला तणो, नंदन सुर राणो ॥ १ ॥ सोवन वरणी सात हाथ, सींह लंछन सोहे ॥ वरस बहोंतेर आयु जास, भवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ अपापाये शीवपुर गयाए, वीर जिनेश्वर राय ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ छत्र शिरपर छत्र शिरपर, त्रण सोहंत ॥ चामर सुरपति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चालवे, मधुरी वाणी त्रिभुवन मोहे ॥ सिद्धारथ कूल अवतरया, त्रिशला देवी जननी सोहे ॥ चरणें मेरु चलाविओ, समरथ लंछन सिंह ॥ महावीर जिन नित नमुं, मह उगमते दह ॥१॥ इति ॥

श्री चोवीश तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन.

॥ श्री शंखेश्वर ईश्वरं, प्रणमी त्रिकरणयोग ॥ देवनमन चउमासीये, करशुं विधि संयोग ॥ १ ॥ रोषभाजित संभव तथा, अभिनंदन जिनचंद ॥ सुमति पद्म प्रभु सातमा, स्वामीसुपास जिणंद ॥ २॥ चंद्र प्रभु सुविधिजिन, श्री शीतलश्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वरवंश ॥ ३ ॥ शांतिकुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रतस्वामी ॥ नमी नेमीसर पासजिन, वर्द्धमान गुणधामि॥४॥वर्त्तमान जिन वंदतांए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण सुगता तणी, वीर रचे वरमाल ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ बीजुं, ॥

॥ रुषभ अजित संभव नमो, अभिनंदन जिनराज ॥ सुमती पदम सुपास जिन, चंद्रप्रभु महाराज ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य सुख वास ॥ विमल अनंत श्रीधर्म जिन, शांतिनाथ पूरे आश ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन, मुनीसुव्रत जगनाथ ॥ नमी नेमी पारस वीर, ए साचो शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ द्रव्य भावथी सेवीये, आणी मन उल्लास ॥ आतम निर्मल कीजीये, जिम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पामी जे सिववास ॥ ४ ॥ एम चोवीस जिन समरतां ए, पाचे मननी आश ॥ अमीकुमर एणी परे भणे,ते पामे लील वीलास॥५॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्री सिमंधरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ वंदुं जिनवर विहरमान, सिमंधर स्वामी ॥ केवल कमला कांत दांत ॥ करुणारस धामी ॥ १ ॥ कंचनगिरि सम देह कांत, वृष लांछन पाय ॥ चोराशी लख पूर्व आय,सेवित सुर राय, ॥२॥ छठ भक्त संयम लीयोए, पुंडरिगिणि भाण ॥ प्रभु थो दरिसण संपदा, कारण परमकल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं ॥

॥ जंबुद्विप पूरव दीशे, पुष्कल वइ विजये ॥ नयरी पुंडर गिणी निरमली, धर्म सदा जिहां सजीए ॥ १ ॥ श्रेयांस नरेसर नंद चंद, सत्यकी मात मल्हार ॥ रुखमणी राणी वालहो, शिववधु उरहार ॥ २ ॥ धनुष पांचसे देहमान, कंचन वरणी काय ॥ वृषभ लंछन रलियामणो, पूर्व चोराशी आय ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अंतर जन्म, श्रीमंधर जिनराज ॥ वीस लाख पूर्व कुमर पद, त्रेशठ लाख पूर्वराज ॥ ४ ॥ श्री मुनीसुव्रत जव विचरता, तव प्रभु लीये दीक्षा ॥ कर्म खपावो केवल लही, दोये बहु जन शिक्षा ॥ ५ ॥ उदय नाथने शासने, वरशे शिव पटराणी ॥ सो कोड मुनीराजजी, दस-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाख केवल नाणी ॥ ६ ॥ सकल गुणे करी शोभता ए, शिवरम· णी शिणगार ॥ श्रीरूपविजय कविरायनो, माणेक कहे मुझतार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ त्रीजु ॥

॥ श्री सीमंधर विचरता, सोहे विजय मोझार ॥ समवसरण देवे रच्युं, बेसे परखदा बार ॥ १ ॥ नव तत्व दीये देशना, सांभळे सुरनर कोड ॥ षट द्रव्यादिक वरणवे, छे समकित कर जोड ॥ २ ॥ इहां थकी जिन वेगळा, सहस तेत्रीश शत एक ॥ सत्तावन जोजन वलि, सत्तार कला विवेक ॥ ३ ॥ द्रव्यथकी प्रभु वेगला, भावथी हृदय मोझार ॥ त्रण काळ वंदन करुं, स्वास माहे सोवार ॥ ४ ॥ श्रीसीमंधर जिनवरु ए, पुरे वंछित कोड ॥ कांति-विजय प्रभु प्रणमतां, भक्ते बेकर जोड ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ चोथुं ॥

॥ पूर्व दिशि इशान कूण, पुरुकलमें विजया ॥ नयरी पुंड-रिगिणी तिहां, सीमंधर थुणीया ॥ १ ॥ पूर्वायु चोराशी लख, कांचन मय काया ॥ उंचपणे सय धनुश्य पंच, प्रणमे सुरराया ॥ २ ॥ जयवंता जिन विचरंता, केवल दीपक देव ॥ श्री सीमंधर स्वामीजी, देजो तुम पद सेव ॥ ३ ॥ वीशलाख पूर्व कुंवर वास, भोगवी जिनेश्वर ॥ त्रेसठ लाख पूर्व राजऋद्धी, पाली अलवेश्वर ॥ ४ ॥ मुनीसुव्रत जिन विहरमान, तइये तुम दीक्षा ॥ तीर्थंकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पद लहिय स्वामी, महियल द्यो दिक्षा ॥ ५ ॥ एह अमे ओलग करू, सुणज्यो बीजा चंद ॥ वंदणा हमारी वीनंती, जइ कहेज्यो जिनचंद ॥६॥ समवसरण बेठा जिणंद, उपदेशे जिनधर्म ॥ भविक जिव वाणी सुणी, बांधे जे शुभ कर्म ॥ ७ ॥ आठ कर्म चारे कषाय, अढार दोष छंडाय ॥ लही नाण चौतीश अतिशया, वाणी गुण कहेवाय ॥ ८ ॥ भरत क्षेत्रनां भविकजन, वांछे तुम आशिष ॥ हर्षपणे धर्मलाभ द्यो, पूरो संघ जगीश ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामो ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हित कामी ॥ १ ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंत वंत, अंतर्गत जामी ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजताए, श्री सीमंधर स्वामी ॥ त्रिकरण शुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धाचल शिखरे चढो, ध्यानधरो जगदीश ॥ मन वच काय एकाग्रथी, नाम जपो एकवीश ॥ १ ॥ (१) शत्रुंजय गिरि वंदीये, (२) बाहुबली गुणधाम ॥ (३) मरुदेवने (४) पुंडरिक गीरि, (५) रेवतागिरि विश्राम ॥ २ ॥ (६) विमलाचल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७) सिद्धराजजी, (८) नाम भगीरथ सार ॥ (९) सिद्धक्षेत्रने (१०) सहस्र कमल, (११) मुक्तिनिलय जयकार ॥३॥ (१२) सिद्धाचळ (१३) शतकूटगिरि, (१४) ढंकने (१५) कोडीनीवास ॥ (१६) कदंबगिरि (१७) लोहितनमो, (१८) तालध्वज [१९] पुण्यराशि ॥ ४ ॥ [२०] महाबल (२१) दृढशक्ति सही, ए एकवीशह नाम ॥ साते शुद्धि समाचरी, करीए नित्य प्रणाम ॥ ५ ॥ दग्ध शून्य ने अविधि दोष, अति प्रवृत्ति जेह ॥ चार दोष छंडी भजो, भक्तिभाव गुण गेह ॥ ६ ॥ मणुय जन्म पामी करीए, सद्गुरु तीरथ योग ॥ श्री शुभवीरने शासने, शिवरमणी संयोग ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ श्री आदिनाथ जगन्नाथ, विमलाचल मंडन ॥ जयनाभि कुलाकाश, प्रकाशन दिवाकर ॥ १ ॥ तवदेव पदांभोज, सेवापि दुर्लभा भवेत् ॥ पुण्य संभार हीनानां ॥ कल्पवल्ली व देहिनाम् ॥२॥ ते धन्या मानवा देवा, योगमन्तव शासनं ॥ वंदनीया विभातोये, वंदंते भवतः पदौ ॥ ३ ॥ प्रचंड मम रागादि, रिपुसंतति घातकं॥ श्रीयुगादि जिनाधीशं, देवं वंदे मुदा सदा ॥ ४ ॥ श्री शत्रुंजय कोटीर, कृतं राज्यश्रिया विभो ॥ सर्वोघनाशनं मेस्तु, शासनं ते भवे भवे ॥ ५ ॥ पाताळे यानि बिंबानि, यानि बिंबानी भूतले ॥ स्वर्गेपियानि बिंबानि, तानिवंदे निरंतरम् ॥ ६ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चैत्री पुनमनुं चैत्यवंदन.

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल सावो ॥ आदीश्वर जिनरायनो, जोहां महिमा जावो॥ १॥ इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिववास ॥ एह गिरि सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥२॥ दुष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु भव संचित जेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह ॥ ३ ॥

बीजुं.

॥ ए तीरथ उपर अनंत, तीर्थंकर आव्या॥ वली अनंता आवशे, समंतारस भाव्या ॥१॥ आ चोवीशी मांहि एक, नेमीश्वर पांखे॥ जिन तेवीश समोसर्या, एम आगम भांखे ॥२॥ गणधर मुनिवर केवली, समोसर्या गुणवंत ॥ प्रेमे ते गिरि प्रणमतां, हरखे दान हसंत ॥ ३ ॥ इति ॥

त्रीजुं.

॥श्री शत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, पुंडरिक गिरि साचो ॥ विमलाचलने तीर्थराज, जस महिमा जाचो॥१॥ मुक्ति निलय शतकूट नाम, पुष्पदंत भणीजे॥ महापद्मने सहस्रपत्र, गिरिराज कहीजे ॥२॥ इत्यादिक बहु भांति शुं ए, नाम जपो निरधार ॥ धीरविमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोथुं.

॥ चैत्री पुनमनो अखंड, शशीधर जिम दीपे, अंगारक आदि अनेक, ग्रह गणने झोपे ॥ १ ॥ तिम पर तीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनंत, दीपंत दीवाजे ॥ २ ॥ चैत्री पुनमने दीने ए, भजो एह भगवंत ॥ श्री विजयराज सूरिंदनो, दान सकल सुख हुंत ॥ ३ ॥ इति ॥

पांचमुं.

॥ आदीश्वर जिनरायनो, पेहेलो जे गणधार ॥ पुंडरिक नामें थयो, भविजनने सुखकार ॥ १ ॥ चैत्री पुनमने दिने, केवल सिरि पामी, इण गिरि तेहथी पुंडरिक; गिरि अभिधा पामी ॥२॥ पंच कोडि मुनिशुं लह्या ए; करी अनशन शिव ठाम ॥ ज्ञानविमल सूरि तेहना; पय प्रणमे अभिराम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ छठुं. ॥

॥ जोयण शत परिमाण एक, जे पहिले आरे ॥ बीजे आरे जोयण जेह, अंशी विस्तारे ॥ १ ॥ तिम त्रीजे जोयण सार, चोथे पंचास ॥ पांचमे आरे बार सार, विस्तार छे जास ॥ २ ॥ छठाने अंते हुशेए, एक हस्त जस मान ॥ एह अवस्थित छे सदा, ते प्रणमे मुनि दान ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ सातमुं ॥

॥ भरत नरेसर भरत क्षेत्र, चक्रि इण ठामे ॥ आव्यो संघ सजी सनूर, मन आणंद पामें ॥ १ ॥ कंचनमय प्रासाद कीध, उत्तंग उदार ॥ मंडप तोरण विविध जाल, मालित चउ बार ॥२॥ घणु पणसय पित मणि तणिए, थापी रुषभनी मूर्ति ॥ दान दया कर तीर्थथी, पसरी जग जस कीर्ति ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ आठमुं ॥

॥ रुषभनी प्रतिमा मणिमयी, भरतेश्वर कीधी ॥ ते प्रतिमा छे इणे गिरि, एह वात प्रसिद्धि ॥ १ ॥ देखे दरिसण कोय जास, मानव इणे लोके ॥ त्रीजे भवे जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके ॥ २ ॥ स्वर्ण गुफा पश्चिम दिशे ए, ए छे जास अहि ठाण ॥ घन सुहंकर विमलगिरि, ते प्रणमुं हित आण ॥३॥ इति॥

॥ नवमुं ॥

॥ सगरादिक नरपति अनेक, इणे पर्वत आव्या ॥ विविध विचित्र विराजमान, प्रासाद कराव्या ॥ १ ॥ भक्ति धरी जिनवर तणी, बहु प्रतिमा थापी ॥ तिणे महियलमां तेहनी, कीरति अति व्यापी ॥ २ ॥ सुरपति नरपतिना थया ए, इहां बहु उद्धार॥ ते शत्रुंजय सेविये, दान सकल सुखकार ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सकळ तिर्थ शिर सेहरो, शेत्रुंजा गिरी सोहे ॥ त्रिभुवन तारण तीर्थए, दीठां मन मोहे ॥ १ ॥ ए गिरी उपर आवीया, तिर्थंकर त्रेवीश ॥ सदा नाम ए शास्वतो, नमिये ते निश दीश ॥ ॥ २ ॥ आदि जिणंद समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ रायण तळे श्री ऋषभना, पद प्रणमो धरी प्यार ॥३॥ सदा नाम ए शाश्वतो, भाखे श्री भगवंत ॥ जात्राजे जुगते करे, आवे सही भव अंत ॥ ॥ ४ ॥ पुंडरिक गणधर प्रमुख, मुगति गया मुनिराज ॥ सिद्ध गिरी सेव्यां थकी, कीधां वंछित काज ॥ ५ ॥ विमल वसी गुण वर्णव्यो, अनुपम सेाल उद्धार ॥ युगाधीश जिनराजने, सेवे सहु नरनार ॥ ६ ॥ राम वाघण दोय पोळ ए, प्रथम तीर्थ प्रवेश ॥ मोतीवशी प्रेमावशी, हेमावशी मुनी शेष ॥७॥ खरतर वशी छीपा-वशी, निरखी जे नितमेव ॥ अदबुद स्वामी अती भलेा, दीठो अद्भुत देव ॥ ८ ॥ नदी शेत्रुंजो नाहीये, करीये निर्मल काय ॥ प्रभुपद पुंजे प्रेम शुं, जनम पाप मिट जाय ॥ ९ ॥ ए तीरथनी उपरे, ठावा तीरथ ठाम ॥ पछिम दिश पेसेा सही, रयण बिंब अभीराम ॥ १० ॥ उलखा डोळी अती भली, नवण बिंब जल-नीर ॥ सोभाचंदन तळावडी, सुधरे काज शरीर ॥ ११ ॥ सिद्ध शिला पासे सही, शांति जिन चोमास ॥ साधु अनंता शिव लह्या वसोया शिवपद वास ॥१२॥ सिद्धवडे साधु वडा, जप तप करतां जाण ॥ करम कठण मेटी करी, निश्चे पद निरवांण ॥ १३ ॥ एक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शत आठे आगला, उत्तम ए गिरा नाम ॥ जघन्य एकवीश जाणज्यो, करवा सुकृत काम ॥ १४ ॥ सुरत कुंड सहायथी, नरपतो चंद नरिंद ॥ कुर्कट रुप मेटी करी, शोभा लही फुलचंद ॥ १५ ॥ छहरी पाले जे समकिती, राखी मन एकतार ॥ नरक कुल गती वारीने, शिवसुख लहे श्रीकार ॥ १६ ॥ अगसठ दोय अठम करी, ए गिरी फरसे आप ॥ सुर सुख पामे शास्वता, प्रगटे पुन्य पसाय ॥ १७ ॥ गोमुख जक्ष चक्रेश्वरी, सदा करे जिन सेव ॥ सानिध्यकारी संघने, दायक वंछीत देय ॥ १८ ॥ श्री सिद्धाचल सेवीये, आणी प्रेम अपार ॥ सदगुरु राज पसायथी, हंस नमे हितकार ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ श्री गिरनारजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ नायक त्रिभुवन नाथजी, श्री नेमी जिनसार ॥ प्रभुपद प्रेमे पूजीये, गोरुओगढ गिरनार ॥ १ ॥ ए गिरी उपर एहना, तीन कल्याणक तास ॥ अरिहंत भगती अनुसरो, आणो मन उल्लास ॥ २ ॥ जादवकुल दिनकर जिस्यो, ब्रह्मचारी सरदार ॥ सतिया मांहे शीरोमणो, रुडी राजुल नार ॥३॥ सहसा वन संयम लीयो, गिरीपर केवलज्ञान ॥ कृपानाथ सरखी करी, भामनीने भगवान ॥ ४ ॥ साते टुंक सोहामणी, ए तीरथ अहीठाण ॥ पंचम टुंके श्री प्रभु, पाम्या पद निरवांण ॥ ५ ॥ गुणी अढारे गणधरा, गिरुआ बहु गुणवंत ॥ सहस अढारे श्रमणने, सेवो भविजन संत ॥ ६ ॥ आद भवानी अंबिका, ए तीरथ रखवाल ॥ सेवोभवी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधेमने, जावे भवदुःख जाल ॥७॥ भविजन भावे भेटीये, आणी-मन आणंद ॥ हंसविजय नमे हरखशुं, पामे परमानंद ॥८॥ इति ॥

॥ श्री पंच तिर्थनुं चैत्यवंदन ॥

॥ धुर समरुं श्री आदिदेव, विमलाचल मंडण ॥ नाभिराया कुल केसरी, मारुदेवी नंदन ॥१॥ गिरनारे गिरुवो वांदशुं, स्वामी नेमकुमार ॥ बालपणे चारित्र लीयो, तारी राजुल नार ॥ २ ॥ बंभण वाडे वीर जिणंद, मन वंछित पुरे ॥ सायण डायण भुत प्रेत, तेहना मद चूरे ॥ ३ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ, महिमाये महंतो, गोडी दोढी जाइये, पुरे मननी खंतो ॥ ४ ॥ चक्रवर्ति पदवी तजी, लीधो संजम भार॥ शांति जिणेसर सोलमां,नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ५ ॥ पंचे तीरथ जे नमे, मह उठी नरनार ॥ कमळविजय कवी एम कहे, तस घर जय जयकार ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ आजदेव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति-मा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥१॥ शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिमय मूरतिमानशुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, जिहां वीशे जिन पाय ॥ वैभारक गिरि उपरें, श्रीवीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांडव गढनो राजियो, नाभं देव सुपास॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पहोचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमळा ॥ ए देशी ॥

॥ सकल मंगल परम कमला, केली मंजुल मंदिरं ॥ भव कोटि संचित पाप नासन॥नमो नवपद जयकरं ॥१॥ अरिहंत सिद्ध सूरी वाचक, साधु दरिसण सुखकरं ॥ वर ज्ञानपद चारित्र तप ए ॥ नमो० ॥२॥ श्रीपाळ राजा शरीर साजा, सेवता नवपद वरं ॥ जगमाहे गाजा किरति भाजा ॥ नमो० ॥३॥ श्री सिद्धचक्र पसाय संकट, आपदा नासें अरं ॥ वली विस्तरे सुख मनोवंछित ॥नमो०॥ ॥ ४ ॥ आंबिल नव दिन देववंदन, त्रणे टंक निरंतरं ॥ दोयवार पडिकमणा पलेवण ॥ नमो० ॥ ५ ॥ त्रिकाळ भावे पुजीये भव, तारक तीर्थंकरं ॥ तिम गणणुं दोय हजार गुणीये ॥ नमो० ॥६॥ एम विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधीये ॥ तप वर्ष साढाच्यार नवपद ॥ नमो० ॥ ७ ॥ गद कष्ट चुरे सर्व पुरे, यक्ष विमलेश्वर वरं ॥ श्रीसिद्धचक्र पसाय माणिक, विजय विलसे सुखकरं ॥ नमो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ सिद्धचक्र आराधतां, भवसागर तरिये ॥ ॥ भव अटवीथी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उतरी शिव वधुने वरीये ॥१॥ अरिहंत पद आराधतां, तिर्थंकर पद पावे ॥ जग उपकार करे घणो, सिधो शिवपुर जावे ॥२॥ सिद्ध पद ध्यातां थकां, अखय अचल पद पावे ॥ कर्म कटक भेदी करी, अकल अरूपी थावे ॥३॥ आचारज पद ध्यावतां, जुगप्रधान पद पावे ॥ जिनशासन अजवालीने, शिवपुर नयर सोभावे ॥४॥ पाठक पद ध्यावतां, वाचक पद पावे ॥ भणे भणावे भावसुं, सुरपुर शिवपूर जावे ॥ ५ ॥ साधुपद आराधतां, साधुपद पावे ॥ तप जप संयम आदरे, शिवसुंदरीने कामे ॥ ६ ॥ दरसण नाण पद ध्यायतां, दर्सण नाण अजुआले ॥ चारित्र पद ध्यायता, शिव मंदिरमां माछे ॥ ७ ॥ केशर कस्तुरी केतकी, मचकुंद मालति माले ॥ सिद्धचक्र सेवुं त्रिकाल, जिम भयणाने श्रीपाले ॥८॥ नव आंबील नव वार शियल, समकितसुं पालो ॥ श्री रुपविजय कविराजनो, माणेक कहे थइ उजमालो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं ॥

॥ पेहले पद अरिहंतना, गुण गाउ नित्ये ॥ बीजे सिद्धतणा घणा, समरो एक चित्ते ॥ आचार्य त्रिजे पदे, भणमो विहुं करजोडी, नमीये श्री उवझायने, चोथे मद मोडी ॥२॥ पंचमपद सर्व साधुनुं ए, नमतां नाणो लाज ॥ ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥ दंसण शंकादिक रहित, पदे छठे धारो ॥ सर्व नाणपद सातमे, खिण एक नवि विसारो ॥ ४ ॥ चारित्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोथुं चित्तथी, पद अष्टमे जपीए ॥ सकल भेद विचे दान फल, तप नवमे तपीये ॥५॥ ए सिद्धचक्र आराधतां, पुरे वंछित कोड ॥ सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे करजोड ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ चोथुं ॥

॥ प्रथम नमुं अरिहंतने, गुण बार सहिता ॥ पद बीजे नमो सिद्धने, भवीअड गुणवंता ॥ १ ॥ पद त्रीजे आचार्यजी, गुण छत्रीश विराजे ॥ उपाध्याय चोथे पदे, जस गुण पचवीश छाजे ॥ ॥ २ ॥ सतावीश गुण साधुजी, ते त्रिलोकमां नमिंद्र ॥ सडसठि बोले अलंकर्यो, दर्शन गुण रमिंद्र ॥ ३ ॥ ज्ञान नमो पद सातमे, भेद एकावन रुप ॥ चरण सित्तरी गुण नमो, निजगुण रमण स्वरुप ॥ ४ ॥ नवमे पद भवि तप नमो, इच्छारोधक जेह ॥ भेद पचास छे एहना, अशुभ करम दव मेह ॥५॥ अंगदेश चंपा धणी, मयणां साथे श्रीपाळ ॥ सिद्धचक्र आराधीने, जेम लहो ऋद्धि रसाळ ॥ ६ ॥ तेम आराधे जे भवी, सिद्धचक्र मन रंग ॥ श्री जिन दीपक एम कहे, ते लहे शिव सुख संग ॥७॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ सिद्धचक्र सेवो सदा, भावे भवि प्राणी ॥ वंछित पूरण सुरतरु, सुरमणी सम जाणी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र सेव्यो जेणे, सवि गुण मणी खांणी ॥ ऋद्धि वृद्धि नव निधि सिधि, निज मंदिर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आणी ॥ २ ॥ सिद्धचक्र आराधशेए, भाव धरो नर देह॥ संसार सागरने तरी, शिवसुख लेशे तेह ॥ ३॥ आसेा शुदी चैत्रो शुदी, करी निर्मळ काय ॥ नव दिन आंबिल तप तपो, जेम नवनिधि पाय ॥ ४ ॥ जाप जपो अरिहंत सिद्ध, सूरि उवझाय ॥ साहु दंसण नाण चरित्र, तप शिव सुखदाय ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पूजो भावशुंए, सेवो साधु महंत ॥ पडिकमणादिक विधि करो, जेम लहो सुख अनंत ॥ ६ ॥ अंगदेश चंपा पुरीश, श्री श्रीपाळ कुमार ॥ सिद्धचक्र आराधीने, पाम्या सुख सार ॥ ७ ॥ रोग शोग तस नवणथी, नाठा निरधार ॥ पाम्यो वंछित राज रुद्धि, परण्या बहु नार ॥ ८ ॥ एम जाणी भवि सेवज्येाए, जेम लहो सुख अपार॥ ज्ञानविजय गुरु नामथी, नयविजय जयकार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवाळीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ मगधदेश पावापुरी, प्रभु वीर पधारया ॥ सोल पोहोर देइ देशना, भवि जीवने तारया ॥ १ ॥ भूप अढारे भावे सुणे, अमृत जीसी वाणी ॥ देशना दोवे रयणीये, परण्या शिवराणी ॥ २ ॥ राय उठी दीवा करे, अजवाळाने हेते ॥ अमावास्या ते कही, वळी दीवाळी कीजे ॥ ३ ॥ मेरु थकी आव्या इंद्र, हाते लेइ दीवी ॥ मेराइया दिन सफळ करो, लोक कहे सवी जीवी॥४॥ कल्याणक जाणी करी, दीवा ते कीजे ॥ जाप जपो जिनराजनो,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पातिक सवि छीजे ॥ ५ ॥ बीजे दीन गौतम सुणी, पाम्या केवळ ज्ञान ॥ बार सहस गुणणु गुंणो, घर होसे कोड कल्याण ॥ ६ ॥ सुरनर किन्नर सहू मिली. गौतमने आपे ॥ भट्टारक पदवी देई, सहू साखे थापे ॥ ७ ॥ जवार भट्टारक थकी, लोक करे जुहार ॥ बेन भाइ जिमाडीया, नंदी बर्धन सार ॥ ८ ॥ भाइ बीज तिहां थकी, वीर तणो अधिकार ॥ जयविजय गुरु संपदा, मुजने दीयो मनोहार ॥ ९ ॥

॥ बोजुं. ॥

॥ वीर जिनवर वीर जिनवर, चरम चौमास, नयरी अपापाये आवीया ॥ हस्तिपाल राजन सभाये, कार्तिक अमावास्या रयणिये ॥ मुहूर्त शेष निर्वाण ताहिं ॥ सोल पहोर देइ देशना, पहोत्या मुक्ति मझार ॥ नित्य दीवाली नय कहे, मलिया नृपति अढार ॥ १ ॥

त्रीजुं.

॥ देव मलिया देव मलिया, करे उत्सव रंग, मेरइयां हावे ग्रही ॥ द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रनें ॥ ठाम ठाम एह ओच्छव प्रसिद्धो ॥ लखकोडी छठ फल करी, कल्याणक करो एह ॥ कवि नयविमल कहे इश्युं, धन धन दहाडो तेह ॥ २ ॥

चोथुं

श्रीसिद्धार्थ नृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात॥ हरि लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ १ ॥ त्रीश बरस गृहवास छंडी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीये संयम भार ॥ बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥२॥ त्रीश वरस एम सवि मली ए, बहोतेर आयु प्रमाण ॥ दीवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुणखाण ॥ ३ ॥ इति महावीर स्वामी निर्वाण चैत्यवंदन. त्रयम् ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ नमो गणधर, नमो गणधर, लब्धि भंडार॥ इंद्रभूति महिमा निलो, वड वजीर महावीर केरो ॥ गौतम गोत्रे उपन्यो, गणि अग्यार माहे वडेरो ॥ केवलज्ञान लहुं जिणे, दीवालो परभात ॥ ज्ञान विमल कहे जेहना, नाम थकी सुखशात ॥ १ ॥

॥ छठुं ॥

॥ इंद्रभूति पहिलो भणुं, गौतम जस नाम ॥ गोवर गामे उपन्या, विद्याना धाम ॥ १ ॥ पंचसया परिवारशुं, लेई संयम भार ॥ वरस पचास गृहे वश्या, व्रते वर्षज त्रीश ॥२॥ बार वरस केवल वरचाए, बाणुं वरस सवि आय ॥ नय कहे गौतम नामथी, नित्य नित्य नवनिधि थाय ॥ ३ ॥

॥ सातमुं ॥

॥ जीवकेरो जीवकेरो, अछे मनमांहि ॥ संशय वेद पदे करी, कही अर्थ अभिमान वारयो ॥ श्री महावीर सेवा करी, ग्रही संयम आप तारयो ॥ त्रिपदि पामी गुंथीया, पूरव चउद उदार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नय कहे तेहना नामथी, होये जय जयकार ॥ १ ॥ इति गौतम स्वामी केवलज्ञान चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ श्री पर्युषण पर्वनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्पविहार ॥ चार मासान्तर थीर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥ आषाढ शुद चउदश थकी, संवत्सरी पंचास ॥ मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिकमतां चौमास ॥ ॥ २ ॥ श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ॥ कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एक तान ॥ ३ ॥ जिनवर चैत्य जुहारीए, गुरु भक्ति विशाल ॥ आये अष्ट भवांतरे, वरीए शिव वरमाल ॥४॥ दर्पणथी निजरुपनो, जुवे सुदृष्टि रुप ॥ दर्पण अनुभव अर्पण, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥ आत्म स्वरुप विलोकतांए, प्रगटयो मित्र स्वभाव॥ राय उदायी खामणां, पर्वपर्युषण दाव ॥ ६ ॥ नव बखाण पूजी सुणो, शुकल चतुर्थी सीमा ॥ पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विरोधी नीमा ॥७॥ ए नहीं पर्वे पंचमी,सर्व समाणी चोथे॥ भव भीरु मुनि मानसे, भाख्युं अरिहा नाथे ॥ ८ ॥ श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अवतार॥ श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ बीजुं ॥

॥ श्री श्री पज्जोसणपर्व सेवो, भवीजन सहु हरखी ॥ वेण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रासी सर्व परवणी, निज आतम परखी ॥ १ ॥ गुण अनंत छे जेहना, धर्मध्यान नित कीजे ॥ प्रभु गुण सर्व संभालीने, निज भाव ओलखीजे ॥ २ ॥ कल्पतरु सम कल्पसूत्र, निजमंदिर पधरावो ॥ गीत गान मन भावसुं, सुभ भावना भावो ॥ ३ ॥ करी वरघोडो अभीनवो, जीन शासन दीपावो ॥ शुभकरणी अनुमोदतां, गुरु समीपे लावो ॥ ४ ॥ गुरु मरुपे वायणा, भाव भक्तिने काजे॥ छठ्ठ तप करी निर्मलो, आतमशक्ति माटे ॥५॥ प्रतिपदाए प्रभु वीरनो, जन्म महोछव किजे ॥ भगती वच्छल भगवंतनी, सुकृत भव कीजे ॥ ॥ ६ ॥ अठम तप करी निरमलो, सकल सुणो अधिकार ॥ नागकेतुनीपरे निरमलो, जेम पामेा भवपार ॥७॥ वली सुणवा वारसे सुत्रनां, भवी थइ उजमाल ॥ श्रीफल स्वामी प्रभावना, करी टालो जंजाल ॥८॥ अठाइ महोच्छव एणीपरे, पालो निरती चार ॥ कारज कारण फल होशे; तेा तरसेा भवपार ॥९॥ बीप नंदीसर आठमे, देवमली सुभदाय ॥ अठाइ ओच्छव करी, निजनिज थानक जाय ॥ १० ॥ सुलभ बोधी जीवना, हरखी साते धात ॥ ते माटे आराधवा, मन कीजे रलीयात ॥ ११ ॥ तपगच्छ नायक गुण नीलोए, विजयसेन सुरीराय ॥ पंडीत पद्मविजय तणो, दीपविजय गुण गाय ॥ १२ ॥ इति ॥

त्रीजुं.

॥ प्रणमुं श्री देवाधि देव, जिनवर श्री महावीर ॥ सूरनर सेवा शांतदांत, प्रभु साहस धीर ॥१॥ पर्व पर्युषण पुन्यथी, पामी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवी प्राणी ॥ जैन धर्म आराधीये, समकित हित जाणी ॥२॥ श्री जिनप्रतिमा पूजिये ए,कीजे जन्म पवित्र ॥ जीव जतन करी सांभळे, प्रवचन वाणि वनित ॥ ३ ॥ इति ॥

चोथुं.

॥ वडा कल्प परव दिने, घरे कल्पने लावो ॥ राति जगा प्रमुखे करी, शासन ने सोभावेा ॥ १ ॥ हयगय सिणगारी कुमर, लावेा गुरु पासे ॥ वडा कल्प दिन सांभलो, वीर चरित्र उल्लासे ॥ २ ॥ छठ द्वादश तप कीजीये, धरीये शुभ परिणाम ॥ स्वामीवच्छल प्रभावना, पुजा अभिराम ॥ ३ ॥ जिन उत्तम गौतम प्रतें, कहेजो एकवीस वार ॥ गुरु मुख पद्मे भावसुं, सुणे तो पामे भवपार ॥ ४ ॥ इतिं ॥

पांचमुं.

॥ श्री शेत्रुंजो सिणगारहार, श्री आदि जिणंद ॥ नाभिराया कुल चंद्रमा, मरुदेवी माय ॥ १ ॥ काश्यप गोत्र इखाग वंश, विनितानेा राय ॥ धनुष पांचसे देहमान, सोवन सम काय ॥ २ ॥ वृषभ लंछन धूर वंदियेए, संघ सकल सुभरीत ॥ अठाइधर आराधीयें, आगम वांणी वनीत ॥ ३ ॥ (बीजुं) प्रणमुं श्री देवाधिदेव, जिनवर महावीर ॥ सुरनर सेव्यो सांतदांत, प्रभु साहस धीर ॥ १ ॥ परव पजूसण पुण्यथी, पामी भवी प्रांणी ॥ जैन धरम आराधियें, समकित हित जांणी ॥ २ ॥ श्री जिनप्रतिमा पूजी-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

येए, कीजे जनम पवित्र ॥ जीव जतन करी सांभलो, प्रवचन वांणी वनित ॥ ३ ॥ (त्रीजुं) कल्पतरु वर कल्पसूत्र, पूरे मनवंछित ॥ कल्पधर धूरथी सुणो, श्री वीर चरित्र ॥ १ ॥ खत्रो कुंडे नरपति, सिद्धारथ राय ॥ राणी त्रिसला तणी कुखे, कंचन सम काय ॥२॥ पुष्पोतर विमानथी चवीए, उपना पून्य पवित्र ॥ चतुरा चौद सूपन लहे, उपजें विनय विनित ॥ ३ ॥ (चोथुं) सुपनविध कहे सूत होस्यें, त्रिभुवन सिणगार ॥ ते दिनथी रिद्धें वध्या, धन अखुट भंडार ॥ २ ॥ साढासात दिवस अधिक, जनम्या नवमासे ॥ सुरपति करे मेरु सिखरे, उच्छव उल्लासें ॥ २ ॥ कुंकुम हाथा दोजोये ए, तोरण झाकझमाल ॥ हरखे वीर हुलरावीये, वांणी वनित रसाल ॥ ३ ॥ (पांचमुं) जिननी बहेन सुदर्सना, भाइ नंदिवर्द्धन ॥ परणी यसोदा पदुमनी, वीर सकोमल रत्न ॥ १ ॥ देह दान संवत्सरी, लेइ दिक्षा स्वामी ॥ कर्म खपावी थया केवली, पंचमी गति पांमी ॥ २ ॥ दीवाली दीवस थकीए, संघ सकल सुभ रीत ॥ अठम करी तैलाधरे, सुणज्यो एकहि चित्त ॥ ३ ॥ (छठुं) पास जिणेसर नेमनाथ, समुद्रथी वैष्णुव सूणीये ॥ आदिसरना चरित्र, जिननां अंतर सुणीये ॥१॥ गौतमादीक थीरावली, सुद्ध समाचारी ॥ पर्व दीन चौथे दिनें, भाषा गणधारी ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए, जिनधरमें जिन चित्त ॥ जिन प्रतिमा जिन सारीखी, वंदु सदा वनित ॥ ३ ॥ (सातमुं) पर्वराज संवच्छरी, दिनदिन प्रते सेवो ॥ श्लोक बारसे कल्पसूत्र, वीर मुनिनो सुणो ॥ १ ॥ परम पाटपर बार बोल, भाख्या गुरु हिरे ॥ संपति श्री विजय मानसूरी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गच्छपति गणधीरे ॥ २ ॥ जिनशासन सोभा करुए, कीर्ति विजय कहे सीस ॥ वीनय विजय कहे वीरने, चरणे नामुं सीस ॥ ३ ॥ इति पजुषण चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ वीस विहरमाननुं चैत्यवंदन ॥

पहेला श्रीसंधर नमो, बीजा जुगसंधर ॥ बाहुजिन त्रिजा नमो, सुबाहु सुखकर ॥ १ ॥ सुजात जोन पंचमा, स्वयंप्रभु जिन छठा ॥ रुषभानन जिन सातमा, अनंतवीरज जिन दीठा ॥२॥ सूरप्रभु नवमा नमो, दशमा देवविसाल ॥ वज्रधर जिन इग्यारमा, चंद्रानन दयाल ॥ ३ ॥ चंद्रबाहु जिन तेरमा, चउदमा भुजंगनाथ ॥ ईश्वरस्वामी पनरमा, नेमी प्रभुनो करो साथ ॥ ४ ॥ वीरसेन जिन सतरमा, महाभद्र जिनराज ॥ देवजसा ओगणीसमा, अजितवीरज महाराज ॥ ५ ॥ जंबूद्वीपे च्यार जिन, धातकीखंडे आठ ॥ पुष्करार्द्धे आठ जिन, नमतां होय नित ठाठ ॥ ६ ॥ ए वीसे जिन वंदीए, विहरमान जगदीस ॥ पूजो प्रणमो प्रेमशुं, धरो ध्यान निस दीस ॥ ७ ॥ धन ते देश नगर पुरी, जिहां विचरे जिनराज ॥ भवि जीवने प्रतिबोधता, सारे आतम काज ॥ ८ ॥ अनुभव रसमयि देशना, स्यादवाद समुदाय ॥ सत्ता धर्म प्रकासता, दुरगति दुःख पलाय ॥ ९ ॥ जिन उत्तम पाद रूपनी ए, निस दिन करो सेवा ॥ अमीकुमर एणीपरे भणे, मोक्ष तणां सुख लेवा ॥१०॥इति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ सर्व जिननुं चैत्यवंदन.

॥ श्रीसीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ ऋषभादिक वली वंदोये, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वली ग्यार ॥ समेत शिखर ए पंच तीरथ, पंचम गति दातार ॥ २ ॥ उर्ध्व लोकें जिनवर नमुं, ते चोरासो लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर भाख ॥ ३ ॥ एकशो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुमालीश सातशे, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनभवन नमुं, सात कोड बहोंतर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्यासी कोड, शाठ लाख चित राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली, ए जिनभुवन अपार ॥ ते भवि नित वंदन करो, जेम पामो भवपार ॥ ६ ॥ तीर्च्छे लोके शाश्वतां, श्री जिनभुवन विशाल ॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ, वंदुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिन पडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण भुवन मांहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदिए, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥ इति ॥

श्री चोविश जिन लंछन चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषभलंछन ऋषभदेव, अजितलंछन हाथी ॥ संभव लंछन घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदन लंछन कपि, क्रौंच लंछन सुमति ॥ पद्मलंछन पद्मप्रभु, विश्वदेवा सुमति ॥२॥ सुपार्श्व-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंछन साथियेा, चंद्रप्रभु लंछन चंद्र ॥ मगर लंछन सुविधि प्रभु, श्रीवच्छ लंछन शीतलजिणंद ॥ ३ ॥ लंछन खड्गी श्रेयांसने, वासुपूज्यने महिष ॥ सूवर लंछन पाये विमलदेव, भविया ते नामेा शिष ॥ ४ ॥ सिचाणो जिन अनंतने ए, वज्रलंछन श्रीधर्म ॥ शांतिलंछन मरगलो, राखे धर्मनो मर्म ॥५॥ कुंथुंनाथ जिन बोकडो, अरजिन नंदावर्त ॥ मल्लि कुंभ वखाणीये, सुव्रत कच्छप विख्यात ॥ ॥ ६ ॥ नमिजिनने नीलोकमल, पामीए पंकजमांही ॥ शंखलंछन प्रभु नेमजी, दीसे उंचे आंहि ॥ ७ ॥ पार्श्वनाथजीने चरण सर्प, नीलवरण शोभित ॥ सिंहलंछन कंचन तनु, वर्द्धमान विख्यात ॥ ॥८॥ एणीपेरे लंछन चिंतवी ए, ओलखीए जिनराय ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवता, लक्ष्मीरतन सूरिराय ॥ ९ ॥

॥ बीजुं ॥

॥ वृषभ लंछन रुषभदेव, अजितनाथने हाथी ॥ संभवनाथने घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदनजीने कपी, क्रौंच लंछन सुमति ॥ पद्म प्रभुने पद्म, वंदी कापो कुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्वजिनने साथीओ, चंद्रप्रभुने चंद्र ॥ सुविधिनाथने मघरमत्स्य, शिव शितळ इंद्र ॥ ३ ॥ खडगिय श्रेयांसनाथने, वासुपूज्यने महिष ॥ विमळनाथने सुअर छे, अनंतसिंचाणो वहिष ॥ ४ ॥ धर्मनाथने वज्र वळी, शांतिनाथने हरण ॥ कुंथुनाथने बोकडो, जंघे जिमणे चरण ॥ ५ ॥ अरजिन नंदाव्रत छे, मल्लीनाथने [illegible] ॥ मुनिसुव्रतने काचबो, नमि निळोत्पळ जळश ॥ ६ ॥ [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाथने पांच जन्यए, पार्श्वनाथने सर्प ॥ महावीरने सिंह छे, प्रभु चोवीशे अदर्प ॥ ७ ॥ सोळे जिन सोवन समाए, पद्म वासुपूज्य राता ॥ मल्ली पार्श्व लीलडा, आपे सुखशाता ॥ ८ ॥ चद्रप्रभुने सुविधि श्वेत, मुनिसुव्रत नेमकाळा ॥ कर्म शत्रुने संहरी, वरिया शिवमाळा ॥ ९ ॥ तरण तारण त्रिहुं लोकनाए, जिहां छे सुरज चंद्र ॥ करजोडी प्रभुने कहे, श्री नंदय सोम सुरिंद ॥ ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थंकरनी राशिनुं ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे ॥ कुंथु अजित वृषभाति ॥ संभव अभिनंदन मिथुन ॥ धर्म करक सिंह सुमती ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रभु नेमविर ॥ पास सूपास तुलांए ॥ शशी वृश्चक धन रुषभदेव ॥ सुविधि शोतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने, बारमा घटमिन लील ॥ वीमल अनंत अरनामथी ॥ सुखोया श्री शुभवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ एकसो सित्तेर जिन चैत्यवंदन ॥

सोळे जिनवर शामळा, राता त्रीश वखाणुं, लीला मरकत मणिसमा. आडत्रिश गुणखाणुं ॥ १ ॥ पीला कंचन वर्ण समा, छत्रीशे जिनचंद; शंख वरण सोहामणुं,पचाशे सुखकंद ॥२॥ सोत्तेर सो जिन वंदीए ए, उत्कृष्टा समकाल; अजितनाथ वारे हुवा, वंदू

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थइ उजमाल ॥३॥ नाम जपंतां जिनतणुं, दुरगति दूरे जाय; ध्यान ध्याता परमात्मनुं, परम महोदय थाय ॥ ४ ॥ जिनवर नामे जश भलो, सफल मनोरथ सार; शुद्ध प्रतिती जिनतणी, शिवसुख अनुभव धार ॥ ५ ॥

॥ सिद्धजगवाननुं चैत्यवंदन ॥

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं ॥ ध्यान रूप अनुपम उपम, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ गगन मंडल मुक्ति पद्मं, सर्व उर्द्ध निवासनं ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे, ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह मेराउखं ॥ नामगोत्र निरंतराय, ॥ नमो० ॥३॥ विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं ॥ रागद्वेष विमनोत अंकुर, ॥ नमो० ॥ ४ ॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समोरितं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥ नमो० ॥ ५ ॥ योगमुद्रा सम समुद्रा, करी पल्यंकासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥ नमो० ॥ ६॥ जगत जनके दास दासी, तास आश निरासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ ७ ॥ समय समकित दृष्टि जनकी, सोय योगी अयोगिकं ॥ देखिता मिलिन होवे, ॥ नमो० ॥ ८ ॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, भेद पंच दशादिकं ॥ सर्व कर्म विमुक्ति नैतन, ॥ नमो० ॥ ९ ॥ चंद्र सूर्य दीप मणीकी, ज्योति तेने ओलगीकनं ॥ तज्यो तिथी कोई अपर ज्योति, ॥ नमो० ॥ १० ॥ एक मांहे अनेक राजे, नेक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांहि एकक ॥ एक नेककी नहि संख्या, नमो० ॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अनंत, निराकार निरंजनं ॥ ब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन, ॥ नमो० ॥ १२ ॥ अचल सुखको लहेरमां, प्रभु लीन रहे निरंतरं ॥ धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन, ॥ नमो० ॥ १३ ॥ ध्याने धूप मने पुष्पर्श, पंच इंद्र हुताशनं ॥ क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं ॥ १४ ॥ नमो सिद्ध निरंजनं ॥ इति ॥

॥ आवती चोवीसीनुं चैत्यवंदन ॥

श्री पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणीक नृपजीव ॥ सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव ॥ १ ॥ श्री सुपार्श्व त्रीजावळी, जीव कोणिक उदायो ॥ स्वयंप्रभु चोथा जिणंद, पोटिल मुनिभाई ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पंचमाए, दृढायु श्रावक जाण ॥ देवश्रुत छट्ठा जिणंद, श्रीकार्तिक शेठवखाण ॥ ३ ॥ श्रीउदय जिन सातमाए, शंखश्रावक जीव ॥ श्रीपेढाल जिन आठमा, आणंद मुनि जीव ॥४॥ पोटिल नवमा वंदिएए, जीव जेह सुनंद ॥ शतकोरति दशमा जिणंद, सत्य श्रावक आणंद ॥ ५ ॥ सुव्रत जिन अगियारमाए, देवकी राणी जीव ॥ श्रीअममजिन बारमा, जीव [1]केशवगुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कशाय जिन तेरमाए, सत्यकी विद्याधर ॥ निष्पुलाक जिन चौदमां, बळभद्र सुहंकर ॥ ७ ॥ निर्मम जिन पंदरमाए, जोवसूळसा भावी ॥ चित्रगुप्त जिन सोळमा, श्रीरोहिणी

१ कृष्ण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवभावि ॥ ८ ॥ समाधि जिन सत्तरमा, रेवती श्राविका जाण॥ श्रीसंवर जिन अढारमा, जीव शतानिक वखाण ॥९॥ श्री यशोधर ओगणीसमा, जीव कृष्ण द्वीपायन; विजयनाम जिन वीसमा, जीवकरण माहेण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्रीमल्लनाम, जीव नारदनो कहिये ॥ अंबड श्रावक जीव देव, बावीसमा लहीए ॥ ११ ॥ अनंतवीर्य तेवीसमा, जीव अमरनो जेह ॥ भद्रकर जिनचोवीशमा, स्वातिबुद्धि गुणगेह॥१२॥ए चोवीसे जिनवरा,होशे आवंते काले॥ भाव सहित जे वांदशे, कर जोडीने भाळे॥१३॥ लंछन वर्ण प्रमाण आयुष, अंतर सवि सरखा ।. सांप्रत जिन चोविस परे, चढते सवि निरख्या ॥ १४ ॥ पंचकल्याणक तेहना, होशे एहज दिवस ॥ वीरविमळ पंडिततणो, ज्ञानविमल सूरीश ॥ १५ ॥

॥ सामान्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय तुं जिनराज आज, मळीओ मुज स्वामी; अविनाशी अकलंक रुप, जग अंतरजामी ॥१॥ रूपारुपी धर्म देव, आतम आरामी; चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिवलीला पामी ॥ २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं वंदतां, सकळ सिद्धि वर बुद्ध, रमो प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम ऋद्ध ॥ ३ ॥ काळ बहु स्थावर गयो, भमीयो भवमांही; विकलेंद्रिय मांही वस्यो, स्थिरता नहीं क्यांही ॥ ४ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय मांही देव, करमे हुं आव्यो, करी कुकर्म नरके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गयो, तुम दरीशन नहि पायो ॥ ५ ॥ एम अनंत काळे करी ए, पाम्यो नर अवतार; हवे जग तारक तुंही मळयो, भवजल पार उतार ॥ ६ ॥

श्री जिन चैत्यवंदन

॥ अद्याभवत सफलता नयन द्वयस्य, देव त्वदीय चरणां बुज वीक्षणेन ॥ अद्य त्रिलोक तिलकं प्रतिभासतेमे, संसार वारि धिरयं चलुक प्रमाणम् ॥ १ ॥ कलेवं चंद्रस्य कलंक मुक्ता, मुक्तावली चारु गुण प्रसन्ना ॥ जगत्रया स्यामिमंत ददाना, जैनेश्वरी कल्प लतेव मूर्तिं ॥२॥ धन्योहं कृत पुण्योहं, निस्तीर्णोहं भवार्ण वात ॥ अनादि भव कांतारे, दृष्टोयेन श्रुतो मया ॥ ३ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं, नेत्रेच विमलिकृतं ॥ मुक्तोहं सर्व पापेभ्यो, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ४ ॥ दर्शनात दुरित ध्वंसः वंदनात् वंछित प्रदः ॥ पूजनात् पुरुष श्रीदुः, जिनःसाक्षात् सुरद्रुमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जिन पूजानुं चैत्यवंदन ॥

॥ जिनरूपे जिननाथके, द्रव्ये पण तिमहिं ॥ नाम स्थापना भेदथी, प्रगट जगमांहि ॥१॥ अध्यातमथी जोडिये, निक्षेपा चार॥ तो प्रभु रूप समान भाव, पामे निरधार ॥ २ ॥ पावन आतमने करे ए, जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रभु पूजाध्यानथी, राम कहे सुखपूर ॥ ३ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ पांचज्ञानना चैत्यवंदनो ॥

॥ प्रथम मतीज्ञाननुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सौभाग्यपंचमी तणो, सयल दिवस सिणगार ॥ पांचे ज्ञानने पूजीये, थाये सफल अवतार ॥ १ ॥ सामायिक पोसह विषे, निरवद्य पूजा विचार ॥ सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार ॥२॥ पूर्व दिशे उत्तर दिशे, पीठ रची त्रण सार ॥पंचवरण जिन बिंबने, स्थापीजे सुखकार ॥३॥ पंच पंच वस्तु मेलवी, पूजा सामग्री जोग ॥ पंच वरण कलशा भरी, हरीये दुःख उपभोग ॥ ४॥ यथाशक्ति पूजा करो, मतिज्ञानने काजे ॥ पंच ज्ञानमां धुरे कह्युं, श्री जिनशासन राजे ॥ ५ ॥ मति श्रुत विण होवे नही ए, अवधि प्रमुख महा ज्ञान ॥ ते माटे मति धुरे कह्युं, मति श्रुतमां मति मान ॥६॥ क्षय उपशम आवरणनो, लब्धि होये समकाले ॥ स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग काले ॥ ७ ॥ लक्षण भेदा भेद छे, कारण कारज योगे ॥ मति साधन श्रुत साध्य छे, कंचन कलश संयोगे ॥ ८ ॥ परमातम परमेसरू ए, सिद्ध सयल भगवान ॥ मति ज्ञान पामी करी, केवल लक्ष्मी निधान ॥ ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टले संदेह ॥ १ ॥ अनाभिलाप्य अनंत भाव,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥ २ ॥ वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण समनेह ॥ ३ ॥ मांहोमांहे पूरवधरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥ छठाण वडीया भावथी, ते श्रुत प्रतिय विशेखा ॥ ४ ॥ तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ॥ समकित श्रुतना जाणीये, सर्व पदारथ साचा ॥ ५ ॥ द्रव्य गुण पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदीसूत्र उपदेश ॥ ६ ॥ चोवीश जिननां जाणीए, चउद पूरवधर साध ॥ नवशत तेत्रीश सहस छे, अठाणुं निरुपाध ॥ ७ ॥ परमत एकांतवादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्यां, अर्थ यथारथ थाय ॥ ८ ॥ अरिहंत श्रुत केवली कहे ए, ज्ञानाचार चरित्त ॥ श्रुतपंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥९॥ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ अवधि ज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आत्म प्रत्यक्ष ॥ क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥ १ ॥ देव निरय भव पामतां, होय तेहने अवश्य ॥ श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभग वश्य ॥ २ ॥ नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम संयोग ॥ काउस्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघटयेाते उपयोग ॥ ३ ॥ जघन्यथी जाणे जूए, रूपी द्रव्य अनंता ॥ उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्ति वस्तु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणंता ॥ ४ ॥ क्षेत्रथी लघु अंगुलतणो, भाग असंखित देखे ॥ तेहमां पुद्गल खंध जे, तेहने जाणे पेखे ॥ ५ ॥ लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंड असंख्य उक्किट्ठ ॥ भाग असंख्य आवलितणो, अद्धा लघुपणे दिठ ॥६॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ए, अतीत अनागत अद्धा ॥ अतिशय संख्या तिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥७॥ एक एक द्रव्यमां चार भाव, जघन्यथी ते निरखे ॥ असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥ ८ ॥ चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चतुर्थ मनःपर्यव ज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री मनःपर्यव ज्ञान छे; गुणप्रत्ययी ए जाणो ॥ अप्रमादि रुद्धिवंतने, होय संयम गुणठाणो ॥ १ ॥ कोइक चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ॥ मनना भाव जाणे सही, सागारि उपयोग ठामे ॥ २ ॥ चिंतविता मनोद्रव्यना ए, जाणे खंध अनंता ॥ आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि गुणंता ॥ ३ ॥ संज्ञी पंचेंद्रिय प्राणीये, तनु योगे करी ग्रहीया ॥ मन योगे करी मनपणे, परिणमे ते द्रव्य गुणीया ॥ ४ ॥ तिर्छु माणसक्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ॥ तिर्छालोकना मध्यथी, सहस जोयण अधोलोके ॥ ४ ॥ ऊरध जाणे ज्योतिषी लगे ए, पलियनो भाग असंख्य ॥ कालथी भाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ ६ ॥ भावथी चिंतित द्रव्यना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असंख्य पर्याय जाणे ॥ रूजुमतिथी विपुलमति, अधिका भाव वखाणे ॥ ७ ॥ मनना पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे साचुं ॥ वितथपणुं पामे नही, ते ज्ञाने चित्त राचुं ॥ ८ ॥ अमूर्ती भाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री भगवंत ॥ चरण कमल नमु तेहनां, विजयलक्ष्मी गुणवंत ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ पंचमकेवलज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री जिन चउनाणी थइ, शुकलध्यान अभ्यासे ॥ अतिशय अतिशय आत्मरूप, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ १ ॥ निद्रा स्वप्न जागर दशा, ते सवि दूरे होवे ॥ चोथी ऊजागर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥ २ ॥ क्षपकश्रेणी आरोहिया ए, अपूर्व शक्ति संयोगे ॥ लही गुणठाणुं बारमुं, तुरीय कषाय वियोगे ॥ ३ ॥ नाण दंसण आवरण मोह, अंतराय घनघाती ॥ कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाती ॥ ४ ॥ दोय धर्म सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ॥ प्रथम विशेष पणे ग्रहे, बीजे सामान्य सयोग ॥ ५ ॥ सादी अनंत भांगे करी ए, दर्शन ज्ञान अनंत ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत ॥ ६ ॥ मूल पयडिमां एक बंध, सत्ता उदये चार॥ उत्तर पयडीनो एक बंध, तिम उदय रहे बायाल ॥ ७ ॥ सत्ता पंच्यासी तणी, कर्म जेहवां रज्जु छार ॥ मन वच काया योग जास, अविचल अविकार ॥ ८ ॥ संयोगी केवली तणी ए, पामी दशाये विचरे ॥ अक्षय केवलज्ञानना, विजयलक्ष्मी गुण उच्चरे ॥९॥ इति श्री केवलज्ञान चैत्यवंदनम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ बीज रीझ करी सिंचीए, प्रथम तिथिमां एह ॥ चंद्रकळा उदये वधे, तेम पुण्योदय रेह ॥१॥ अभिनंदन सुमति प्रभु, दशमां शितळनाथ ॥ वासुपूज्य अरनाथजी, मुगतिपुरीना नाथ ॥ २ ॥ इत्यादिक जिनवर तणा, जनम नाण निर्वाण ॥ बीज तणे दिन वंदतां, पामेा क्रोड कल्याण ॥ ३ ॥ दुविह धर्मने सेवीए, निश्चय ने व्यवहार ॥ आगम नो आगम तणो, भावो तत्व विचार ॥ ४ ॥ बीजे ठाणे वर्णव्या, दोय दोय जे भेद ॥ बीज तणे दिन मुनिवरा, ध्याता ध्यान दुभेद ॥ ५ ॥ अंग उपांगे वर्णव्या, जीव अजीव पुन्य पाप ॥ बंध मोक्ष दुग श्रेणीओ, भव्य अभव्यनी छाप ॥ ६॥ बहु श्रुत चरण कमळ नमी, संशय करीए दुर ॥ गौतम प्रश्नोत्तर सरे श्री शुभवीर हजुर ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

॥ विम विजय विजयापुरी, सुदृढ नृप तात ॥ युगमंधर जिनवर नमुं, जस तारा मात ॥ १ ॥ प्रिथ्वि मंगळानो नाहलो, गज लंछन सोहे ॥ सोवन वन धनु पांचसे, भविजन मन मोहे ॥ २॥ लक्ष चोराशी पुरवनुं ए, आयुमान लह्यो एह ॥ सुद्धा संयम संग्रही, केवळ पाम्या जेह ॥ ३ ॥ त्रिगडे बेठा भविकने, आपे उपदेश ॥ प्रातिहार्य आठे भला, अतिशय चोत्रीश ॥ ४ ॥ पांत्रिश वाणी गुण कह्या, सेा कोडी मुनी संघात ॥ दश लक्ष केवळ धर मुनि,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंदु निशदीन प्रभात ॥ ५ ॥ महाविदेह विचरताए, वंदु सुरनर कोडी ॥ पंडित धीरविमल तणो, नय वंदे कर जोडी ॥ ६ ॥इति॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

॥ चोविशमां जिनराजजी, चंपापुरी आवे; चौद सहस अणगारना; स्वामी तेह कहावे ॥ १ ॥ अढीकोस उंचो सहि, समव सरण वीरचावे, त्रिभुवन पति गुरु तेहमां, उपदेश वरसावे. ॥२॥ जितशत्रु राजा तिहां, प्रभुने वंदन आवे; तेपण समवसरण मांही, बेसी हरषित थावे. ॥ ३ ॥ भविक जीव तारण भणी, गौतम पूछे जिनने; बीज तिथि महिमा कहो, संशय हरण प्रभु अमने. ॥४॥ तव प्रभु परखदा आगळे, बीजनो महिमा भाखे; पंच कल्याणक जिनतणा. ते सहु संघनी साखे. ॥ ५ ॥ बीजे अजित जनमोया, बीजे सुमति च्यवन; बीजे वासुपूज्यजी, लहुं केवळ नाण. ॥ ६ ॥ दशमा शीतळनाथजी, बीजे शिव पाम्या; सातमा चक्री अरजिन, जन्म्या गुणधाम. ॥ ७ ॥ ए पांचे जिन समरतांए, भवि पामे दोय धर्म; सर्वविरति ने देशविरति, टाळे पातिक भर्म. ॥ ८ ॥ वीर कहे द्वितीया तिथि, ते कारण तमे पाळो; चंद्रकेतु राजा परे, आतम अजवाळो. ॥ ९ ॥ ते सांभळी बहु आदरे, प्राणी बीज तिथि सार; ते आराधतां केइना, थया आतम उद्धार. ॥ १० ॥ चौविहार उपवास करी, बीज आराधो विवेक; नयसागर कहे वीरजिन, द्यो भुजने शिव एक. ॥ ११ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ पांचमनुं चैत्यवंदन ॥ पहेलुं ॥

॥ बारे पर्षदा आगळे, श्री नेमी जिनराय ॥ मधुरी ध्वनी दीये देशना, भवीजनने हित दाय ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधीए, जेम लीजीए नाण ॥ कार्तिक शुदी पांचम ग्रही, हर्ष धरो मन आण ॥ २ ॥ पांच वरस वळी उपरे, पांच मास लगी जाणी ॥ अथवा यावत् जीव लगे, आराधो गुण खाणी ॥ ३ ॥ वरदत्तने गुणमंजरी, पंचमी आराधी ॥ अंते आराधन करी, शिवपुरने साधी ॥ ४ एणीपरे जे आराधशे, पंचमी विधि संयुक्त ॥ जिन उत्तम पद पद्मना, नमी थाये शिवभक्त ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

॥ युगला धर्म निवारीओ, आदिम अरिहंत ॥ शांतिकरं श्री शांतिनाथ जय करुणावंत ॥ १ ॥ नेमिसर बावीसमां, बालथकी ब्रह्मचारी ॥ प्रगट प्रभावी पार्श्वनाथ, रत्नत्रय आधारी ॥ २ ॥ वर्त्तमान शासन धणीए, वर्द्धमान जगदीश ॥ पांचे जिनवर प्रणमतां, जगमां वाधे जगीस ॥ ३ ॥ जन्म कल्याणक पंचरूप, सोहमपति आवे ॥ पंच वरण कलसे करी, सुरगिरि न्हवरावे ॥ ४ ॥ पंच शिष्य अंगुठडे, अमृत संचारे ॥ बालपणे जिनराज काज, इम भगति सुधारे ॥ ५ ॥ पंच याय पालिजतां, योवन वय पावे ॥ पंच विषे विष वेल त्रोडि, संजम मन भावे ॥ ६ ॥ छंडी पंच प्रमादने, पंच इंद्री बळ मोडी ॥ पंच महाव्रत आदरे, देइ धन कोडी ॥ ७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचाचार आराममां, पाम्यु पंचम नाण ॥ पंच देह वर्जित थयो, पंच ह्रस्वाक्षर मान ॥ ८ ॥ पंचम गति भरतार तार, पुरण परमानंद ॥ पंचमी तप आराधतां, श्री खिमाविजय जिनचंद ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

श्यामल वान सोहामणा, श्रीनेमि जिनेश्वर; समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर. ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण; पांच वरस पंचमासनो, ए छे तप परिणाम. ॥ २ ॥ जिम वरदत्त गुणमंजरीए, आराध्यो तप एह; ज्ञानविमळ गुरु एम कहे, धन धन जगमां तेह. ॥ ३ ॥

॥ श्री अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टमी दिन धन जिनवरु ए, चंद्रप्रभु मनोहार ॥ सेवा करतां जेहनी, टाळे भव दुःख द्वार ॥ १ ॥ भगवन् भाखित जे वचन, धारे गुण भंडार ॥ तेहिज अष्टमि तप भण्युं, आगम अर्थ उदार ॥ ॥ २ ॥ ज्ञायक ज्ञेय स्वरुपथी ए, चरणधरे सुखकार ॥ अष्टमि तप आराधवा, करे शुभ भाव विचार ॥ ३ ॥ अष्ट वरष अष्ट मासनी ए, तपविधि विधिमां सार ॥ श्रावक तनमन वचनथी, पाळे निरतिचार ॥ ४ ॥ पोसह पडिकमणुं करीए, पुजे जिन अंग अविकार ॥ करुणा सागर गुण भर्या, मुनिजन वंदे विचार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ५ ॥ आगम वयण सुणि करीए, पुछे प्रश्न विचार ॥ गुरुगम लहिने सद्दहे, समकित वड विस्तार ॥ ६ ॥ परम सरुप परमेसरुए, परमातम जगदिश ॥ चंद्र प्रभु जिन अष्टमां, वंदो धरि सुजगीस ॥ ७ ॥ सारण वारण चोयणाए, प्रति चोयणनां जाण ॥ वस्त्र पात्र तेहने दिये, तो लहे सुख निरवाण ॥ ८ ॥ एहवी वाणी स्वमुखें, फरमावो जिनराज ॥ भव्य जोव श्रवणे सुणी, धारो आतम काज ॥ ९ ॥ मान क्रोध मद परिहरीए, धारो शुद्ध स्वभाव ॥ आतम ज्ञान नये गृहि, आनंद घनरस पाव ॥ १० ॥ शांति सुधारस गुणभर्याए, अनुभव भाव जिणंद ॥ अचरण तेज अमृतसमो, रत्नमुनि गुणवृंद ॥ ११ ॥ उज्जल अष्टमिदिन भण्युए, समकीतीने सुखदाइ ॥ चंद्रमुनि गुण योग्यता, लहि आगम गुण छांहि ॥१२॥

॥ इति संपूर्ण ॥

॥ आठमनुं चैत्यवंदन. बीजुं ॥

चैत्र वदि आठम दिने, मरुदेवी जाये ॥ आठ जाति दिग कुमरीये, आठ दिश गाये ॥ १॥ आठ इंद्राणी नाथशुं, सुर संगते लइ आवे ॥ सुरगिरि उपर सुरवरा, सर्वे मलि आवे ॥२॥ आठजाति कलशा भरो, चोसठ हजार ॥ दोयसेने पचास मान, अभिषेक उदार ॥ ३ ॥ एक क्रोडने साठ लाख, उंचा तीस कोश ॥ पहुल पणे अडचाल कोश, कलशा जल कोस ॥ ४ ॥ चार वृषभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदशंग रंग, आठे जल धारे ॥ नवरावे जिनराजने, सुर पाप प-खाले ॥ ५ ॥ क्षुद्रादिक अडदोष शोष. करि अडगुण पोखे ॥ टालि आठ प्रमाद आठ, मंगल आलेखे ॥ ६ ॥ क्रोड आठ चेाग-णो, कंचन वरसावे ॥ प्रभु सेांपी निज मातने, नंदीश्वर जावे ७॥ अट्ठाई महोच्छव करीए, ठवणा जिन उद्देश ॥ आठ प्रकारे पूजिए, आठम दिन सुविशेष ॥८॥ ऋषभ अजित सुमति नमी, मुनिसुव्रत जन्म ॥ अभिनंदनने नेम पास. पाम्या शिव शर्म ॥ ९ ॥ संभव देव सुपास दोय,सुरभवथी चविया ॥ सेना पुरवी मात दुग, उदरे अव-तरीया ॥ १० ॥ वरस एक उद्घोषणाए, ऋषभ लीये चारित्र ॥ आठम दिन इग्यार इम, कल्याणक सुपवित्र ॥ ११ ॥ दंसण नाण चारित्रना, आठे आचार ॥ टाले गाले पापने, पाले पंचाचार ॥ ॥ १२ ॥ अणिमादिक अड ऋद्धि सिद्धि, क्षणमांहे पामे ॥ आठे करम हणी थया ॥ अडगुण अभिराम ॥ १३ ॥ आठम दिन उज्व-ल मनेए, समरो दश अरिहंत ॥ क्षमाविजय जिन नामथी, प्रगटे ज्ञान अनंत ॥ १४ ॥ मंत्रादिक अड अष्ट बोध, पामी अडबुध ॥ खेदादिक अड दोष छेद, पडिकमणे शुद्ध ॥ १५ ॥ अद्वेषादिक आठ गुण धरे, अड मद तजिए ॥ यम निय-मादिक आठ जोग, गुण संपद भजीए ॥ १६ ॥ आठम दिन आ-राधिये, घातकी पुष्कर अर्द्ध ॥ क्षमाविजय जिन विचरता,पातिहार्य समृद्ध ॥ १७ ॥ इति आठमनुं चैत्यवंदन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ आठमनुं चैत्यवंदन त्रीजुं ॥

॥ आठम तप आराधीए, भाव धरी उल्लास ॥ आठ आत्मा ओळखो, पामो लील विलास ॥ १ ॥ आठ बुद्धि गुण आदरो, बळी अष्टांग योग ॥ अष्ट महा सिद्धि संपजे, न आवे रोगने शोक ॥ २ ॥ योगदृष्टि आठ आदरोए, मित्रादिक सुखकार ॥ अष्ट महामद टाळीए, जेम पामो भव पार ॥ ३॥ प्रवचन माता आठने, आदरो धरी मन रंग ॥ आठ ज्ञानने ओळखो, शिव वधुनो करो संग ॥ ४॥गणो संपदा आठने, आठम दीने धारो ॥ नरक तिर्यंच गति दुःखनो, तेहनो नहीं आरो ॥५॥ आठ जात कळशे करीए, न्हवरावो जिनराय ॥ आठ योजन जाडो कही, सिद्ध शिला मुनिराय ॥ ६ पूजा अष्ट प्रकारनो, समजो करो तस मर्म ॥ अष्टमी गतीने पामीए, क्षय करी आठे कर्म ॥७ ॥ दुर करी आठे दोषने, तेम अडगुण पाळो ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रना, आठ अतिचार टाळो ॥ ८ ॥ आठ आठ प्रकारनाए, भेद अनेक प्रकार ॥ आठम दीन प्रकाशोआ, त्रिगडे बेशो सार ॥ ९ ॥ चैतर वदी आठम दीने, मरुदेवी जायो ॥ दिक्षा पण तेहिज दीने, सुरनर मळी गायो ॥ १० ॥ सुमति अजितना जन्म सार, संभवजिन च्यवन ॥ आठम दिन बहु जाणजो, कल्याणक त्रिभुवन ॥११॥ अष्टमी तप भवि-यण करीए, कर्म तपावे जेह ॥ तप करतां जप संपजे, शुभ फळ पामे तेह ॥ १२ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

नेमी जिनेसर गुण नीला, ब्रह्मचारी सिरदार ॥ सहस पुरुषशुं आदरी, दीक्षा जिनवर सार ॥ १ ॥ पंचावनमें दिन लह्युं, निरुपम केवलनाण ॥ भावक जाव पडिबोधवा, विचरे महियल जाण ॥२॥ विहार करंता आवियाए, बावीसमा जिनराय ॥ द्वारिका नयरी समोसर्या, समवसरण तिहां थाय ॥३॥ बार परखदा तिहां मली, भाखे जिनवर धर्म ॥ सर्व पर्व तिथि साचवो, जिम पामो शिव शर्म ॥ ४॥ तव पूछे हरि नेमने, दाखो दिन मुज एक॥ थोडो धर्म कर्या थकी, शुभ फल पामु अनेक ॥ ५ ॥ नेम कहे केशव सुणो, वरस दिवसमां जोय ॥ मागशर सुदी एकादशी, ए समो अवर न कोय ॥६॥ इणदिन कल्याणक थया, नेउ जिनना सार ॥ ए तिथि विधि आराधतां, सुव्रत थयो भवपार ॥७॥ ते माटे मोटो तिथि, आराधो मन शुद्ध ॥ अहो रत्नो पोसह करो, मन धरी आतम बुद्ध ॥ ८॥ दोढसो कल्याणक तणुं ए, गणणुं गणो मनरंग॥ मौन धरी आराधीये, जिम पामो सुखसंग ॥ ९ ॥ उजमणुं पण कीजीए, चित्त धरी उल्लास ॥ पूठांने वींटांगणें, इत्यादिक करो खास ॥१०॥ एम एकादशी भावशुं, आराधे नर राय ॥ क्षायिक समकितनो धणी, जिन वंदी घर जाय ॥ ११ ॥ एकादशी भवियण करो; उज्वल गुण जिम थाय ॥ क्षमाविजय जस ध्यानथी, शुभ सुरपति गुण गाय ॥ १२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

अग अग्यार आराधीए, एकादशी दिवसे; एकादश प्रतिमा वहे समाकत गुण विकसे. ॥ १॥ एकादशी दिवसे थया, दीक्षा ने नाण; जन्म लह्या केइ जिनवरा आगम परिमाण. ॥ २ ॥ ज्ञानविमळ गुण वाधतां ए, सबल कळा भंडार; अगीआरश आराधतां, लहीए भवजळपार. ॥ ३ ॥

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

आज ओच्छव थयो मुज घर, एकादशी मंडाण; श्री जिननां त्रणसें भलां, कल्याणक घर जाण. ॥ १ ॥ सुरतरु सुरमणि सुर-घट, कल्पवेली फळो म्हारे; एकादशी आराधतां, बोधिबीज चित्त ठारे. ॥ २ ॥ नेमि जिनेश्वर पूजतां ए, पहोंचे मनना कोड; ज्ञान विमल गुणथी लहो, प्रणमो बे कर जोड. ॥ ३ ॥

अथ मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनां नामनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान जगईश ॥ आतम हितने कारणे, प्रणमु परम मुनीश ॥ खट परवि जेणे वर्णवी, तेहमां अधिकी जेह ॥ एकादशी सम को नहीं, आराधो गुण गेह ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मागशर शुदी एकादशी, आराधो शिववास ॥ कल्याणक नेउ जिन तणा, एकसोने पचास ॥ ३ ॥ महायश सर्वानुभुति श्रीधर, नमि मल्लि अरनाथ॥स्वयंप्रभ देवश्रुत उदय,मलिया शिवपुरसाथ॥४॥ अकलक शुभंकर सप्त नाथ, ब्रह्मेंद्र गुण गांगोक ।। सांप्रति मुनि विशिष्ट जिन पाम्या पुन्यनीरेक ।. ५ ॥ सुमदु व्यक्त कलासत, अरण योग अयोग ॥ परम सुधारति निकसतेम, पाम्या शिव संयोग ॥ ६ ॥ सर्वार्थ हरिभद्र मगधाधिप, पयच्छ अक्षाभमलयसिंह॥ दिनरुक धनद पौषध तथा, जपतां सफळि जिह ।.७॥ प्रलब चारित्र निधि प्रशम राजित, स्वामी विपरित प्रसाद ॥ अघटित भ्रमणेंद्र ऋषभचंद्र, समया शिव अश्वाद ॥ ८ ॥ दयांत अभिनंदन रत्नेश ते, सामकोष्ट मरुदेव अतिपार्श्व ॥ नंदिषेण व्रतधर निर्वाण तथा, थाये शिव सुख आस ॥ ९ ॥ सौंदर्य त्रिविक्रम नरसिंह, क्षेमंत संतोषित कामनाथ ॥ मुनि नाथचद्र दाहदिलादित्य, मळीयो शिवपुर साथ ॥ १० ॥ अष्टादिक वर्णिक उदयज्ञान, तमोकंद सायकांक्ष खेमंत ॥ निर्वाणिक रवि राज प्रथम, नमतां दुःखनो अंत ॥ ११ ॥ पुरुरवास अवबोध विकमेंद्र, सुशांति हरदेव नंदिकेश ॥ महामृगेंद्र अशोचित धर्मेंद्र, संभारो नाम निवेश ॥ १२ ॥ अश्ववृंद कुटलिक वर्द्धमान, नंदिकेश धर्मचंद्र विवेक ॥ कलापक विसोम अरणनाथ, समया गुण अनेक ॥ १३ ॥ त्रण पदे त्रण चोवीसीयो, पदे पदे कोठो जाण ॥ चोथा पदमां भावना, आराधो गुण खाण ॥१४॥ दोहसो कल्याणक तणो, गुणणो ए मनोहार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्त आणीने आदरो, जिम पामो भवपार ॥ १५ ॥ जिनवर गुणमाला, पुन्यनी ए प्रनाला ॥ जे शिव सुख रसाला, पामोये सुविशाला ॥ जिम उत्तम थुणीजे, पाद तेहना नमीजे जिनरूप समरीजे, शिव लक्ष्मी वरीजे ॥ १६॥ इति दोढसेा कल्याकनुं चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ बीजुं ॥

॥ विश्वनायक मुक्तिदायक नमि नेमि निरंजनं, हर्षधरी हरी पूछे प्रभुने भाखो आतिम हितकरं ॥ कुण दिवस एवो वरसमांहे अल्प सुकृत बहुफले, कहे नेउ जिननां हुआं कल्याणक मौन अग्यारसो सुखकरं ॥ १ ॥ केवलि महाजस सर्वानुभूति श्रीधरनाथए, नमि मल्ली श्री अरनाथ स्वामी साचो शिवपुर साथए ॥ श्री स्वयंप्रभ देवश्रुत अरहंत उदयनाथ जिनेश्वरं, कहे नेउ जिननां हुआ कल्याणक मौन अग्यारसो सुखकरं ॥ २ ॥ अकलंक कर्म कलक टाले. शुभकरं समरु सदा; सप्तनाथ ब्रह्मेंद्र जिनवर श्रीगुणनाथ नमु मुदा ॥ गांगिकनाथ श्री सांप्रति मुनिनाथ विशिष्ट अतिवर ॥ कहे० ॥ ३ ॥ श्रीमृदु जिनजी जगतवेत्ता व्यक्त अरिहा वंदीए, श्री कलासत आरण ध्याता सहज कर्म निकंदीए ॥ जोग अजोगश्री परमप्रभुजी मुद्धार्त्तिनी केसरं ॥ कहे० ॥ ४ ॥ श्री सर्वार्थ सकल ज्ञायक हरिषद्र अरिहंतए, मगधाधिप जिनेंद्र वंदो श्रीप्रभ गुणवंतए ॥ अक्षोभ मल्लिसिहनाथ दिनरुक् धनंद पोषद्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयकरं ॥ कहे० ॥ ५ ॥ श्रीपलंब चारित्रनिधि जिन प्रशमराजित ध्याइए, स्वामीश्री विपरीतदेव अहोनीश प्रसाद प्रेमे गाइए ॥ अघटितज्ञानी ब्रह्मेंद्र प्रभु ऋषभचंद्रजी अघहर ॥ कहे० ॥ ६ ॥ दयांत दाता जगत केरो अभिनंदन रत्नेशए, सामकोष्ट मरुदेव नायक अतिपार्श्व विशेषए ॥ नमो नदिषेण व्रतधर श्रीनिर्वाणो दुःखहरं ॥ कहे० ॥ ७ ॥ सौंदर्यज्ञानी त्रिविक्रम जिन नारसिंह नमो तुमे, खेमंत संतोषित अरीहा कामनाथथी दुःख समे ॥ मुनिनाथने श्रीचंद्रदाहए दिलादित उदयकरं ॥ कहे० ॥ ८ ॥ श्री-अष्टाहिक वाणिग वंदो उदयज्ञान आराधिये, तमोकंदने सायकाक्ष स्वामीखेमंत शिवसुख साधिये ॥ निर्वाणीने रविराज साहिब प्रथम नाथ परमेश्वरं ॥ कहे० ॥ ९ ॥ श्री परुरवास अवबोध जगगुरु विक्रमेंद्र वखाणीये, श्रीस्वसांति हरिनंदिकेशने महामृगेंद्र मन आणीए ॥ अशोकचित चित्तमां वसे अहनोश धर्मेंद्र जगजस करं ॥ कहे० ॥ १०॥ अश्वबृंद कुटिलक वर्द्धमान नंदिकेशना गुणघणा, श्रीधर्मचंद्र विवेक जगपति कलापक सोहामणा ॥ विसोम सौम्याकृति जेनी आरणअंगि सुखकरं ॥ कहे० ॥ ११ ॥ त्रीस चोवीसी दशे खेत्रे कालत्रिक जिन लीजीए, पंचकल्याणक त्रीस जिननां इम दोढसो गुणीजीए ॥ जिनभक्ति करतां ध्यान धरतां कोटि तप फळ होइनरं ॥ कहे० ॥१२॥ पोषधने उपवास करीने आराधे एकादशो नरभव तेहनो सफळ थाये परमानंद पद देहसी ॥ गुरु रुपकीर्त्ति हृदय धरीने माणेक मुनि शिव सुखकरं ॥ कहे० ॥ १३ ॥ इति मौन एकादशी दोढसो कल्याणक नामनुं चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ चौदश तिथिनुं चैत्यवंदन ॥ १ लुं ॥

चौद स्वप्न लहे मावडी, सवि जिनवर केरी; ते जिन नमतां चौद राज, लोके न होय फेरी. ॥ १ ॥ चौदरत्नपति जेहना, प्रणमे पद आवी; चौद विद्याना थया जाण, संयमश्री भावी. ॥२॥ चौदराज शिर उपरे, सिद्ध सकळ गुण ठाण; ज्ञानविमल प्रभु ध्यानथी, होय अचळ अहिठाण ॥ ३ ॥

॥ चौदश तिथिनुं चैत्यवंदन ॥ २ जुं ॥

चौद भुवन वश कारणे, विद्या वर्धमान; वर्धमान सुख आपवा, एहीज परम निधान. ॥ १ ॥ वर्धमान जिनराजनुं, करो भक्तिका ध्यान; चौद भेद छे जीवना, ए यतना प्रधान. ॥ २ ॥ चाद पूर्वनो सार छे ए, चौदशी ए जिनराज; ज्ञानविमळथी जाणीए, एहना सकळ दीवाज. ॥ ३ ॥

॥ पंच तिथि महिमा वर्णन चैत्यवंदन ॥

राजग्रही उद्यानमां, वीर जिनेश्वर आव्या; देवइंद्र चोसठ मळया, प्रणमे प्रभु पाया. ॥ १ ॥ रजत हेम मणि रयणनां, तिहुयण कोट बनाय; मध्य मणिमय आसने, बेठा श्री जिनराय. ॥२॥ चउविह धर्मनी देशना, निसुणे परषदा बार; तव गौतम महारायने, पूछे पर्व विचार. ॥३॥ पंचपर्वी तुमे वर्णवी, तेमां अधिकी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोण; वीर कहे गौतम सुणो, अष्टमी पर्व विषेण. ॥ ४ ॥ बीज भवी करतां थकां, बीहुविध धर्म सुणंत; पंचमी तप करतां थकां, पांचे ज्ञान भणंत ॥ ५ ॥ अष्टमी तप करतां थकां अष्ट कर्म हणंत; एकादशी करतां थकां, अंग अगीआर भणत. ॥ ६ ॥ चौद पूरव-धर भला ए, चौदश आराधे; अष्टमी तप करतां थकां, अष्टमी गति साधे ॥ ७ ॥ दंडविरज राजा थयो, पाम्यो केवळनाण; अष्टमी तप महिमा वडो, भाखे श्री जिनभाण. ॥ ८ ॥ अष्ट कर्म हणवा भणीए, करीए तप सुजाण; न्यायमुनि कहे भवी तुभे, पामो परम कल्याण. ॥ ९ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीना पंचकल्याणकनुं चैत्यवंदन ॥

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलादेवी माय; क्षत्रियकुंडमां अव-तर्या, प्रभुजी परम दयाळ. ॥ १ ॥ उज्वळी छठ आषाढनी, उत्तरा फाल्गुनी सार; पुष्पोत्तर विमानथी, चवीआ श्री जिनभाण ॥२॥ लक्षण अडहिय सहस्र ए, कंचनवर्णी काय; मृगपति लंछन पाउले, वीर जिनेश्वर राय. ॥ ३ ॥ चैत्र शुदि तेरश दिने, जन्म्या श्री जिनराय; सुरनर मळी सेवा करे, प्रभुनुं जन्म कल्याण. ॥ ४ ॥ मागशर वदि दशमी दिने, लीए प्रभु संजम भार; चउनाणी जिनजी थया, करवा जग उपकार. ॥ ५ ॥ साडाबार वरस लगे, सह्या परिषह घोर; घनघाती चउ कर्म जे, वज्रे कर्या चकचुर.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैशाक शुद दशमी दिने, ध्यान शुकल मन ध्याय, शमी वृक्ष तळे प्रभु, पाम्या पंचम नाण ॥ ७ ॥ संघ चतुर्विध स्थापवा, देशना दीए महावीर; गौतम आदि गणधरु, कर्या वजोर हजुर. ॥ ८ ॥ कार्तिक वदि अमावास दिने, श्री वीर लह्या निर्वाण; प्रभाते इंद्रभूतिने, पाम्युं केवळ नाण. ॥ ९ ॥ ज्ञान गुणे दीवा कर्या ए, कार्तिक कमला सार; पुण्ये मुक्ति वधू वर्या, वरती मंगळ माळ.॥१०॥

श्री अतीत चोवीशी चैत्यवंदन.

अतीत चोवीशी प्रथम देव, जिन केवळ[१] ज्ञानी ॥ निर्वाणी[२] सागर[३] महा[४] जस[५], विमळ[६] अभिधानी ॥ १ ॥ सर्वानुभूति[७] श्रीधर[८] सुदत्त[९], दामोदर[१०] सुतेजा[११]; स्वामी सुव्रत[१२] सुमति[१३] ने, शिवगति[१४] सु-इजा[१५] ॥ २ ॥ अस्ताघ[१६] नेमिश्वर[१७] अनिल[१८], यशोधर[१९] कृतार्थ[२०] जिनेश; शुद्धमति[२१] ने शिवंकरो[२२], स्यंदन[२३] संप्रति[२४] कहेश ॥ ३ ॥

श्री सिद्ध भगवाननुं चैत्यवंदन.

सिद्ध सकळ समरुं सदा, अविचळ अविनाशी; थाशे ने वळी थाय छे, यथा अडकर्म विनाशी ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाश भास, कहेवा कोण शूरो; सिद्ध बुद्ध पारंगत, गुणथी नहीं अधूरो ॥ २ ॥ अनंत सिद्ध एणापरे नमुं ए, वळी अनंत अरिहंत; ज्ञानविमळ गुण संपदा, पाम्या ते भगवंत ॥ ३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री परमात्मानुं चैत्यवंदन.

जगन्नाथने हुं नमुं हाथ जोडी, करुं विनति भक्तिशुं मान मोडी ॥ कृपानाथ संसार कूपार[1] तारो, लह्यो पुण्यथी आज देदार सारो ॥ १ ॥ सोहिला मळे राज्यदेवादि भोगो, परम दोहिलो एक तुज भक्ति जोगो ॥ घणा काळथी तुं लह्यो स्वामी मीठो, प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो ॥ २ ॥ चिदानंदरुपी परब्रह्म लीला, विलासी विभो त्यक्त कामाग्नि कीला; गुणधार जोगीश नेता अमायी, जय त्वं विभा भूतळे सुखदायी ॥ ३ ॥ न दीठी जेणे ताहरी जोग मुद्रा, पड्या रात दिसे महा मोहनिद्रा; केसी तास होशें गति ज्ञान सिंधो, भमतां भवे हे जगजीव बंधो ॥ ४ ॥ सुधास्यंदिते दर्शन नित्य देखे, गणुं तेहनो हे विभो जन्म लेखे; त्वदाज्ञा वशे जे रह्या विश्वमांहे, करे कर्मनी हाण क्षण एकमांहे ॥ ५ ॥ जिनेशाय नित्ये प्रभाते नमस्ते, भवी ध्यान होजो हृदये समस्ते; स्तवी देवना देवने हर्ष पूरे, मुखांभोज भाळो भजे हेज उरे ॥ ६ ॥ कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी; सुधांभोज धारा समी ताप टाळे, बेहु बांधवा सांभळे एक ढाळे ॥ ७ ॥

॥ अथ चउदसें बावन गणधरनु चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चारासो कह्या ॥ वलि पंचाणु छेक ॥ दोय अधिक इगसयगणा ॥ सोल अधिक सत एक ॥ १ ॥ सत

१ समुद्र.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमतिने गणधरा ॥ इगसय अधिका सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडशोइ इगशोइ त्रात॥२॥छोहोतर छासठ मगवन, पंचासत्रेतालीस॥ छतीस पणतीस कुंथुने ॥ अर गणधर तेत्रीस ॥ ३ ॥ अडविस अष्टादश सुण्या ॥ नमी सतर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया ॥ वीरतणा अगीआर ॥ ४ ॥ रुषभादीक चोवीसना ए ॥ एक सहस सय च्यार ॥ अबोकेरा बावन कह्या ॥ सर्व मळी गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरीया सवे ए ॥ सादी अनंत नीवास ॥ करीए सुभचित वंदना ॥ जब लग घटमां सास ॥ ६ ॥ इति ॥

श्री बावन जिनालयनुं चैत्यवंदन.

शुदि आठम चंद्रानन. सर्वज्ञानो गणीजे; ऋषभानन शुदि चौदशे, शाश्वत नाम भणीजे ॥ १ ॥ अंधारी आठम दिने, वर्धमान जिन नमीए ॥ वारिषेण वद चौदशे, नमतां पाप निगमीए ॥ २ ॥ बावन जिनालय तप ए, गुण गणणो सुखकार ॥ श्री शुभ वीरने शासने, करीए एक अवतार ॥ ३ ॥

प्रदक्षिणानुं चैत्यवंदन

काळ अनादि अनंतथी, भवभ्रमणनो नहीं पार ॥ ते भ्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार. भमतीमां भमतां थका, भवभावठ दूर पळाय ॥ दर्शन ज्ञान चारित्ररुप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥ २ ॥ जन्म मरणादि भय टळे, सीजे जो दर्शन काज ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नत्रय प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिनराज ॥ ३ ॥ ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत ॥ ४ ॥ चए ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वळी जेह ॥ चारित्र निर्युक्तिए कह्युं, वंदो ते गुण गेह ॥ ५ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, रत्नत्रयी निरधार; त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदुःख भंजनहार ॥ ६ ॥

विहरमान जिन चैत्यवंदन.

चउ जिन जंबुद्वीपमां, अढ घातकीखंडे ॥ पुष्करार्धे आठ जाणीए, एम वीश अखंडे ॥ १ ॥ अड पणवीश चोवीशमी, नवमी विजये विचरंता ॥ बाळ तरुण नृपपदपणे, वळी अपर अरिहंता ॥२॥ शीत्तेर सेा उत्कृष्टथी ए, भरहेरवय प्रमाण ॥ ज्ञानविमळ जिनराजनी, शीर धरीए शुभ आण ॥ ३ ॥

अढार दोष वर्जित जिन चैत्यवंदन. (१ लुं)

दान[१] लाभ[२] भोगोपभोग[३], बळ[४] पण[५] अंतराय; हास्य[६] अरति[७] रति[८] भय[९] दुगंछा[१०], शोक[११] षट[१२] कहेवाय. ॥ १ ॥ काम[१३] मिथ्यात्व[१४] अज्ञान[१५] निद्रा[१६], अविरति ए पांच; राग[१७] द्वेष[१८] दोय दोष ए, अट्ठारस संच. ॥ २ ॥ ए जेणे दूरे कर्या ए, तेने कहीए देव; ज्ञानविमळ प्रभु चरणनो, कीजे अहोनिश सेव. ॥ ३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अढार दोष वर्जित जिन चैत्यवंदन. (२ जुं).

क्रोध[१] मान[२] मद[३] लोभ[४] माय[५], अज्ञान[६] अरति[७] रति[८]; हिंसादिक[९][१०][११] निद्रा[१२] अने, मत्सर[१३] ने अमीति[१४].[४] ॥ १ ॥ शोक[१५], भय[१६], अने प्रीति[१७], रतिक्रीडा[१८]प्रसंग; दोष अढार प्रगट निकट, नहीं जेने अंग. ॥ २ ॥ देव सर्वे शिर सेहरो ए, ते कहोए निरधार; ज्ञान विमळ प्रभु भुवननो, पुण्यतणो भंडार. ॥ ३ ॥

॥ रोहिणी तप चैत्यवंदन ॥

वासवपूजित वासुपूज्य, वर अतिशय धारी; केवळकमळा नाथ साथ, अविरति जेणे वारी. ॥ १ ॥ परमातम परमेसरु ए, भविजन नयनानंद; शांत दांत उत्तम गुणी, वर ज्ञान दिणंद. ॥२॥ बेठी बारे पर्षदा, निसुणे जिन गिर्वाण; एक चित्त लय लाइए, देइ निज कान. ॥ ३ ॥ तव जगपति तिहां उपदिशे, रोहिणी तप सुविचार; आराधो भवि भावशुं, आतमने सुखकार. ॥ ४ ॥ सात वर्ष सात मासनी, अवधि कही सुप्रमाण; आराधे सुख संपदा, पामे पद निर्वाण. ॥ ५ ॥ वाचक शुभ नय शिष्यनो ए, भक्तिविजय गुण गाय; वासुपूज्य जिन ध्यानथी अक्षुभव सुख थाय ॥ ६ ॥

---

१ पांच. २ छ. ३ हिंसा-असत्य ने अदत्त. ४ आने बदले मागधी गाथाओमां हास्य कहेल छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री आंबिल वर्धमान तपनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वर्द्धमान जिनपति नमी, वर्द्धमान तप नाम ॥ ओली आं-बिलनी करुं, वर्द्धमान परिणाम ॥ १ ॥ एक एक दिन यावत् शत, ओली संख्या थाय ॥ कर्म निकाचित तोडवा वज्र समान गणा-य ॥ २ ॥ चौद वर्ष त्रण मासनो, ए संख्या दिननी वीस ॥ यथा विधि आराधतां, धर्मरत्न पद इश ॥ ३ ॥

॥ वीस स्थानक नाम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पहिले पद अरिहंत नमुं ॥ बिजे सरव सिद्ध ॥ त्रीजे प्रव-चन मन धरो ॥ आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणं पांचमे ॥ पाठक गुण छठे ॥ नमोओए सव्वसाहूणं, जे छे गुण गरीठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे ॥ दरसण मन भावो ॥ विनय करो गुणवंत-नो ॥ चारित्र पद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभवय धारिणं ॥ तेरमें कीरीयाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे ॥ गोयम नमोजिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनें ए, नमो तीथ्थस्स जाणो ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाणो ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ वीसस्थानक तपना काउसगनुं ॥

चोवीस पनर पीस्तालीसनो, छत्रीशनो करीए ॥ दस पच-वीस सत्तावीसनो, काउसग्ग मन धरीए ॥ १ ॥ पंच सडसठि दस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वली, सितेर नव पणविस ॥ बार अडवीस लोगसतणेा, काउसग्ग धरो गुणीस ॥ २ ॥ वीस सतर इगवन्न, द्वादशन पंच ॥ इणीपरे काउसग्ग जेा करे, तो जाए भव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउसग्ग मने धरो, गुणो लेज्यो वीस ॥ वीस थानक इम जाणीए, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ भाव धरी मनमां घणेाए, जो एक पद आराधे ॥ जिन उत्तम पद पद्मने ॥ नमी नीज कारज साधे ॥ ५ ॥ इति संपूर्णम् ॥

थोयानो संग्रह.

॥ श्री ऋषभदेवजीनी स्तुति ॥

॥ प्रह उठी वंदुं, ऋषभदेव गुणवंत ॥ प्रभु बेठा सोहीये, समवसरण भगवंत ॥ त्रण छत्र विराजे, चामर ढाले इंद्र ॥ जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद ॥ १ ॥ बार परखदा बेसे, इंद्र इंद्राणी राय ॥ नव कमल रचे सुर, जिहां ठविया प्रभु पाय ॥ देव दुंदभी वाजे, कुसुम वृष्टि बहु हुंत ॥ एवा जिन चेावीसे, पूजो भवि एक चित्त ॥ २ ॥ जिनजोजन भूमी, वाणीनेा विस्तार ॥ प्रभु अरथ प्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सेा आगम सुणतां, छेदीजे गती चार ॥ जिन वचन वखाणी, लहीये भवनेा पार ॥ ३ ॥ जक्ष गोमुख गीरवो, जिननी भगती करेव ॥ तिहां देवी चक्रेसरी, विघन कोड हरेव ॥ श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सूरिराय ॥ तस केरो आवक, ऋषभदास गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बीजो थोय जोडो ॥

। च्याशीलाख पुरव घरवासें, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थको पण देवतरु फल क्षीरोदधि जल भोक्ता जी ॥ मई सुअ ओहि नाणे संयुत्त, नयण वयण कज चंदा जी ।. चार सहसशुं दीक्षा शिक्षा, स्वामी ऋषभ जिणंदा जी ॥ १ ॥ मनपर्यव तव नाण उपन्युं, संयत लिंग सहावा जी ॥ अढिय द्वीपमां सन्नी पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत भावा जी ॥ द्रव्य अनंता सूक्ष्म तीर्च्छा, अढारशे खित्त ठाया जी ॥ पलिये असंखम भाग त्रिकालिक, द्रव्य असंख्य परजाया जी ॥ २ ॥ ऋषभ जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया जी ॥ अनभिलप्प अभिलप्प अनंता, भाग अनंत उवराया जी ॥ तास अनंतमे भागे धारी, भाग अनंते सूत्र जी ॥ गणधर रचियां आगम पुजी, करीये जनम पवित्र जी ॥ ३ ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, समकित शुद्ध सोहावे जी ॥ आदि देवनी सेव करंती, शासन शोभ चढावेजो ॥ श्रद्धा संयुत जे व्रतधारी, विघन सास निवारे जी ॥ श्री शुभ वीरविजय प्रभु भगते, समरे नित्य सवारे जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री अजितनाथजीनी स्तुति ॥

॥ विश्वनायक लायक, जितशत्रु विजयानंद ॥ पयजुग नित प्रणमे, देव अने देविंद ॥ भाव लहरी गहिरी सेव, मन धरीये अमंद॥ श्री सूरत सहिरे, वंदो अजित जिणंद ॥ १ ॥ आठ माती-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हारज, अतिशय बलि चौतीस ॥ दिल रंजण देसन, तेहना गुण पेंतीश ॥ अगणित रिद्ध धारी. आचारीमां ईस ॥ एह गुणना धारक. वांदु जिन चोवीश ॥ २ ॥ शुद्ध अरथ अनोपम, जिन भाषित सिद्धांत ॥ स्याद्वाद नयादिक. हेतु युक्त नवि भ्रांत ॥ पाप करदम पाणी, सदगतिनी सहिनाणी ॥ सुणिये नित भविका, आगम केरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साची, देवी सानिध्य कारी ॥ दुःख कष्ट निवारण, सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे, ते सुख लाभ अपारी ॥ जिनलाभ पयंपे, होज्यो जय जयकारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तुति ॥

॥ सुख समकित दायक, कामित सुरतरु कंद ॥ दृढरथ नृप राणी, नंदा केरो नंद ॥ भद्दलपुर स्वामी, फेडे भवना फंद ॥ चित चोखे नमिये, श्री शीतल जिनचंद ॥ १ ॥ अतित अनागत, हुआ होस्ये अनंत ॥ संप्रति काले जे, क्षेत्रविदेहे विचरंत ॥ त्रिहुं भवने ठयणा, सायस असासय संत ॥ ते सघला त्रिकरण, प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक, अंग अनंग पविठ ॥ नय भंग निक्षेपा, स्यादवाद मित सिठ ॥ भविजन उपगारी, भारी जिन उपदेश ॥ श्रुत श्रवणे सुणंतां, नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष अशोका, शासन सुरि सुविचार ॥ संघ सानिध कारी, निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे, पुरे मनह जगीस ॥ ध्यान तेहनो धरीये, कहे जिन लाभ सूरीस ॥ ४ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री शांतिनाथजीनी स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरिये ॥ ए देशी ॥

॥ शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे ॥ सुमतिने घरे पारणुं, भवपार उतारे ॥ विचरंता अवनी तले, तप उग्रविहारे ॥ ज्ञान ध्यान एक तानथी, तिर्यंचने तारे ॥ १ ॥ पास वीर वासुपूज्यने, नेम मल्ली कुमारी ॥ राज्य विहूणा ए थया, आपे व्रतधारी ॥ शांति नाथ प्रभुखा सवि, लही राज्य निवारी ॥ मल्ली नेम परण्या नहीं, बीजा घरबारी ॥ २ ॥ कनक कमल पगलां ठवे, जग शांति करीजे ॥ रयण सिंहासने बेसीने, भली देशना दीजे ॥ योगावंचक प्राणीयां, फल लेतां रीझे ॥ पुष्करावर्तना मेघमां, मगसेल न भींजे ॥ ३ ॥ क्रोडवदन शुकरारुढो श्याम रूपे चार ॥ हाथ बीजोरु कमल छे, दक्षिण कर सार ॥ जक्ष गरुड वाम पाणीये, नकुलाक्ष दखाणे ॥ निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजो थोय जोडो ॥

॥ श्रीशांति जिणेसर समरिये, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना, मृग लंछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वर्णी काय ॥ धनुष चालीश जस देहडी, वरष लाखनुं आय ॥१॥ शांति जिनेसर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री छट्ठा, अरनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंदुं ॥ संयम लेइ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुगतें गया, नित्य उठी वंदुं ॥२॥ शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥ दान शीयल तप भावना, नर सोहे अभ्यासें ॥ एह वचन जिनजी तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सुणतां समकित निर्मळु, दीसे केवल वरिया ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अण-सण कीधुं ॥ काउसग्ग मुद्रायें रह्या, तिणें मुगतिज लीधुं ॥ गरुड यक्ष समरु सदा, देवी निर्वाणी ॥ भविक जीव तुमे सांभलो, रिख-भदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तुति ॥

॥ कनक तिलकभाले ॥ ए देशी ॥

॥ दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं ॥ गुणवत मविकारं, प्राप्तसिद्धि मुदारं ॥ जिनवर जयकारं, कर्म संक्लेश हारं, भवजल निधितारं, नौमि नेमिकुमारम् ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे मयाता ॥ अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता ॥ अड जिनवर माता, प्राप्त माहेंद्र स्याता ॥ भव भय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता ॥ २ ॥ ऋषभ जनक जावे, नागसुर भाव पावे ॥ इशान सग कहावे, शेष कांता सभावे ॥ पदमासन सुहावे, नेम आयंत पावे ॥ शेष काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्रे पठावे ॥ ३ ॥ दाहन पुरुष जाणी, कृष्ण वर्णे प्रमाणी ॥ गोमेधने षट पाणी, सिंह बेठी वराणी ॥ तनु कनक समाणी, अंबिका चार पाणी ॥ नेम भगति भराणी, वीरविजये वखाणी ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बीजो थोय जोडो ॥

॥ गिरनार विभूषण, निर्दूषण सुखकार ॥ श्री नेमि जिनेसर, अलवेसर आधार ॥ प्रभु वंछित पूरे, दुःख चूरे निरधार ॥ बहु भावे वंदो, राजिमती भरतार ॥ १ ॥ वैमानीक प्रभु दश, भुवनाधीश वरवीश ॥ ज्योतिषी पतिदोय, व्यंतर पति बत्रीश ॥ इय चउसठि इंद्रे, पूज्या जिन चेावीश ॥ ते जिननी आणा, शिरवहुं हुं निशदीश ॥ २ ॥ त्रिभुवन जिनवंदन, आनंदन जिन वाणी ॥ सिंहासन बेसी, उपदेशी हित आणी ॥ जेह मांहे वखाणी, जीवदया सुणेा प्राणी ॥ ते वाणी आराधी, वरीये शिव पटराणी ॥३॥ संघ सान्निध्य कारी; जय कारी वरदाई ॥ शासन रखवाली, विघन हरे अंबाई ॥ बावीशमा जिननी, सेवा करो चित्त लाई, बुध प्रीतिविजय कहे, सुख संपद में पाई ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनी थोय जोडो ॥

॥ प्रणमुं नित्य पास चिंतामणि, सेाहे तस सप्त फणामणि ॥ तस महिमा मही मांहेज घणी, सुप्रसन्न सदा मुझ जगत धणी ॥१॥ वंदुं हुं अतीत अनागता, वीश विहरमान चारे शाश्वता ॥ संपई जिनवर सवि वंदीयें, मनमोहन देखी आणंदीये ॥ २ ॥ भरपूरें गाजे मेहलेा, सांभळतां अधिक स्नेहलेा ॥ एहवेा आगम जिनवर भांखियो, सहु गणधर मळि परकाशियो ॥ ३ ॥ श्री पास चरण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवो सदा, जेहथी लहियें सुख संपदा ॥ दया कुशल कहे सेा भग-वइ, संघ विघन हरेा पउमावइ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजो थोय जोरो ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी. ॥

॥ पास जिणंदा वामा नंदा, जब गरभें फली ॥ सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणि प्रिये ॥ नेमी राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये ॥ १ ॥ वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति ॥ पासने मल्लि त्रय[1]शत साथे, बीजा सहस्रे व्रती ॥ षट शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जग धणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजेा मुझने घणी ॥ २ ॥ जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी ॥ द्राख विहासे गई वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ साकर सेंती, तरणा लेती, मुखे पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुर-वधू गावती ॥३॥ गजमुख दक्षा वामन यक्षा, मस्तके फणावली ॥ चार ते बांही, कच्छप[2] वाही, काया जस शामली ॥ चउकर प्रौढा नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सेावन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ त्रणशे.

२ काचबाना वाहन वाळा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ श्री महावीर स्वामी जिन स्तुति ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जगत्पति जन्मज थापे, नंदन निश्रित शिखर रहावे, आठ कुमारी गावे ॥ अड गजदंता हेठे वसावे, रुचक गिरिथी छत्रीश जावे, द्वीप रुचक चउ भावे ॥ छप्पन दिगकुमरी हुलरावे, [1]सूती करम करी निज घर पावे, शक्र सुघोषा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, भवन व्यंतर शंख पडहे मिलावे, सुरगिरि जन्म महावे ॥१॥ ऋषभ तेर शशि सात कहीजे, शांतिनाथ भव वार सुणीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे ॥ नव नेमीश्वर नमन करीजे, पास प्रभुना दश समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे ॥ अजितादिक जिन शेष रही जे, त्रण्य त्रण्य भव सधले ठवीजे, भव समकितथी गणीजे ॥ जिन नामबंध निकाचित कीजे, त्रीजे भव तप खंती धरीजे, जिनपद उदये सीझे ॥२॥ आचारांग आदे अंग अग्यार, उववाई आदे उपांग ते वार, दश पयन्ना सार ॥ छ छेद सूत्र विचित्र प्रकार, उपगारी मुलसूत्र ते चार, नंदी अनुयोग द्वार ॥ ए पीस्तालीश आगम सार, सुणतां लहीये तत्त्व उदार, वस्तु स्वभाव विचार ॥ विषय भुजंगिनी विष अपहार, ए समो मंत्र न को संसार, वीर शासन जयकार ॥ ३ ॥ नकुल बीजोरु दोय कर झाली, मातंग सुर शाम कंती [1]तेजाली, वाहन गज शूंढाली ॥ सिंह उपर बेठी

१ सुवावड. २ तेजस्वी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अढीयाली, सिद्धायिका देवी लटकाली, हरिताभा चार भुजाली ॥ पुस्तक अभया जिमणे झाली, मातु लिंगने वीणा रसाली, वाम भुजा नहिं खाली ॥ शुभगुरु गुण प्रभु ध्यान घटाली, अनुभव नेहशुं देती ताली, वीर वचन टंकशाली ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीनी स्तुति.

गंधारे महावीर जिणंदा, जेने सेवे सुर नर इंदा, दीठे परमानंदा; चैत्र शुद तेरश दिन जाया, छपन दिक कुमरी गुण गाया, हरख धरी हुलराया; त्रीश वरस पाळी घरवास, मागशर वद दशमी व्रत जास, विचरे मन उल्लास; ए जिन सेवो हितकर जाणी, एहथी लहीए शिव पटराणी, पुण्य तणी ए खाणी ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर तेर भव सार, चंद्र प्रभु भव आठ उदार, शांति कुंथर भव बार; मुनिसुव्रत ने नेमकुमार, ते जिनना नव नव भव सार, दश भव पार्श्वकुमार; सत्तावीश भव वीरना कहीए, सत्तर जिननां भण भण लहीए, जिन वचने सहीदए; चोवीश जिननो एह विचार, एहथी लहीए भवनो पार, नमतां जय जयकार ॥ २ ॥ वैशाख शुद दशमी लही नाण, सिंहासन बेठा वर्धमान, उपदेश दे प्रधान; अग्नि खुणे हवे पर्षदा सुणीए, साध्वी वैमानिकस्त्री गणीए, मुनिवर त्यांहीज भणीए; व्यंतर ज्योतिषी भुवनपति सार, एहने नैऋत खुणे अधिकार, वायव्य खुणे एहनी नार; इशाने शोभे नर नार, वैमानिक सुर पर्षदा बार, सुणे जिन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाणी उदार ॥३॥ चक्रेश्वरी अजिता दुरितारि, काली महाकाली मनोहारी, अच्युता संता सारी; ज्वाला मुतारका अशोका, श्री-वत्सा वरचंडा माया, विजयांकुशी सुखदाया; पन्नत्ति निर्वाणी अच्युता धरणी, वैरोट्या दत्ता गंधारी अघहरणी, अंबा पउमा सुखकरणी; सिद्धायिका शासन रखवाळी, कनकविजय बुध आनंद-कारी, जसविजय जयकारी ॥ ४ ॥

॥ श्री अजितनाथजीनी स्तुति ॥

॥ मह उठी वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ जब गर्भे स्वामी, पामी विजया मार ॥ जीते नित्य पीयुने, अक्ष क्रीडन हुशीयार ॥ तिणे नाम अजित छे, देशना अमृत धार ॥ महा जक्ष अजिता, वीर विघन अपहार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री संभवनाथजीनी स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥

॥ संभव स्वामी सेवीये, धन्य सज्जन दीहा ॥ जिनगुण माला गावतां, धन्य तेहनी जीहा ॥ वयण सुगंग तरंगमां, न्हाता शिवगेही ॥ त्रिमुख सुर दुरितारिका, शुभवीर सनेही ॥ १ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री अभिनंदन स्वामीजीनी स्तुति ॥

॥ आप पदम लंघनं ॥ चाल ॥

॥ अभिनंदन गुणमालिका, गावती अमरालिका ॥ कुमतिकी परजालिका, शिव वहुवर मालिका ॥ लगे ध्यानकी तालिका, आगमनी परनालिका ॥ इश्वरो सुर वालिका, वार नमे नित्य कालिका ॥ १ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ जिन स्तुति ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ए देशी ॥

॥ सुमति स्वर्ग दिये असुधंतने, ममत्व योह नहि भगवंतने ॥ प्रगट ज्ञान वरी शिव वालिका, तुंबरु वीर नमे महाकालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभुजिन स्तुति ॥

॥ नंदीश्वरे वर द्वीप संभारुं ॥ ए चाल ॥

॥ पद्मप्रभु हत छद्म अवस्था, शिवसद्मे सिद्धा अरूपस्था ॥ जाणने दंसण दोय विलासी, वोर कुसुम श्यामा जिनुपासी ॥ १ ॥ इति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट महा प्रतिहारशुं ए, शोभे स्वामी सुपास तो ॥ महाभाग्य अरिहा प्रभुए, सुरनर जेहना दासतो ॥ गुण अतिशय वरणव्या ए, आगम ग्रंथ मोझार तो ॥ मातंग शांता सुरी ए,वीर विघन अपहार तो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रजुजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥

॥ चंद्रप्रभु मुख चंद्रमां, सखी जोवा जइए ॥ द्रव्य भाव प्रभु दरिसणे, निर्मलता थइए ॥ वांणी सुधारस वेलडी,सुणीए ततखेव ॥ भजे भदंत भृकुटिका, वीरविजय ते देव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री सुविधिनाथजीनी स्तुति ॥

॥ सुविधि सेवा करतां देवा, तजो विषय वासना ॥ शिव सुख दाता ज्ञाता ज्ञाता, हरे दुःख दासना ॥ नय गम भंगे गे चंगे, वाणी भव हारिका ॥ अमर अतीते मोहातीते, विरंच सुतारिका ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तुति ॥

॥ महउठी वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल प्रभु दर्शन, शीतल अंग उवंगे ॥ कल्याणक पंच, प्राणि गण सुख संगें॥ तो वचन सुणंतां, शीतल किम नहि लोका॥ शुभ वीर ते ब्रह्मा, शासनदेवी अशोका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथजिन स्तुति ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस सुहंकर पामी, इच्छे अवर कुण देवा जी ॥ कनक तरु सेवे कुण प्रभुने, छंडी सुरतरु सेवा जी ॥ पूर्वापर अविरोधी स्यात्पद, वाणी सुधारस वेली जी ॥ मानवी भणुएसर सुपसायें, वीर हृदयमां फेली जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री वासुपूज्यजिन स्तुति ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥

॥ विमल गुण अगारं, वासुपूज्यं सफारं ॥ निहत विष विकारं, प्राप्त कैवल्य सारं ॥ वचन रस उदारं, शुक्ति तत्त्वे विचारं॥ वीर विघन निवारं, स्तौमि चंडी कुमारं ॥ १ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री विमल जिन स्तुति ॥

॥ चोपाइनी चाल ॥

॥ विमलनाथ विमल गुण वरया, जिनपद भेागी भव निस्तरया ॥ वाणी पांत्रीश गुण लक्षणी, छम्मुह सुर प्रवरा जक्षणी॥१॥

॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तुति ॥

॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥

॥ ज्ञानादिकाः गुणवरा निवसंनंते, वज्री सुपर्वमहिंते जिनपादपद्मे ॥ ग्रंथार्णवे मतिवराः प्रणतिस्म भक्त्या, पाताळचांकुशि सूरी शुभवीर दक्षाः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री धर्मनाथजिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥

॥ सखि धर्म जिणेसर पूजीए, जिन पूजे मोहने धूजीए ॥ प्रभु वयण सुधारस पीजीए, किन्नर कंदर्प्पा रीजाए ॥ १ ॥ इति॥

॥ श्री कुंथुंनाथ जिन स्तुति ॥

॥ वशी कुंथु व्रती तिलकेा जगति, महिमा महती नत इंद्रतती ॥ प्रथितागम ज्ञानगुणा विमळा, शुभवीर मतां गांधरव बाळा ॥ १ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री अरनाथजिन स्तुति ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ॥ ए देशी ॥

॥ अर विभू रवि भूतल द्योतकं, सुमनसा मनसार्चित पकजे ॥ जिनगिरा न गिरा परतारिणी, प्रणत यक्षपति वीर धारिणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री मल्लीनाथजिन स्तुति ॥

॥ नंदीश्वर वर द्वीप संभालुं ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिनाथ मुख चंद निहालुं, अरिहा प्रणमी पातक टालुं ॥ ज्ञानानंद विमळपुर सेर, धरण पिया शुभवीर कुबेर ॥ १ ॥ इति॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तुति ॥

॥ पास जिणंदावामानंदा ॥ ए देशी ॥

॥ सुव्रत स्वामी आतमरामी, पुजो भवि मन रुली ॥ जिनगुण थुणीए पातक हणीए, भाव स्तवन सांकली ॥ वचनें रहीए जूठ न कहीए, टले फल वंचको ॥ वीर जिणुंपासी नरदत्ता, वरुण जिनार्चको ॥ १ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री नमिनाथजिन स्तुति ॥

॥ श्रावण सुदी दिन पंचमी ए ॥ ए देशी ॥

॥ श्री नमीनाथ सेाहामणा ए, तीर्थपति सुलतान तो ॥ विश्वंभर अरिहा प्रभु ए, वीतराग भगवानतो ॥ रत्नत्रयी जस ऊजली ए, भांखे षट्द्रव्य ज्ञान तो ॥ भृकुटी सुर गंधारिका ए, वीर हृदय बहुमान तो ॥ १ ॥ इति

॥ अथ श्री पांचज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री मतिज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री मतिज्ञाननी तत्व भेदथी, पर्यायें करी व्याख्या जी ॥ चउदावह द्रव्यादिकने जांणे, आदेशें करी दाख्या जी ॥ माने वस्तु धर्म अनंता, नहीं अज्ञान विवक्षा जी ॥ ते मतिज्ञानने वंदो पूजो, विजयलक्ष्मी गुण कांक्षा जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रुतज्ञाननी स्तुति ॥

॥ गोयम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिगडे बेशी श्री जिन भाण, बोले भाषा अमीय समाण, मत अनेकांत प्रमाण ॥ अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नुयोग जिहां गुण खाण, आतम अनुभव ठाण ॥ सकल पदारथ ॥ त्रिपदी जाण, जोजन भुमि पसरे वखाण, दोष बत्रीश परिहाण ॥ केवली भाषित ते श्रुत नाण, विजयलक्ष्मी सूरि कहे बहुमान, चित्त धरजो ते सयाण ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री अवधिज्ञाननी स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे ॥ ए देशी ॥

॥ ओहीनाण सहित सवि जिनवरू, चवि जननी कूंखे अवतरू ॥ जस नामे लहीये सुख तरू, सवि इति उपद्रव संहरू ॥ हरि पाठक संशय संहरु, वीर महिमा ज्ञान गुणायरूं ॥ ते माटे प्रभुजी विश्वंभरू, विजयांकित लक्ष्मी सुहंकरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री मनः पर्यव ज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी सर्व समायिक उचरे, सिद्ध नमी मद वारी जी ॥ छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहां लगे, योगासन तप धारी जी ॥ चोथुं मनःपर्यव तव पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ॥ ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजयलक्ष्मी सुखकारी जी ॥ १ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री केवल ज्ञाननी स्तुति ॥

॥ महा उठो वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ छत्रत्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि दुंदुभी, भामंडल झलकार ॥ वरसे सुर कुसुमें, सिंहासन जिन सार ॥ वंदे लक्ष्मीसूरि, केवलज्ञान उदार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ वर्धमान तपनी स्तुति ॥

॥ वर्धमान आंबिल तप आदरो, चोवीश जिननी पूजा करो ॥ अंतगड आगम सुणो वखाण, सिद्धाइ देवी करे कल्याण ॥ १ ॥ (आ स्तुति चार वखत पण कहेवाय छे.)

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ सीमंधर स्वामी निर्मला, तुम ज्ञान उपनुं केवला ॥ सीमंधर स्वामी तार तार, मुज आवागमन निवार वार ॥ १ ॥ सीतेरशेा जिनवर वंदीये, जस नामें पाप निकंदीयें ॥ सांप्रत जिन सोहे वीश सार, ते भविअण वंदो वारं वार ॥ २ ॥ जिनवाणी साकर सेलडी, पीतां जाणे अमृत वेलडी ॥ जिन आगम सागर सेवतां, लहो विद्या रयण सोहावता ॥ ३ ॥ सीमंधर जिनवद अनुसरी, श्रीसंघ प्रत्ये बहु सुख करी ॥ कनका भासा शासन सूरि, धो वंछित देवी पद्मंजरी ॥ ४ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ सीमंधर जिन स्तुति बीजी ॥

अजवाळी बीज सोहावे रे, चंदा रुप अनुपम छावे रे; चंदा विनतडी चित्त धरजो रे, सीमंधरने वंदणा कहेजो रे. ॥ १ ॥
वीश विहरमान जिनने वंदुं रे, जिन शासन पूजी आणंदुं रे; चंदा एटलुं काम म करजो रे, सीमंधरने वंदणा कहेजो रे. ॥ २ ॥
सीमंधर जिननी वाणी रे, ते तो अमिय पान समाणी रे; चंदा तमे सुणी अमने सुणावो रे, भवसंचित पाप गमावो रे. ॥ ३ ॥
सीमंधर जिननी सेवा रे, ते तो शासन भासन मेवा रे; चंदा होजो संघना त्राता रे, गज लंछन चंद्र विख्यात रे. ॥ ४ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण आदिदेव, हुं अहोनिश सारुं तास सेव ॥ रायण तळे पगलां प्रभुतणां, पुजिश सकल फूल शोहामणां ॥ १ ॥ त्रेवीश तीर्थंकर समोसरया, विमलाचल उपर गुण भरया ॥ गिरि कंडणें आव्या नेमनाथ, सो जिनवर मेलो मुक्ति साथ ॥२॥ श्री सोहम स्वामी उपदिश्या, जंबु गणधरने मन वश्या ॥ पुंडरिक गिरि महिमा एह मांहि ॥ हुं आगम समरुं मन उच्छाहीं ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुख कवड यक्ष, मन वंछित पूर्ण कल्पवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्र सहाइ देवता, भणे नंदसूरि तुम पाय सेवता ॥ ४ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सिद्धाचळजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गीरी तीरथ सार ॥ ए देशो ॥

॥ जिहां अणण्योतेर कोडाकोडी, तिम पंचाशी लाख वळी कोडी, चुमाळीश सहस्र कोडी ॥ समवसर्या जिहां एतिवार, पूर्व नवाणुं एम प्रकार, नाभि नरेंद्र मल्हार ॥ १ ॥ सहस्रकूट अष्टापद सार,जिन चोवीश तणा गणधार, पगलांनो विस्तार ॥ वळो जिन-बिंब तणो नहीं पार, देहरी थंभे बहु आकार, वंदुं विमलगिरि सार ॥ २ ॥ शी सीत्तेर साठ पचास, बार जोजन माने जस विस्तार, इग बि ति चउ पण आर ॥ मान कह्युं तेनुं निरधार, महिमा एहनो अगम अपार, आगम मांहे उदार ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिन शुभ भावे, समकित दृष्टि सुर नर आवे, पूजा विविध रचावे ॥ ज्ञानविमलसूरि भावना भावे, दुर्गति दोहग दूर गमावे, बोधबीज जस पावे ॥ ४ ॥

॥ चैत्री पुनमनी स्तुति ॥

॥ श्री विमलाचल सुंदर जाणुं, ऋषभ जिहां आव्या पूर्व नवाणुं, तीर्थ भुमीका पीछाणुं । तें तो शास्वत गाय गिरींद, पूर्व संचित पाप निकंद, टाळो भव भय फंद ॥ पूरव साहामा अति हे उदार, बेठा सोहे नाभी मल्हार, सनमुख पुंडरीक सार । चैत्री पूनम दिन जे अजुआळी, भवियां आराधो मिथ्यात्व टाळी, जिम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहो शिववधू नारी ॥ १ ॥ आबु अष्टापद ने गिरनार, समेत-शिखर ने वली वैभार, पुंडरीक चैत्य जुहार । श्री जिन अजित तारंगे लहीये, श्री वरकाणोजी बंभण वाडे, तोडे कर्मनी जाडे ॥ नारंगो संखेश्वरो पास, श्री गोडीजी पुरे आस, पोसीना जिन मुविलास । चैत्री पूनम दिन सुंदर जाणी, ए सवि पूजो भव्य प्राणी, जेम थावो केवल नाणी ॥२॥ भरत आगल श्री ऋषभजी बोले, नहि कोइ चैत्री पूनम दिन तोले, इम जिन वचनज बोले । चैत्री पूनम दिन ए गीरी आत, छठ करी जात्रा सात करंत, त्रीजे भव मुक्ति लहंत ॥ चैत्री पूनम दिन ए गिरी सिद्ध, पांच क्रोडी केवलीथी प्रसिद्ध, पुंडरीक शिवपद लीध । इम जाणीने भवियो आराधो, चैत्री पूनम दिन शुभ चित्त साधो, मुक्तिना खातां बांधो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गीरीनी शासन देवी, मरुदेवा नंदन चरण पुंजेवी, चक्रेश्वरी तुं देवी । चउविह संघने मंगल करजो, तुज सेवक पर लक्ष्मी वरजो, सयल विघन संहरजो ॥ अप्रतिचक्र तुं मोरी मात, तुं जाणे मोरा चित्तनी धात, पूरजे मननी वात । पंडित अमर केसर मुपसाय, चैत्री पूनम दिन महा लहाय, लब्धी विजय गुण गाय ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

महा उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय, जपीए नवपदनो, जाप सदा मुखदाय; विधिपूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाळ, ते सवि मुख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पामे, जिम मयणा श्रीपाळ ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत, तस कर्म संयोगे, कोढी पिलियेा कंत; गुरु वयणे तेणे, आराध्युं तप तेह, सुख संपदा वरीया, तरीया भवजळ तेह ॥ २ ॥ आंबिल ने उपवास, छट्ठ वळी अट्ठम, दश अट्ठाइ पंदर, मास छ मास विशेष; इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार, जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥ तप सांनिध्य करशे, श्रीविमळेश्वर यक्ष, सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष; पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य, बुध दर्शनविजय कहे,पहोंचे सकळ जगीश ॥४॥

॥ पर्युषणनी स्तुति ॥

पर्व पर्युषण पुण्ये पामी, परिघल परमानंदोजी । अति ओच्छव आडंबर सघळे, घर घर बहु आनंदोजो । शासन अधिपति जिनवर वीरे, पर्वतणां फळ दाख्यांजी । अमारि तणो ढंढेरो फेरी, पाप करंता राख्याजी ॥ १ ॥ मृगनयनी सुंदरी सुकुमाळी, वचन वदे टंकशाळीजो । पूरो पनेाता मनेारथ महारा, निरुपम पर्व निहाळीजी ॥ विविध भाति पकवान्न करीने, संघ सयळ संतेाषेाजी । चेावीशे ।जनवर पूजीने, पुण्य खजानेा पेाषेाजी ॥ २ ॥ सकळ सूत्र शिर मुगट नगीनेा, कल्पसूत्र जग जाणेाजो । वीर पास नेमीश्वर अंतर, आदि चरित्र वखाणेाजो ॥ स्थविरावळी ने सामाचारी, पट्टावळी गुण गेहजी । एम ए सूत्र सविस्तर सुणीने, सफळ करो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नर देहजी ॥ ३ ॥ एणीपरे पर्व पर्युषण पाळी, पाप सर्वे परिहरीए जी । संवत्सरी पडिकमणुं करतां, कल्याण कमळा वरीएजी ॥ गोमुख जक्ष चक्रेश्वरी देवी, श्री माणिभद्र अंबाइजी । शुभविजय कवि शिष्य अमरने, दिन दिन करजो वधाइजो ॥ ४ ॥

॥ श्री वीशस्थानकनी स्तुति ॥

वीश स्थानक तप विश्वमां मोटो, श्री जिनवर कहे आपजी । बांधे जिनपद त्रीजा भवमां, करीने स्थानक जापजी ॥ थया थशे सवि जिनवर अरिहा, ए तपने आराधीजी । केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टाळी उपाधिजी ॥ १ ॥ अरिहंत[1] सिद्ध[2] पवयण[3] सूरि[4] स्थविर[5], वाचक[6] साधु[7] नाणजी[8] । दर्शन[9] विनय[10] चरण[11] बंभ[12] किरिया,[13] तप[14] करो गोयम[15] ठाणजी ॥ जिनवर[16] चारित्र[17] पंच विध नाण,[18] श्रुत[19] तीर्थ[20] एह नामजी । ए वीश स्थानक आराधे ते, पामे शिवपद धामजी ॥ २ ॥ दोय काळ पडिकमणुं पडिलेहण, देववंदन त्रण वारजो । नोकरवाळी वीश गुणोजे, काउसग्ग गुण अनुसारजी ॥ चारसो उपवास करी

१ आ वीश स्थानकमां केटलाक नामांतर आवे छे. १३ मुं क्रियापद ते समाधिपद, १५मुं गोयम पद ते दान पद, १६मुं जिनपद ते वैयावच्च पद, १८ मुं पंचविध ज्ञानपद ते अभिनव ज्ञानपद-आम नामांतर छे. तेमज चारित्रने लगता बे पद छे, ज्ञानने लगता ३ पद छे, एमां कांइक कांइक जुदो जुदो भाव दर्शावेल छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्त चोखे, उजमणुं करो सारजी । पडिमा भरावो संघ भक्ति करो, ए विधि शास्त्र मोझारजी ॥ ३ ॥ श्रेणिक सत्यकि सुलसा रेवति, देवपाळ अवदातजी । स्थानक तप सेवा महिमाए, यथा जगमांहि विख्यातजी ॥ आगम विधि सेवे ज तपीया, धन्य धन्य तस अवतारजी । विघ्न हरे तस शासनदेवी, सौभाग्य लक्ष्मी दातारजी ॥ ४ ॥

बीजनी स्तुति.

जंबू द्वीपे अहोनिश दीपे, दोय सूर्य दोय चंदाजी; तास विमाने श्री ऋषभादिक, शाश्वत नाम जिणंदाजी ॥ तेह भणी उगते शशि नीरखी, प्रणमे भवीजन वृंदाजो; बीज आरोपो धर्मनुं बीज, पूजो शांति जिणंदाजो ॥ १ ॥ द्रव्य भाव दोय भेदे पूजो, चोवीशे जिन चंदाजी; बधन दोय दूर करीने, पाम्या परमाणंदाजी ॥ दुष्ट ध्यान दोय मत्त मतंगज, भेदन मत्त मयंदाजी ॥ बीज तणे दिन ते आराधे, जेम जंगम । चिरनंदाजी ॥ २ ॥ द्विविध धर्म जिनराज प्रकाशे, समवसरण मंडाणजीः निश्चय ने व्यवहार बेहुथुं, आगम मधुरी वाणीजी ॥ नरक तिर्यंच गति दोय न होवे, बीज ते ज आराधेजी; द्विविध दया त्रस स्थावर केरी, करतां शिव सुख साधेजी ॥ ३ ॥ बीज चंद पेरे भूषण भूषित, दीपे निलघट चंदाजी; गरुड यक्ष नारी सुखकारी निर्वाणी सुख कंदाजी ॥ बीज तणो तप करतां भवीने, समकित सांनिध्य कारीजी; वीरविमळ शिष्य कहे नय, संघना विघ्न निवारीजी ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचमीनी स्तुति.

पांचमने दिन चोसठ इंद्रे, नेमि जिन महोत्सव कीधो जी ॥ रुपे रंभा राजीमतीने, छंडी चारित्र लीधो जी ॥ अंजन रत्न सम काया दीपे, शंख लंछन सुप्रसिद्धो जी ॥ केवळ पामी मुक्ति प· होच्या, सघळां कारज सीध्यां जी ॥१॥ आबु अष्टापद ने तारंगा, शत्रुंजय गिरि सोहे जी ॥ राणकपुर ने पार्श्व शंखेश्वर, गिरनारे मन मोहेजी ॥ संमेत शिखर ने वळी वैभार गिरि, गोडी थंभण वंदो जी ॥ पंचमीने दिन पूजा करतां, अशुभ कर्म निकंदो जी ॥ २ ॥ नेमि जिनेश्वर त्रिगडे बेठा, पंचमी महिमा बोले जी ॥ बीजा तप जप छे अति वहोळा,नहीं कोइ पंचमी तोले जी ॥ पाटी पोथी ठवणी कवळी, नोकारवाळी सारी जी ॥ पंचमीतुं उजमणुं करतां, लहीए शिववधु प्यारी जी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सांनिध्य कारी, आराधे अति दीपेजी ॥ काने कुंडळ सुवर्ण चुडी, रुपे रमझम दीपे जी ॥ अंबिकादेवी विघ्न हरेवी,शासन सांनिध्य कारी जी ॥ पंडित हेतविजय जयकारी, जिन जपे जयकारी जी ॥ ४ ॥

अष्टमीनी स्तुति.

अष्टमी तप महिमा, मोटो कहे महावीर ॥ आठम तप भंजे, अष्ट कर्म जंजीर ॥ आठ सिद्धि ऋद्धि आपे, जिम ए भंजे आठ ॥ दुःख दुर्गति कापे, जेम दावानळ काष्ट ॥ १ ॥ चोवीशे जिननी, प्रतिमा भरते भरावी ॥ अष्टापद उपर, नासिका सरखी ठरावी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरव थकी वंदो,दोय चार अठ दश देव ॥ ए चार निक्षेपे, संभाळी करुं सेव ॥ २ ॥ महावीर थकी त्रिपदी, पामीने तत्काळ ॥ द्वादशांगी गुंथी, गणधर देव रसाळ ॥ एमांथी उपदिशे, आठमनो अधिकार ॥ अष्टमी आराधो, जिम पामो भव पार ॥३॥ जिन शासन देवी, सिद्धायिका मातंग ॥ आठम तप तपीए, सांनिध्य करे धरी रंग ॥ सुर समकित धारी, भविक करे कल्याण ॥ भाव विजयना वाचक, सेवक ज्युं भाम भाण ॥ ४ ॥

॥ एकादशीनी स्तुति ॥

दीन सकल मनोहर-ए देशी.

गोपीपति पूछे, पभणे नेमि कुमार । इहां थोडे कोधे, लहीए पुण्य अपार ॥ मृगशर अजवाळी, अग्यारश सुविचार । पोसह विधि पाळी, बहु तरीए संसार. ॥ १ ॥ कल्याणक हुवा, जिनना सो पचास । तस गुणणुं गणतां, पहोंचे वांछित आश । इहां भाव धरीने, व्रत कीजे उपवास । मौन व्रत पाळी, छांडीजे भव पास ॥ ॥ २ ॥ भगवंते भाख्यो, श्री सिद्धांत मोझार । अग्यारश महिमा, मृगशिर पख शुदी सार ॥ सवि अतीत अनागत, वर्त्तमान सुविचार । जिनपति कल्याणक, छोडे पाप विकार ॥ ३ ॥ ऐरावण वाहन, सुरपति अति बलवंत । जिम जग जश गाजे, रमणीकांत हसंत ॥ तप सांनिध्य करजो, मौन अग्यारश संत । तप कीर्ति प्रसरे, शासन विनय करंत ॥ ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ चौदशी तिथिनी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगळ–ए देशी.

॥ चौद सुपन सूचित हरि पूजित, सिद्धारथ कुल चंदाजी ॥ चौद[1] रयणापति नरपति वंदित, त्रिशला राणी नंदाजी ॥ केशरि छंछन कंचनवाने, सोहे वीर जिणंदाजी ॥ पाखी पर्व कहुं दिन चौदशे, आराधो सुख कंदाजी ॥ १ ॥ [2]चउदश दश जिन चंदा वंदो, भावधरी भवि प्राणीजी ॥ चौदशमें गुणठाणे चढीनें, पाम्या शिवसुख खाणीजी ॥ चौदराज उपरे जे पोहोत्या, चौदशी दिन आराधोजी ॥ चौदशी तप करतां भविजनने, चौदश विद्या साधोजी ॥२॥ चउदश देव मळीने विरचे, गढ त्रणनुं परिमाणजी ॥ चौदश सहस मुनि परिकर संयुत, बेसे श्री जिन भाणजी ॥ चौदश पूरव अर्थ उपदेशे, निसुणे पर्षदा बारजी ॥ जीवदया चउदशी दिने पाळो, प्राणी चउद प्रकारजी ॥ ३ ॥ चउद भुवन वश करवा वरवा, शिव रमणी मनहरणीजी ॥ सिद्धाइ देवी जन सुख करणी; मातंग यक्षनी घरणीजी ॥ चउदशी तपनी सानिध करणी, विशद[3] वरण तनु वरणीजी ॥ ज्ञानविमल कहे जिन अनुसरणी, सकळ संघ दुःख हरणीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ चौद रत्नपति चक्रवर्ती. २ चौदने दश चोवीश.

३ विशद पटले उज्जवल वर्णे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तवनोनो संग्रह ॥

श्री रत्नविजयजीकृत चोवीशी.

॥ श्री ऋषभदेवनुं स्तवन.

॥ वेण म वाईश रे विठल वारु तुजने (अथवा) भवि तुमे वंदोरे, सुरीश्वर गच्छराया ॥ ए देशी ॥ ऋषभ जीणेसर वंछित पुरण, जाणुं विशवावीश ॥ उपगारी अवनि तले मोटा, जेहनी चढती जगीश ॥ १ ॥ जग गुरु प्यारो रे पुन्य थकी मे दीठो ॥ मोहनगारो रे सरस सुधाथी मीठो ॥ ए आंकणी ॥ नाभी नंदन नजरे नीरख्यो,परख्यो पुरण भाग्ये ॥ निरविकारी मुद्रा जेनी,दीठे अनुभव जागे ॥जग०॥२॥ आतम सुख ग्रहेवानुं कारण,दरशन ज्ञान चारित्र ॥ तेने भय वली मिथ्या अज्ञान, अविरती जेह विचित्र ॥जग०॥३॥ सकल जोव छे सुखना कामी,ते सुख अक्षय मोक्ष ॥ कर्म जनित सुखने दुःख रुपा, सुख ते आतम झांख ॥ जग० ॥४॥ निरुपाधिक अक्षय पद केवल,अव्याबाध ते थावे ॥ पुरणानंद दशा ने पामे, रुपातीत स्वभावे ॥ जग० ॥ ५ ॥ अंतरजामी स्वामी मारो, ध्यान रुचीमां लावे ॥ जीन उत्तम पदने अवलंवी, रतनविजय गुण गावे ॥ जग० ॥ ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री अजितनाथनुं स्तवन.

॥ प्यारी ते पियुजीने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ अजीत जीनेसर वालहा हो राज, आतमनो आधार ॥ वारी मोरा साहीबा, शांती सुधारस देशना हो राज ॥ गाजे जेम जलधार, वारी मोरा साहीबा ॥ अजीत० ॥ १ ॥ भविजन संशय भांजवा हो राज, तास अभिप्रायनो जाण ॥ वारी मोरा साहिबा, मिथ्या तिमिर उछेदवा हो राज ॥ उग्यो अभिनव भाण, वारी मोरा साहीबा ॥ अजीत० ॥ २ ॥ सारथवाह शीव पंथनो हो राज, भवोदधि तार-णहार ॥ वारी० ॥ केवलज्ञान दिवाकरु होराज ॥ भाव धरम दातार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥३॥ क्षायक भावे भोगवे हो राज, अनंत चतुष्टय सार ॥ वारी० ॥ ध्येयरुपणे हवे ध्यावतां हो राज, ध्यायक थाए निस्तार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ४ ॥ वस्तु स्व-भावने जाणवे हो राज, आतम संपदा इश ॥ वारी० ॥ अष्ट कर-मना नाशथी हो राज, प्रगटे गुण एकत्रीश ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ५ ॥ विजयानंदन एम थुणे हो राज, जीम शत्रु कुल दीनकार ॥ वारी० ॥ कांचन कांति सुंदरुं हो राज, गज लंछन सुखकार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ६ ॥ समेत शिखर सिद्धि वर्या हो राज, सहस पुरुषने साथ ॥ वारी० ॥ उत्तम गुरु कृपा लहेरथी हो राज, रतन थाशे सनाथ ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री संभवनाथनुं स्तवन ॥

॥ अष्टापद गिरि जात्रा करणकू रावण प्रतिहरी आया (अथवा) आधा आम पधारो पुज्य अमधर वहोरण वेला ॥ ए देशी ॥ संभव जीनवर साहेब साचेा, जे छे परम दयाल ॥ करुणानिधि जगमांही मोटो, मोहन गुण मणीमाल ॥ १ ॥ भवियां भाव धरीने लाल, श्रीजीन सेवा कीजे ॥ दुरमति दुर करीने लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ ए आंकणी ॥ एह जगत गुरु जुगते सेवो, खट-काय प्रतिपाल ॥ द्रव्य भाव परिणति करो निरमल, पुजो थई उजमाल ॥ भवि० ॥ २ ॥ केसर चंदन मृगमद भेळी, अरचे जीन-वर अंग ॥ द्रव्य पूजा ते भावनुं कारण,कीजे अनुभव रंग ॥ भवि० ॥ ३ ॥ नाटक करतां रावण पाम्यो, तीर्थंकर पद सार ॥ देवपाल प्रमुख जीनपद ध्यातां, प्रभु पद लहुं श्रीकार ॥ भवि० ॥ ४ ॥ वितराग पुजाथी आतम, परमातम पद पावे ॥ अज अक्षय सुख जीहां शाश्वतां, रुपातित स्वभावे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ अजर अमर अविनाशी कहीये; पुरणानंद जे पाम्या ॥ लोका लोक स्वभाव विभासक, चउगतिनां दुःख वाम्यां ॥ भवि०॥ ६ ॥ एवा जीननुं ध्यान करंतां, लहीए सुख निरवाण ॥ जीन उत्तम पदने अवलंबी, रतन लहे गुण खाण ॥ भवि० ॥ ७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री अजितनंदन स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ शीरोईनो सालु हो कसबी कोर खरी ॥ ए देशी ॥ चोथो जिनपति हो के सेवो चित्त खरे, गुणमणी दरियो हो के परखो शुभ परे ॥ वंछितदाता हो के प्रगटयो सुरतरु, मोहन मुरति हो के रुप मनोहरु ॥ १ ॥ सुरती सारी हो के भविजन चित्त वशी, मुख पंकज सोहे हो के जाणो पुरण शशी ॥ लोचन सुभगां हो के निरुपम जगधणी, भावे वंदो हो के प्रत्यक्ष सुरमणी ॥ २ ॥ जग उपगारी हो के जग गुरु जग त्राता, जस गुण थुणतां हो के उपजे अति शाता ॥ नाम मंत्रथी हो के आपदा सवि खसे, क्रोधादिक अजगर हो के तेहने नवि डसे ॥ ३ ॥ पुरणानंद परमेश्वर हो के ज्ञान दीवाकरु, चउगति चुरण हो के पाप तिमिर हरु ॥ सहज विलासी हो के अठमद शोखतां, निःकारण वच्छलहो के वैराग पोखतां ॥ ४ ॥ निजद्रव्य परमेश्वर हो के स्वसंपद भोगी, परभावना त्यागी हो के अनुभवगुण जोगी ॥ अलेशी अणाहारी हो के खायक गुणभरो, अक्षय अनंता हो के अव्याबाध वरा ॥ ५ ॥ चार निखेपे हो के जे जीन चित धरे, अहलही अवलंबन हो के पंचम गति वरे ॥ जीन उत्तमनी हो के सेवा जे करे, रतन अमुलख हो के पामे शुभ परे ॥ ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सुमतिनाथ स्तवन ॥

॥ मोहनगारा हो राजरुडा, मारा सांभली सुगुणा सुडा ॥ ए देशी ॥ सुमति जिनेसर साहिबोजी, सुमति तणो दातार ॥ चउ-गति मारग चुरतोजी, गुणमणीनो भंडार के ॥ जीनपति जुक्ते लाल जाणी वंदे जे गुणखाणी ॥१॥ ए आंकणी ॥ सहजानंदी साहेबो जी, परम पुरुष गुणधाम ॥ अक्षय सुखनी संपदाजी, प्रगटे जेहने नाम के ॥ जीनपति० ॥ २ ॥ नाथ निरंजन जगधणीजी, नीरागी भगवान ॥ जग बंधव जग वत्सलुजी, कीजे सदंतर ध्यान के ॥ जीन० ॥ ३ ॥ ध्यान सुवनमां ध्यावतांजी, होवे आतम शुद्ध ॥ संवर साधे निर्जराजी, अविरतिनो करे रुध के ॥ जीन० ॥ ४ ॥ ज्ञानादि गुण संपदाजी, प्रगटे झाक झमाल ॥ चिदानंद सुख अनु-भवीजी, लेवे गुण मणी माल के ॥ जीन० ॥ ५ ॥ पंचम जीन सेवता थकांजी, पाप पंक क्षय जाय ॥ द्रव्य भाव भेदे करीजी, कारज सघलां थाय के ॥ जीन० ॥ ६ ॥ मंगलासुत सुहंकरुजी, कुळ मांहे तिलक समान ॥ पंडित उत्तमविजय तणोजी, रतन धरे तुम ध्यान के ॥ जीन० ॥ ७ ॥

॥ श्री पद्मप्रभस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ रामचंद्र के बाग चंपो मोही रह्योरी ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु जीनराज, सुरनर सेव करेरी ॥ पुष्टालंबन देव, समरे दुरित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करेरी ॥१॥ टाले मिथ्या दोष,समकित पोष करेरी ॥ भवि कमल पडिबोह, दुरगति दुर हरेरी ॥ २ ॥ त्रिगडे त्रिभुवन स्वामी, वेसी वरम कहेरी ॥ शांति सुधारस वाण, सुणतां तत्व ग्रहेरी ॥ ३ ॥ क्रोधादिकनो त्याग, समता संग सजोरी ॥ मन आणी स्यादवाद, अव्रती ताम तजोरी ॥ ४ ॥ अनुभव चारित्र ग्यान, जीनआणा शर धरेरी ॥ अक्षय सुखनुं ध्यान, करी भवजलधि तरेरी ॥५॥ रक्त वरण तनु कान्ति,वरणरहित थयेरी ॥ अजर अमर निरुपाधी, लोकांतिक रह्योरी ॥ ६ ॥ निरागी प्रभु सेव, त्रिकरण जेह करेरी ॥ जिन उत्तमनी आण, रतन तेा शिर धरेरी ॥ ७ ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ साहेलडीआंनी देशी ॥ पृथ्वी सुत परमेसरु ॥ साहेलडीआं॥ सातमेा देव सुपास ॥ गुण वेलडीआं ॥ भव भय भावठ भंजणेा ॥ सा० ॥ पुरतेा विश्वनी आश ॥ गु० ॥ १ ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखेा ॥ सा० ॥ काम कुंभ सम ह ॥ जगु० ॥ तेहथी अधिकतर तुं प्रभु ॥ सा० ॥ तेहमां नहीं संदेह ॥ गु० ॥ २ ॥ नाम गेात्र जस सांभले ॥ सा० ॥ महा नीर्जरा थाय ॥ गु० ॥ रसना पावन स्तवन थकी ॥ सा० ॥ भव भवनां दुःख जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ विषय कषाये जे रता ॥ सा० ॥ हरिहरादि देव ॥ गु० ॥ तेह चित्त मांहि नवि धरु ॥ सा० ॥ न करुं तेहनी सेव ॥ गु० ॥४॥ परम पुरुष परमातमा ॥ सा० ॥ परमानंद स्वरुप ॥ गु० ॥ ध्यान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुवनमां धरतां थकां ॥ सा० ॥ प्रगटे सहज स्वरुप ॥ गु० ॥५॥ तृष्णा ताप समावतेा ॥ सा० ॥ शीतलताये चंद ॥ गु० ॥ तेजे दीनमणी झीपतेा ॥ सा० ॥ उपशम रसनेा कंद ॥ गु० ॥ ६ ॥ कंचन कान्ति सुंदरु ॥ सा० ॥ कान्तिरहित कीरपाल ॥ गु० ॥ जीन उत्तम पद सेवतां ॥ सा० ॥ रतन लहे गुण माल ॥गु०॥७॥

॥ श्री चंद्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

॥तुमे बहु मीत्रीरे साहिबा (अथवा) कर्मन छुटेरे माणीआ ॥ ए देशी ॥ श्री चंद्रप्रभु जीन साहेबा, शरणागत प्रतिपाल ॥ दरशन दुरलभ तुम तणु, मोहन गुण मणीमाल ॥ श्रीचंद्र प्रभु जीन साहेबा ॥ १ ॥ साचेा देव दयाळवेा, सहजानंदीनुं धाम ॥ नामे नव निध संपजे, सीझे वांछित काम ॥ श्री० ॥ २ ॥ ध्येय पणेरे ध्यायता, ध्याता ध्यान परमाण ॥ कारणे कारज नीपजे, एहवी आगम वाण ॥श्री०॥३॥ परमातम परमेसरु, पुरसेातम परधान ॥ सेवक सुणीए विनति, कीजे आप समान ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रद्धा आसन रमणता, आणी अनुभव अंग ॥ निरागीशुंरे नेहलेा, होये अचल अभंग ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चंद्रप्रभु जीन चित्तथी, मुकुं नहीं जीनराज ॥ मुज तनु घर मांहे खेंचीओ, भक्ते मं सात राज ॥श्री० ॥ ६ ॥ गुण निधि गरिब निवाज छेा, करुणा निधि कीरपाल ॥ जसविजय कवि राजनेा, रतन लहे गुणमाल ॥ श्री० ॥ ७ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सुविधिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए राग ॥ सुविधि जीनेसर साहेब सांभलो, तुमे छो चतुर सुजाणोजी ॥ साहेब सममुख नजरे जोयतां, वाधे सेवक वानोजी ॥ सुविधि० ॥ १ ॥ भव मंडपमां रे भमतां जगगुरु, काल अनादि अनंतोजी ॥ जनम मरणनां ते दुःख आकरां, हजीअ न आव्यो अंतोजी ॥ सुविधि० ॥ २ ॥ छेदन भेदन वेदन आकरो, गुणविधि नरक मझारोजी ॥ खेत्र कुंभी वैतरणी वेदना, कथतां नावे पारोजी ॥ सुविधि० ॥३॥ विवेक रहित विकलपणे करी, न लह्यो तत्व विचारोजी ॥ गति तिर्यंचमां रे परवश पणे करी, सह्यां दुःख अपारोजी ॥ सुविधि० ॥ ४ ॥ विषया संगे रे रंगे राचीओ, बंधाणो मोह पासोजी ॥ अमरी संगे सुरभव हारीओ, कीधा दुरगति वासोजी ॥ सुविधि० ॥ ५ ॥ पुन्य महोदय जगगुरु पामीओ, उत्तम नर अवतारोजी ॥ आरज खेत्रे रे सामग्री वरमनी,सदगुरु संगति सारोजी ॥ सुविधि० ॥ ६ ॥ ग्याना नंदेरे पुरण पावतो, तीरथपति जीनराजोजी ॥ मुष्टालंबन करतां जगगुरु, सीध्यां सेवकाजोजी ॥ सुविधि० ॥ ७ ॥ नाम जपंतां रे सवि संपत्ति मले, स्तवतां कारज सीधोजी ॥ जीन उत्तम पद पंकज सेवतां, रतन लहे नव निधोजी ॥ सुविधि० ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री शीतलनाथनुं स्तवन ॥

॥ देशी ललनानी ॥ ए देशी ॥ शीतल जीनपति सेवीए, दशमो देव दयाल ललना ॥ शितल नाम छे जेहनुं,शरणागत प्रतिपाल ललना ॥ शीतल० ॥ १ ॥ बाह्य अभ्यंतर शीतलुं, पावन पुरणानंद ललना ॥ प्रगट पंच कल्याणके, सेवे सुरनर वृंद ललना ॥ शीतल० ॥ २ ॥ वाणी सुधारस जलनिधि, वरसे ज्युं जलधार ललना ॥ त्रिगडे चउमुख देशना, करवा भवि उपगार ललना ॥ शीतल०॥३॥ मिथ्या तिमिर उच्छेदवा, तीव्र तरणी समान ललना समकित पोष करे सदा,आपे वांछित दान ललना ॥ शीतल०॥४॥ अघमोचन अलवेसरु, मुज मन सरोवर हंस ललना ॥ अविलंबन भव स्तवने, देव मानुं अवतंस ललना ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ अष्टादश दोषे करी, रहित थयो जगदीश ललना ॥ जोगीश्वर पण जेहनां, ध्यान धरे निशदीश ललना ॥ शीतल० ॥ ६ ॥ ध्यान भुवनमां ध्याइए, तो होए कारज सिद्ध ललना ॥ अनुभवे आतम संपदा, प्रगटे आतम ऋद्ध ललना ॥ शी० ॥ ७ ॥ कोड गमे सेवा जेहनी, देव करे करजोड ललना ॥ ते निर्जरानुं फल लहे, कुण करे जेहनी होड ललना ॥ शीतल० ॥ ८ ॥ जीन उत्तम अवलंबने, पग पग ऋद्धि रसाळ ललना ॥ रतन अमुलख ते लहे, पामे मंगळ माळ ललना ॥ शीतल० ॥ ९ ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथनुं स्तवन ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस जीणं-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दनी, मुरती सुंदर देख लालरे ॥ रुप अनुत्तर सुरथकी, अधिक गुणो ते पेख लालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगना अंके धरे नही, हाथे नही करवाल लालरे ॥ विकारे वःजीत जेहने,मुद्रा अतिही रसाळ लालरे ॥ श्री० ॥२ ॥ वाणी सुधारस सारखी. देशना दाए जलधार लालरे ॥ भवदव ताप समावकुं, त्रिभुवन जन आधार लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मिथ्या तिमिर विनाश तेा, करतेा समकित पोष लालरे ॥ ज्ञान दोवाकर दीपतेा, वरजीत सघला दोष लालरे श्री० ॥ ४ ॥ परमातम प्रभु समरतां,लहीए पद निरवाण लालरे ॥ पामे द्रव्य भाव संपदा, एवी आगम वाण लालरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जैनामगथी जाणीयुं,विगती जग गुरुदेव लालरे ॥ कीरपा करी मुज दीजीए, मागु तुम पद सेव लालरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तुम दरशनथी पामीउं, गुणनिधि आनंदपुर लालरे ॥ आज महोदय में लह्यो,दुःख गयां सवि दुर लालरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विष्णुनंदन गुण नीलो, विष्णु मात मल्हार लालरे ॥ अंके खड्गी दीपतुं,गुणमणीनो भंडार लालरे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ समेतशिखरे सिद्धि वर्या, पाम्या भवोदधि पार लालरे ॥ जिन उत्तम पद पंकजे, रतन मधुप ॐकार लालरे ॥ श्री० ॥ ९ ॥

॥ श्री वासुपूज्यस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारो पेउ ब्रह्मचारी ने राजुलनारी (अथवा) एम कोइ सिद्धिवर्या मुनीराया ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य जिन अंतरजामी, हुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अणसुं शिरनामी रे ॥ मारा अंतरजामी ॥ त्रिकरण जोगे ध्यान तुमारुं, करतां भव भय वारु रे ॥ मारा० ॥ १ ॥ चोत्रीस अतिशय शोभा कारी, तुमची जाउं बलिहारी रे ॥ मारा० ॥ ध्यान विचाणे शक्ति प्रमाणे, सुरपति गुण वखाणे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ देशना देतां तखत विराजे, जलधरनी पेरे गाजेरे ॥ मा० वाणी सुधारस गुणमणी खाणी, भाव धरी सुणे प्राणीरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुविध धरम दयानिधि भाखे, हेतु जुगते प्रकाशे रे ॥ मा० ॥ भेदरहित निरखीने मुजने, तो जग वधशे कीर्त्ति तुजने रे ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ मुद्रा सुंदर दीपे तहारी, रुप मोह्या अमर नरनारी रे ॥ मा० ॥ साहेब समतारसनो दरिओ मार्दव गुण जे भरीओ रे॥ ॥ मारा० ॥ ५ ॥ सहजानंदी साहेब साचो, जीम होये हीरो साचो रे ॥ मारा० ॥ परमातम प्रभुजो ध्याने ध्यावो, तो अक्षय लीला पावो रे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ रक्तवरण दीपे तनु कांन्ति, जोवां होय भव शांतिरे ॥ मारा० ॥ उत्तमविजय विबुधनो शीश, कहे रत्नविजय सुजगीश रे ॥ मारा अंतरजामी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथनुं स्तवन ॥

॥झुमखडुं झुमी रह्युं रे॥ (अथवा) यात्रा नवाणुं करीए सलुणा॥ ॥ ए देशी ॥ विमल जिनेसर सुंदरु रे, निरुपम छे तुम नाम ॥ जीनेसर सांभरे ॥ पुरणानंद परमेसरु, आतम संपदा स्वामी ॥ ॥ जीणेसर० ॥ १ ॥ निरागीशुं नेहलो, मुज मन करवा भाव ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ जी० ॥ निःकारण जगवच्छलु, भवोदधि तारण नाव ॥ जी० ॥ ॥ २ ॥ सारथवाह शीवपंथना, भाव धरम दातार ॥ जी० ॥ ग्यानानंदे पुरणो, त्रिभुवन जन आधार ॥ जी० ॥ ३ ॥ अष्ट करम हेलां हणी, पाम्या शीवपुर वास ॥ जी० । क्षायक भावे गुणवरा, हुं समरुं नित्य तास ॥ जी० ॥ ४ ॥ गुण गाता गिरुआ तणा, जीहवा पावन थाय ॥ जी० ॥ नाम गोत्र जस सांभले, भव भवनां दुःख जाय ॥ जी० ॥ ५ ॥ मन मोहन मारा नाथशुं, अवर न आवे दाय ॥ जी० । पामी सुरतरु परवडो, कोण करीरे जाय ॥ जी० ॥ ६ ॥ सहजानंदी साहेबो वरजीत सकल उपाधि ॥ जी० ॥ जीन उत्तम अवलंबने, रतन लहे निजसाध ॥ जी० ॥ ७ ॥

॥ श्री अनंतनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ अनंत जीणेसर साहिब माहरो रे, पुरण पाम्यो दरशन ताहरो रे ॥ प्रभु सेवा मुज लागे प्यारी रे, तुमचा गुणनी जाउं बलिहारी रे ॥१ ॥ केवल ज्ञाने जगतने जाणे रे, लोकालोकना भाव वखाणे रे ॥ सम्यक ज्ञान ते भव दुःख कापे रे, ज्ञानविण क्रिया फल नवी आपे रे ॥ २ ॥ सामान्ये वस्तु पदारथ जेह रे, एक समयमां देखे, तेह रे ॥ केवल दरीशण विगते जाणो रे, जैनागमथी चित्तमां आणो रे ॥ ३ ॥ निरुपाधिक निज गुण छे जेहरे, निजस्वभावमां स्थिरता तेहरे ॥ क्षायक चारित्र ते जग सार रे, जे आवे भवो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दधि पार रे ॥ ४ ॥ विलसे अनंत वीरज उदार रे, ए भारूयाँ अनंता चार रे ॥ ए गुणना प्रभु तुम छो भोगी रे, गुणठाणातीत थया अजोगी रे ॥ ५ ॥ त्रिकरण जोगे ध्यान तुमारुं रे, करता सारुं काज अमारु रे ॥ पुष्टालंबन देव तुं मारो रे, हुं छुं सेवक भवोभव तारो रे ॥ ६ ॥ सिंहसेन नृपवंश सुहायो रे, सुजसा राणी तुजने जायो रे ॥ उत्तम विजय बिबुधनो शिष्य रे, रतन-विजयनो पुरो जगीश रे ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथनुं स्तवन ॥

॥ कपुर होये अति उजळो रे ॥ ए देशी ॥ धरम जिणेसर ध्याइएरे, आणी अधिक सनेह ॥ गुण गातां गिरुआ तणा रे, वाधे बमणो नेह ॥ १ ॥ जीणेसर पुरो अमारी आश ॥ जीम थाशुं शीवपुर वास ॥ जी० ॥ ए आंकणी ॥ काल अनादि निगो-दमां रे, भम्यो अनंतीवार ॥ करम नटवीये रोळव्यो रे, सेवतां पाप अढार ॥ जीणे० ॥ २ ॥ प्राणातिपात मृषा घणुं रे, त्रीजुं अदत्तादान ॥ विषया रसमां माचीओ रे, गुणनिधि कीधुं दुर ध्यान ॥ जी० ॥ ३ ॥ नवविध परिग्रह मेळियो रे, कीधो क्रोध अपार ॥ मान माया लोभे करोरे, न लह्यो तत्व विचार ॥ जी० ॥ ४ ॥ रागद्वेष कलहे करी रे, दीधां परने आळ॥ मैथुन रति अरति वळी रे, जे सेवे दुःख असराल ॥ जी० ॥५॥ दोखवी दीआ गुणवंतनेरे रे, कीधा माया मोष ॥ मिथ्या शल्य होषे करी रे, कीधा अविरती पोष जो० ॥ ६ ॥ पापस्थान सेवे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवडो रे, रुळीओ चौगति मोझार ॥ जनम मरणादि वेदनारे, सही ते अनंत अपार ॥ जी० ॥ ७ ॥ एवी विटंबन वेदनारे, टाळो श्री जिनराज ॥ बांहे ग्रहीने तारीए रे. सारो सेवक काज ॥ जी० ॥ ८ ॥ धरम जिनेश्वर स्तवतां थकां रे, पोहोती मननी आश ॥ जीन उत्तम पद सेवतां रे, रतन लहे शीववास ॥ ॥ जी० ९ ॥

॥ श्री शांतिनाथनुं स्तवन ॥

॥ ढंढण ऋषिने वंदणा हुं वारी ॥ ए देशी ॥ अचिरानंदन वंदीए हुं वारी ॥ गुणनिधि शांति जीणंद रे हुं वारी लाल ॥ अभयदान गुण आगरु हुं वारी, उपशम रसनो कंदरे हुं वारी लाल ॥ अचिरा० ॥ १ ॥ मारी मरकी अति वेदना हुं वारी, पसरी सघळे देशरे ॥ हुं वारी लाल ॥ दुखदायक अति आकरां हुं वारी, पामे ते लोक कलेश रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ २ पुण्यानुबंधी पुण्यथी हुं वारी, उपन्या गरभ मझार रे ॥ हुं० शांति मह्रथि जन पदे हुं वारी, हुआ जयजयकार रे ॥ हुं० ॥ अचिरा० ॥३॥ दोय पदवी एके भवे हुं वारी, षोडशमो जगदीशरे ॥ हुं०॥ पंचम चक्री गुणनिलो हुं वारी, मह उठी नामुं शीशरे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ दीक्षा ग्रहे दीन ते थकी हुं वारी, चउनाणी भगवानरे॥ ॥ हुं० ॥ घनघाति करमना नाशथी हुं वारी, पाम्या पंचम ज्ञान रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ५ ॥ तीरथपति विचरे जीहां हुं वारी, त्रिगडुं रचे सुर रायरे ॥ हुं० ॥ समवसरणे दीए देशना हुं वारी, सुणतां भव दुःख जाय रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ६ ॥ पणवीशसते आगळां हुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारी, जेायण लगे ते जाणरे हु वारी लाल ॥ स्वचक्र परचक्रनां हुं वारी* ॥ अ० ॥ ७ ॥ जीव घणा तीहां उधरी हुं वारी. शीव-पुर सनमुख कीध रे ॥ हुं० ॥ अक्षय सुख जोहां शाश्वतां हुवारी, अविचल पदवी दीध रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सहस मुनि साथे वर्यां हुं वारी, समेतशिखर गिरि सिधरे ॥ हुं० ॥ उत्तम गुरुपद सेवतां हुं वारी, रतन लहे नव नीधरे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ श्री कुंथुंनाथनुं स्तवन ॥

॥ कत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥ कुंथुं जिणेसर साहेबेा, सदगतिने दातार मेरे लाल ॥ आराधेा कामित पुरणो, त्रिभुवने जन आधार मेरे लाळ ॥ सुगुण सनेही साहेबेा ॥ १ ॥ दुरगति पडतां जंतुने, उद्धरवा दीए हाथ ॥ मेरे० ॥ भवेादधि पार उता-रवा, गुणनिधि तुं समरथ ॥ मेरे० ॥ सुगुण० ॥ २॥ भव त्रीजेथी बांधियुं, तीर्थंकर पद सार ॥ मेरे० ॥ भव सर्वनी करुणाये करी, वली थानक तपथी उदार ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ३ ॥ उपकारी अरि-हंतजी, महिमाव्रत महंत ॥मेरे०॥ निःकारण जग वच्छलु, गीरुओ ने गुणवंत ॥मेरे०॥ सु० ॥४॥ ग्यानानंदे पुरणो, भाखे धर्म उदार ॥मेरे०॥ स्यादवाद सुधारसे, वरसे ज्यु जळधार ॥मेरे०॥सु०॥५॥ अतिशय गुण उदये थकी, वाणीनो विस्तार ॥ मेरे०॥ उत्तमविजय विबुधनेा शीश,कहे रतनविजय सुजगीशरे ॥मारा अंतरजामी। बारे परखदा सांभळे, जोयण लगे ते सार ॥ मेरे० ॥ सु०॥६॥ सा-रथवाह शीवपंथनो, आतम संपदा इश ॥ मेरे० ॥ ध्यान भुवनमां

* सातमी गाथामां एक चरण त्रुटे छे. ते कोइ पासे होयतो अमने लखी मोकलशो अने पुस्तकमां सुधारी वांचजो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यायतां, लहीए अतिशे जगीश ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ छट्ठा चक्री दुःख हरे, सत्तरमो जीनदेव ॥ मेरे० ॥ मोटे पुन्ये पामीओ, तुम पद पंकज सेव ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ८ ॥ परम पुरुषनो चाकरी, करवी मनने कोड ॥ मेरे०॥ उत्तम विजय विबुध तणो, रतन नमे करजोड ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ९ ॥

॥ श्री अरनाथनुं स्तवन ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ अर जीनवर दीए देशना, सांभलजो भवि प्राणी रे ॥ मीठा सुधारस सारखी, सुणीए अनुभव आणी रे ॥ अर० ॥ १ ॥ आळस मोह अज्ञानता, विषय प्रमादने छंडी रे ॥ तनमय त्रिकरण जोगशुं, धरम सुणो चित्त मंडीरे ॥ अ० ॥२॥ दश दृष्टांते दोहिलो, नरभवनो अवतार रे ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखो, तेहथी अधिक ते जाणो रे अ० ॥ ३ ॥ ए संसार असारमां, जनम्यो चेतन एह रे ॥ धरमे वरजीत दीन गया, हजीय न आव्यो छेह रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दरशन मयी आतमा, कर्म पंके अवराणो रे ॥ शुद्ध दिशा निज हारोने, दोषे ते भराणो रे॥ अ० ॥ ५ ॥ दोष अनादि उधरे, जेनागम जग सारो रे ॥ सकल नये जे आदरे, तो होय भवोदधि पारो रे॥अ०॥ ॥ ६ ॥ जीन आणाए आराधतां, विघे थई उजमाल रे ॥ संवर साथे निर्जरा, नित्य पामे मंगलमाल रे ॥ अ० ॥७॥ चक्री थू ते सातमो, अढारमो जीनराय रे ॥ उत्तम विजय कविराजनो, रतन विजय गुण गाय रे ॥ अ० ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री मल्लीनाथनुं स्तवन ॥

॥ देशी ॥ जगपतिनो ॥ जगपति साहेब मल्लि जिणंद, महिमा महिअल गुणनीलो ॥ जगपति दिनकर ज्युं उद्योत, कारक वंशे कुल तिलो ॥१॥ जगपति प्रबल पुन्य पसाय, उद्योत नरके विस्तरे ॥ जगपति अंतर महुरत नाम, शातावेदनी ते करे ॥२॥ जगपति सुधारस वृष्टिसाय, तुजमुख चंद्र थको झरे ॥ जगपति पडिबोहे भवियण स्वाम, मिथ्या तिमिर दुरे करे ॥३॥ जगपति जगमां झाझ समान, उपगारी शीर सेहरो ॥ जगपति तुम दरसनथी आज, काज सर्यो हवे माहरो ॥४॥ जगपति दीठे तुम मुखकज, दुरित नाठा त्रण माहरे ॥ जगपति दलिद्रपणुं ने दुर्भाग्य पुष्टालंबन प्रभु ताहरे ॥ ५ ॥ जगपति भवोभव संचित जेह, अध नाठां टली आपदा ॥ जगपति जाचुं नहीं कोशो दाम, मागुं तुम पद संपदा ॥ ६ ॥ जगपति थुणीओ धरी मन नेह, ओगणीशमेा जीन सुख करु ॥ जगपति नील वरण तनु कान्ति, दीपती रुप मनोहरु ॥ ७ ॥ जगपति जीन उत्तम पद सेव, करतां सवि संपद मले ॥ जगपति रतन नमे करजोड, भावे भवोदधि भय टले ॥८॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ वीर जीणंद जगत उपगारी ॥ ए देशी ॥ मुनिसुव्रत जीन अधिक दिवाजे, महीमा महियल छाजेजी ॥ त्रिजग वंदित त्रीभुवन स्वामी,गिरुओ गुणनिधि गाजेजी ॥ मुनि०॥१॥ वड वखत वर अतिशय धारी, कल्पातित आचारजी ॥ चरण करणभुत म-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाव्रत धारी, तुमची जाउं बलिहारीजी ॥ मु० ॥ २ ॥ जग जन रंजन भवदुःख भंजन, निरुपाधिक गुण भोगीजी ॥ अलख निरंजन देव दयाळु, आतम अनुभव जोगीजी ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी क्षयथी प्रगटयुं, अनोपम केवल नाणजी ॥ लोकालोक प्रकाशक स्वामी, उग्यो अभिनव भाणजी ॥ मु० ॥ ४ ॥ वरसी वसुधा पावन कीधी, देशना सुधारस सारजी ॥ भविक कमल प्रतिबोध करीने, कीधा बहु उपकारजी ॥ मु० ॥ ५ ॥ संपुरण तें सिद्धता साधी, वीरमी सकल उपाधिजी ॥ निरुपाधिक ते निजगुण वरीया, अनोपम अव्याबाधजी ॥ मु० ॥ ६ ॥ हरिवंशे विभुषण दीपे, अरिष्ट रतन तनु कान्तिजी ॥ सुख सागर प्रमुदास वंदित, जेतां होये भव शांतिजी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ सभेत शिखरे सिद्धि वरीया, सहस पुरुषने साथजी ॥ जीन उत्तम पदने अवलंबी, रतन थाय सनाथजी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

॥ श्री नमिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ थापर वारी मोरा साहिबा, काबुल मत जाजो ॥ (अथवा) सोना रुपाके सोगटे सैया खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥ निरुपम नमी जोणेसरु, अक्षय सुखदाता ॥ अतिशय गुण अधिकथी, स्वामी जग विख्याता ॥ निरुपम०॥१॥ बार गुणे अरिहंत थकी, उंचो वृक्ष अशोक ॥ भव दव पीडित जंतुने, जाय जेतां शोक ॥ निरु० ॥२॥ पीत वरण सिंहासने, प्रभु बेठा छाजे ॥ दिव्यध्वनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीये देशना, नादे अंबर गाजे ॥ निरु० ॥ ३ ॥ छत्र धरे त्रण सुरवरा, चामर वींजाय ॥ भामंडल अति दोपतुं, पुंठे जोनराय ॥ निरु० ॥ ४ ॥ जोजन माने सुर करे, वृष्टि कुसुम केरी ॥ गयणे गाजे दुंदुंभी, करे प्रदक्षण फेरी ॥ निरु० ॥ ५ ॥ अष्ट महा पाडिहारे करी, दीपे श्री जगदीश ॥ अष्ट करम हेलां हणी, पाम्या सिद्धि जगीश ॥ निरु० ॥ ६ ॥ नामे नवनिधि संपजे, सेवतां भव दुःख जाय ॥ उत्तम विजय विबुध तणो, रत्न विजय गुणगाय ॥ ॥ निरु० ॥ ७ ॥

॥ श्री नेमनाथनुं स्तवन ॥

॥ हांरे हुंतो भरवा गइती नदी जमनानुं नीरजो ॥ ए देशी ॥ हांरे मारे नेमि जोणेसर अलवेसर आधारजो ॥ साहिबरे सोभागी गुणमणी आगरु रे लो ॥ हां० परम पुरुष परमातम देव पवित्रजी, आज महोदय दरीसण पामे ताहरुं रे लो ॥ १ ॥ हां० तोरण आवी पशु छोडावी नाथजो, रथ फेरीने वळीआ नायक नेमजी रे लो ॥ हां० दैव अटारे ए शुं कीधुं आजजो, रढीआळी वर राजुल छोडी नेमजी रे लो ॥ २ ॥ हां० संजोगो भाव विजोगी जाणी स्वामी जो, ए संसारे भमतां को केहनुं नहो रे लो ॥ हां० लोकांतिक वाणी अवधि जाणी मानजो, वरसीदान दीए तीहां प्रभु सही रे लो ॥ ३ ॥ हां० सहसावनमां सहस पुरुषने साथजो, भव वली दुखे छेदण चारित्र आदरे रे लो ॥ हां०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तु तत्वे रमण करता सारजो, चेापनमे दिन अनोपम प्रभु केवल वरे रे लो ॥ ४ ॥ हां० लोकालोक प्रकाशक त्रिभुवन भाणजो, त्रिगडे बेसी धरम कहे तीहां जीनवरु रे लो ॥ हां० शीवानंदन वरसे सुधारस वाणीजो, आस्वादे भविय चकोर अति सुंदरुं रे लो ॥ ५ ॥ हां० देशना सांभळी बुजी राजुल नारीजो, निज स्वामीने हाथे संजम आदरे रे लो ॥ हां० अष्ट भवनी पाली पुरण प्रीतजो, पिउ पेहेलां शीव रमणी राजुल ते वरी रे लो ॥ ६ ॥ हां० विचरी वसुधा पावन कीधी नाथजो, जग उपगारी साहेब ते देव गुणनिधि रे लो ॥ हां० जीन उत्तम पद पंकज अनोपम सेवजो, करतां रतनविजयनी कीरति अति वधी रे लो ॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

॥ केाइलेा परवत धुंधलेारे लो ॥ ए देशी॥ त्रिभुवन नायक वंदोये रे लेा, पुरुषादाणी पासरे जोणेसर ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखेा रे लेा, पुरतो विश्वनी आशरे जीणेसर ॥ जयेा जयेा पास जीणेसरु रे लेा ॥१॥ पुष्टालंबन भविकने रे लेा, महिमा निधि आवासरे जीणेसर ॥ वासव पुजित वंदोए रे लेा, आणी भाव उल्लासरे जीणेसर ॥ जयेा० ॥२॥ श्री जीन दरीसण ते विना रे लेा, भमीयेा काल अपार रे जीणेसर ॥ आतम धरम न ओळखयेा रे लेा, न लह्यो तत्व विचार रे जोणेसर ॥ जयेा० ॥ ३ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रवचन अंजन जे करे रे लो, पामी सदगुरु संगरे जीणेसर ॥श्रद्धा भासन उजले रे लो, तो लहीए धरम प्रसंग रे जीणेसर ॥ जयो० ॥ ४ ॥ साधन भावे भविकने रे लो, सिद्धने क्षायक होय रे जीणेसर ॥ प्रगटयो धरम ते आपणो रे लो, अचल उभंग ते जोये रे जीणेसर ॥ जयो० ॥५॥ तुज चरणा मुज भेटतां रे लो, भावे करी जीनराज रे जीणेसर ॥ नेत्र जुगल जोन निरखतां रे लो, सीध्यां वंछित काज रे जीणेसर ॥ जयो० ॥ ६ ॥ नील वरण नव कर भलुं रे लो, दीपे तनु सुकुमाल रे जीणेसर ॥ जीन उत्तम पद सेवतां रे लो, रतन लहे गुण माल रे जीणेसर ॥ जयो जयो पास जीणेसरु रे लो ॥ ७ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन.

॥ हने गोकुळ बोलावे कान गोविंद गोरो रे ॥ ए देशी ॥ चोवीसमो श्री महावीर,साहीब साचो रे ॥ रत्नत्रयीनुं पात्र, हीरो जाचो रे ॥१॥ आठ करमनो भार, कीधो पुरो रे ॥ शीव वधुते नारी थइ हजुरो रे ॥२॥ तुमे सार्यां आतम काज, दुःख निवार्यां रे॥पोहोता अविचल ठाम, जिहां नहीं फेरा रे ॥३॥ जोहां नही जनमने मरण, थया अविनाशी रे ॥ आतम सत्ता जेह, तेह प्रकाशी रे ॥४॥थया निरंजन नाथ, मोहने चुरी रे ॥ छोडी भव भयकुप, गति निवारी रे ॥ ५ ॥ अतुली बल अरिहंत, क्रोधने छेदो रे ॥ फरशी गुणना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठाण, थया अवेदी रे ॥ ६ ॥ एवा प्रभुजीनुं ध्यान, भवियण धरीए रे ॥ करीए आतम काज, सिद्धि वरीए रे ॥ ७ ॥ सेवो थइ सावधान, आलस मोडी रे ॥ निद्रा विकथा दुर, माया छोडीरे ॥ ॥ ८ ॥ मृगपति लंछन पाय, सोवन काया रे ॥ सिद्धारथ कुल तिलक समान, त्रिसलाये जायारे ॥ ९ ॥ सत्तरो दो वरस आय, पुरण पाली रे ॥ उद्धरीया जीव अनेक, मिथ्या टाली रे ॥१०॥ जीन उत्तम पद सेव, करतां सारी रे ॥ रतन लहे गुणमाल, अति मनोहारी रे ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥ वीर जीणंद जगत उपगारी ।ए देशी॥ चोवीश जीणेशर भुवन दीनेसर, निरूपम जग उपगारीजो ॥ महिमा निधि मोटा तुम महियल, तुमची जाउ बलिहारीजो ॥ १ ॥ जनम कल्याणक वासव आवी, मेरु शिखरे नवरावेजी ॥ मानुं अक्षय सुख लेवाने सुर, आदे जीन गुण गायाजी ॥ २ ॥ ग्रहवास छंडो समणा जाया, संजमथुं मन भायाजी ॥ गुणमणी आगर ज्ञान दीवाकर, समोवसरण सुहायाजी ॥ ३ ॥ दुविध धरम दया निधि भाखे, निःकारण ग्रहे हाथेजो ॥ वाणी सुधारस वरसी वसुधा, भावन कीधी नाथेजो ॥ ४ ॥ चोत्रीस अतिशय शोभाकारी, वाणी गुण पांत्रीसजो ॥ अष्ट करम मल दुर करीने, पाम्या सिद्ध अगीसजी ॥ ५ ॥ चोवीस जीननुं ध्यान धरंतां, लहीए गुण मणी खाणीजो ॥ अनुक्रमे ते महोदय पदवी, पामे पद निरवाणजी ॥ ॥ ६ ॥ तप गच्छ अंबर उदयो भानु, तेजे प्रतापी छाजेजी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजय देव सुरीश्वर राया, जश महिमा महियल गाजेजी ॥ ॥७॥ तास पाट प्रभावक सुंदर, विजयसिंह सुरीशजी ॥ वडभागी वैरागी त्यागी, सत्यविजय मुनीशजी ॥ ८ ॥ तसपद पंकज मधुकर सरीखा, कपुरविजय मुणिंदाजी ॥ खिमाविजय तस आसन शोभित, जिनविजय गुरुगुण चंदाजी ॥ ९ ॥ गीतारथ सारथ सुगुण शोभागी, लक्षण लक्षित देहाजी ॥ उत्तम विजय गुरु जग जयवंता, जेहने प्रवचन नेहाजी ॥ १० ॥ ते गुरुनी बहु मेहेर नजरथी, पामी तास पसायेजी ॥ रतनविजय शिष्य अति उछरंगे, जीन चोवीस गुण गायाजी ॥ ११ ॥ सूर्यमंडण पास पसाया, धरमनाथ सुखदायाजी ॥ विजय धरम सुरीश्वर राज्ये, श्रद्धा बोध वधायाजी ॥ १२ ॥ अढारसें चोवीसा वरसे, सुरत रही चोमासुंजी ॥ माधव मासे कृष्ण पक्षे, त्रयोदशी दीन खासजी ॥ १३ ॥ इति चोवीसी संपूर्ण ॥

॥ श्री मंधर जिन स्तवन ॥

॥ प्राण पीयारा पास जिनेसर रायरे जिनवरजी (अथवा) तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंथरे प्रीतमजी-ए देशी

॥ विजया विराजे पुखल वइ जिनराय रे ॥ जिनवरजी ॥ पुंडरगणी पुर दीठां आवे दाय ॥ मोरा जिनवरजी ॥ मन विसरामी श्री श्रेयांस कुमार रे ॥जिनवरजी॥ सत्यकी नंदन रुकमणीनो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरतार ॥ मोरा जिन० ॥ १ ॥ वदन विलोकी सफल करे अव-तार रे ॥ जिन० ॥ धन ते नगरी धन ते नरने नार ॥ मो० ॥ दुर निवारो दुखदाइ संसार रे ॥ जि० ॥ तो हुं तुमारो विसरु नही उपगार ॥ मो० ॥ २ ॥ नरपति धनपति सुरपति गोता खात रे ॥ जि० ॥ तो किणनें कहुं अंतरगतनी वात ॥ मो० ॥ तरसु निरंतर देखण तुझ दीदार रे ॥ जि० ॥ सांसमे समरु साहिबने सोवार ॥ मो० ॥ ३ ॥ मुजरो माहरो मनमोहन अव-धार रे ॥ जि० ॥ जिम तिम करीने भवजल पार उतार ॥ मो० ॥ साचो लागो चोल मजीठ ज्युं रंग रे ॥ जि० ॥ अंग न लागे ओछा रंग पतंग ॥ मो० ॥ ४ ॥ मन हरी म्हारो मोहाकुल दिन रात रे ॥ जि० ॥ कहुं किण विध विषयेनो अंत न आत ॥ मो० ॥ कांमी क्रोधो कपटी छुं जगनाथ रे ॥ जि० ॥ रहणो हमारी लाज तीहांरे हाथ ॥ मो० ॥ ५ ॥ जीवन वाहाला विरुद विचारो जोय रे ॥ जि० ॥ अधम उधारो तो प्रभु साची होय ॥ मो० ॥ अरजो लीज्यो अनुचररी मन मांहे रे ॥ जि० ॥ भव भव जिनमत होज्यो अवर न चाहे ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री सिमंधर साहिब वसीया दुर रे ॥ जि० ॥ जबही समरुं तबही आनंदपुर ॥ मो० ॥ मुजरो म्हारो मानो उगते सूर रे ॥ जि० ॥ रत्नमुनी हियै वसज्यो नाथ हजुर ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सीमंधर जीन स्तवन बीजुं.

॥ देखो गती दैवनी रे-ए देशी. ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, जगदिश्वर जगनाथ ॥ जगत तात तुझ उलगु रे, तरवा भव जग पाथ ॥ जिनेश्वर सांभलो रे, कीजे सेवक सार अंतर होय निरमलो रे ॥ ए आंकणी ॥ कर्म वसे जग हुं भम्यो रे, ते तो कह्युं नवि जाय ॥ अव तुम्ह चरण सेवा मिली रे, पुरण पुन्य पसाय ॥ जिनेश्वर० ॥ २ ॥ पण क्रोधादिक वृश्चिका रे, मन मंकड डंक दाय ॥ उन्मतने विष व्यापीयु रे, तेणे न रहे मन ठाय ॥ जिने० ॥ ३ ॥ वयरी जगमांही एवडा रे, विषम फल दातार ॥ तेहने सेहजे ते जीतीया रे, जन मन अचरीज कार ॥ जिने० ॥ ४ ॥ लोके प्रसिद्ध छे वातडी रे, वयरी क्रोधे पलाय ॥ क्रोध विना ते ताडीया रे, वयरी भागा जाय ॥ जिने० ॥ ५ ॥ मांन विहुणा जग सहु रे, आवी नमे तुझ लोक ॥ माया विण माया करे रे, भविजन थोका थोक ॥ जिने० ॥ ६ ॥ लोभ विना लछि मिली रे, इम अनेक विचार ॥ जोतां मुझ मन गह गहे रे, अचरिज ठारोठार ॥ जिने० ॥ ७ ॥ श्रेयांस सत्यकी जयो रे, पुखलवइ मझार ॥ पुंडर गणी रुखमणीनो रे, स्वामी जगनो आधार ॥ ॥ जिने० ॥ ८ ॥ रिषभांतिक पा कोसनुं रे, देह सुवर्ण तुझ आय ॥ पुरव चोराशी लखतणु रे, कहे केसर सुखकार ॥ जिने० ॥९॥इति॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तवन त्रीजुं ॥

॥ साहिब सांभळो रे, संभव अरज हमारी–ए देशी ॥

॥ श्री सीमंधरु रे, मारा प्राण तणा आधार ॥ जिनवर जय करु रे, जेहना ज्ञाझा छे उपगार ॥ क्षण क्षण सांभरे रे, एक श्वास मांहि सोवार ॥ किमही न विसरे रे, जे वसीया छे हृदय मोझार ॥ श्री सीमंध० ॥ १ ॥ हुंसी हियडले रे, जिम होय मुक्ता फलनो हार ॥ ते तो जाणीये रे, ए सवि बाहिरनो शणगार ॥ प्रभु तो अभ्यंतरे रे, अलगा न रहे लगार ॥ अहनिश वंदणा रे, करीये छीये ते अवधार ॥ श्री सी० ॥ २ ॥ नयन मेलावडो रे, निरखी सेवकने संभाळ ॥ तो हुं लेखवुं रे, म्हारो सफळ सफळ अवतार ॥ नहि कोइ तेहवो रे, विद्या लब्धिनो उपाय ॥ आवीने मळुं रे, चरण ग्रहुं हुं वळी धाय ॥ श्री सी० ॥ ३ ॥ मळवुं दोहिलुं रे, तेहशुं नेह तणो जे लाग ॥ करतां सोहिलुं रे, पण पछे विरहनो विभाग ॥ चंद चकोरने रे, के चकवा दिनकर ते होइ जेम ॥ दूरे रह्या थकी रे, पण तस वधता छे प्रेम ॥ श्री सि० ॥ ४ ॥ पण तिहां एक छे रे, कारण नजरनो संबंध ॥ विरहे ते नहीं रे, ए मन मोटा छे रे धंध ॥ पण एक आशरो रे, सुगुणशुं जे रे एक तान ॥ तेहथी वाधशे रे, ज्ञानविमल गुणनो जस मान ॥ श्री सी० ॥ ५ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तवन चोथुं ॥

॥ निद्रडी वैरण हुइ रही–ए देशी॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, विनतडी हो सुणीये किरतार के ॥ ते दिन लेखे लागशे, जिण दिवसे हो लहीशुं दीदारके ॥ श्री सी० ॥ १ ॥ हेजाळुं हैयु उछलसे, पण नयणे हो निरख्ये सुख थाय के ॥ जे जल पाना पपासीओ, तस दुःखे हो करी तृप्ति न थाय के ॥ श्री सी० ॥ २ ॥ जाणो छो प्रभु बहु परे, माहरा मननी हो वीतकनी वातके ॥ तो शुं तागो छो घणुं, आवी मिलो हो मुज थइ साक्षात के ॥ श्री सी० ॥ ३ ॥ हुं उच्छक बहु परे कहुं, पण न गणुं हो कांइ रीझ अरीझ के ॥ ए लक्षण रागी तणुं, तिणे भांख्युं हो सघळुं मन गुझ के ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल प्रभु आपणो, जाणीने हो कीजे उच्छाह के ॥ उत्तम आप अधिक करे, आवी मळ्या हो ग्रह्या जे वांह्य के ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन पांचमुं ॥

॥ कर्म न छुटे रे प्राणीया–ए देशी ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, धरजो धरम सनेह ॥ सेवक रसियो सेवा तणो, हुं छुं तुम पद खेह ॥ श्री सो० ॥ १ ॥ वहाला तुमे वस्या वेगळा, छो अम्ह हियडा हजूर ॥ तिणथी तिमिर दुरे गया, उग्यो अनुपम सूर ॥ श्री० ॥ २ ॥ नयणे प्रीति जे दाखवे, ते संयोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संबंध ॥ अंतर अंतर विणु जिके, मिलीया परम ते बंधु ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पुरूखलवइ विजया जिहां ॥ नयरी पुंडरी किणी मांहि ॥ विचरे तिहां सहु इम कहे, पण ते नियति न प्राहि ॥श्री०॥ ४ ॥ विजया मुज शुद्ध चेतना, भक्ति नयरी निरुपाधि ॥ तिहां विचरे मुज साहिबो, जिहां सुख सहज समाधि ॥श्री०॥ ५ ॥ एक तारी तोहि उपरे, मैं तो कीधा रे स्वामि ॥ लोक प्रवाहथी जे बाहे, तेहनां न सरेरे काम ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिण दिनथी तुम्हे चित्त वश्या, नावे अवर को दाय ॥ ज्ञान विमल सुख संपदा, अधिक अधिक हवे थाय ॥ श्री० ७ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ वंदना वंदना वंदनारे गीरीराजकुं सदा मेरी वंदना–ए देशी ॥

॥ गावना गावना गावना रे, गिरिराजका परम जस गावना ॥ वीतरागका गीतरस गावनारे ॥ गिरि० ॥ ए आंकणी ॥ अति बहुमान सुध्यान रसीले, जीन पद पद्म देखावना रे ॥ गिरि० ॥१॥ प्रभु तुम छोडी अवरके द्वारे, मेरे कबहु न जावनारे ॥ गिरि० ॥२॥ ज्युं चातकके जलद सलिल. विणु, सरोवर नीर न भावनारे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ ज्युं अध्यातम भाव वेदीकुं, कबहुं ओर न ध्यावनारे ॥ गिरि ॥ ४ ॥ साम्य भवन मन मंडपमांहि, आय वसे प्रभु पाउनां रे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ आदि करणके आदीश्वर जिन, शत्रुंजय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिखर सुहावना रे ॥ गिरि० ॥ ६ ॥ भरत भूपतिके विरचित गिरि-तट, पालीताणुं नयर देखाउना रे ॥ गिरि० ॥ ७ ॥ ज्ञानविमल प्रभु ध्यान करतथे, परमानंद पद पाउना रे ॥ गिरि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ स्तवन बीजुं ॥

॥ लावो लावोने राज मूंघा मूंला मोती–ए देशी ॥

॥ मोरा आतमराम कुण दिने शेत्रुंजे जाशुं ॥ शेत्रुंजा केरी पाजे चढतां, ऋषभ तणा गुण गाशुं ॥ मोरा० ॥१॥ ए गिरिवरनो महिमा निसुणी, हैयडे समकित वाश्युं ॥ जिनवर भाव सहित पूजीने, भवे भवे निर्मळ थाशुं ॥ मोरा० ॥२॥ मन वच काया निर्मळ करीने, सूरज कुंडे न्हाशुं ॥ मरुदेवीनो नंदन निरखी, पातिक दुरे पलाश्युं ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ इणि गिरि सिद्ध अनंता हुवा, ध्यान सदा तस ध्याशुं, सकल जन्ममां ए मानव भव, लेखे करीय सराशुं ॥ मोरा० ॥ ४ ॥ सुरनर पूजित प्रभु पदकज रज, निलवटे तिलक चढाशुं ॥ मनमां हरखी डुंगर फरसी, हैयडे हरखित थाश्युं ॥ मोरा० ॥ ५ ॥ समकित धारी स्वामि साथे, सदगुरु समकित लाशुं ॥ छहरी पाळी पाय पखाळी, दुरगति दुरे दलाश्युं ॥ मोरा० ॥ ६ ॥ श्री जिन नामी समकित पामी, लेखे त्यारे गणाश्युं ॥ ज्ञान विमल सूरि कहे धन धन ते दिन, परमानंद पद पाशुं ॥ मोरा० ॥ ७ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सिद्धाचळ (रायण)नुं स्तवन त्रीजुं ॥

॥ भवी तुमे वंदोरे सुरीश्वर गच्छराया-ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धाचळ अंतरजामी, जीवन जगदाधार, शांत सुधा रस ज्ञाने भरीयो, सिद्धाचळ शणगार; रायण रुडी रे जिहां प्रभु पाय धरे, विमलगिरि वंदो रे देखत चित्त ठरे, पुण्यवंता प्राणी रे प्रभुजीनी सेवा करे. ॥ १ ॥ एसो तीरथ ओर न जगमां, भाखे श्री जिनराय, दुर्गति कापे ने पार उतारे, वहालो आपे केवळज्ञान; भविजन भावे रे जे एनुं ध्यान धरे, राय० विमल० पुण्य० ॥ २ ॥ वावडीओ रसकुंपा केरी, मणि रे माणेकनी खाण, रयण खाण बहु राजे हो तीरथ, एवी श्रीजीनवाण; सुखना सनेही रे बंधन दूर करे, राय० विमल० पुण्य० ॥ ३ ॥ पांच करोडशुं पुंडरीक गणधर, त्रण करोडशुं राम, वीश करोडशुं पांडव सिध्या, सिद्धक्षेत्र सिद्ध ठाम; मुनिवर मोटा रे अनंतानंत तरे, राय० विमळ० पुण्य० ॥ ४ ॥ गुण अनंता गिरिवर केरा, सिध्या साधु अनंत, वळी रे सिद्धशे वार अनंती, एम भाखे भगवंत; भवोभव केरां रे पातक दूर टळे, राय० विमळ० पुण्य० ॥ ५ ॥ द्रव्य भावशुं पूजा करतां, पूजो श्री जिन पाय, चिदानंद आतमसुख वेदी, ज्योतिसें ज्योत मिलाय, कीर्ति एनी रे माणेक मुनि करे, राय० विमळ० पुण्य० ॥ ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तवन चोथुं ॥

॥ प्रभु तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि धरतां ध्यानरे ए देशी ॥

॥ विमल गिरिवर शिखर सुंदर, सकळ तीरथ सार रे ॥ नाभिनंदन त्रिजग वंदन, ऋषभजिन सुखकार रे ॥ विमळ० ॥१॥ चैत्यतळे वर रुख रायण, सोहे अति मनोहार रे ॥ नाभिनंदनतणां पगलां, भेटतां भवपार रे ॥ विमल० ॥ २ ॥ समवसरिया आदि जिनवर, जाणो लाभ अनंत रे ॥ अजित शान्ति चउमास रहिया, इम अनेक महंत रे ॥ विमल० ॥ ३ ॥ साधु सिध्या जिहां अनंता, पुंडरीक गणधार रे ॥ शाम्ब ने प्रद्युम्न पांडव, प्रमूख बहु अणगार रे ॥ विमल० ॥ ४ ॥ नेमिजिनना शिष्य थावच्चा, सहस्स परिवार रे ॥ अंतगडजी सूत्र मांही, ज्ञातासूत्र मझार रे ॥ विमल० ॥ ॥ ५ ॥ भाव सहित भवी जे फरसे, सिद्धक्षेत्र सुठाम रे ॥ नरक तिर्यंग दो निवारे, जपे लाख जिन नाम रे ॥ विमल० ॥ ६ ॥ रयणमय जे ऋषभ प्रतिमा, पंचसय धनु मान रे ॥ नित्य प्रत्ये जिहां इंद्र पूजे, दुषम समय प्रमाण रे ॥ विमल० ॥ ७ ॥ त्रीजे भवे जे मुक्ति पहोंचे, भविक भेटे तेह रे ॥ देव सांनिध्य सकळ वंछित, पुरवे ससनेह रे ॥ विमल० ॥ ८ ॥ एणीपेरे जेहनो सबळ महिमा, कह्यो शास्त्र मझार रे ॥ ज्ञानविमल गिरि ध्यान धरतां, आवागमन निवार रे ॥ विमल० ॥ ९ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ स्तवन पांचमुं ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणीरे अजित जिणंदस्युं ए देशी. ॥

विमळाचळ गिरि भेटो भवियण भावशुं, जेथी भवोभव पातिक दूर पलायजो ॥ निकाचित बांध्यां जे कर्मज आकरां, गिरि भेटंतां क्षणमां सवी क्षय थाय जो ॥ विमळाचळ० ॥ १ ॥ साधु अनंता इण गिरि पर सिद्धि वर्या, राम भरत त्रण कोडि मुनि परिवारजो ॥ पांचसें साथे सीलेंगे शिवपद लह्युं, पांडव पांचे पाम्या भवनो पार जो ॥ विमळाचळ० ॥ २ ॥ नमि विनमि आदे बहु विद्याधरा, वली थावच्चा अइमत्ता अणगार जो ॥ शुकराजा वळी सुख ते गिरिपर पांमीया, बाह्य अभ्यंतर शत्रु कीधा छारजो ॥ विमळाचळ० ॥ ३ ॥ जुगलाधर्म निवारण इण गिरि आवीया, रिखभ जीणंदजी पुरव नवाणुं वारजो ॥ कांकरे कांकरे साधु अनंता सिद्धिवर्या, माटे निशदिन सिद्धाचळ मन धारजो ॥ विमळाचळ० ॥४॥ गिरि पागे चढंतां तन मन उल्लसे, भव संचित सवी दुष्कृत दूर पलायजो ॥ सूरजकुंडे नाही निरमळ थाइये, जोनवर सेवी आतम पावन थायजो ॥ विमळाचळ० ॥ ५ ॥ जात्रा नवाणुं करीये तन मन लग्नथी ॥ धरीये शील समता वळी व्रत पच्चखाणजो ॥ गणिये गरणुं दान सुपात्रे दीजीये, द्वेष तजी धरो शत्रु मित्र समानजो ॥ विमळाचळ० ॥ ६ ॥ ए गिरि भेटे भव त्रीजे शिव सुख लहे, पांचमे भव तो भवियण मुक्ति वरायजो ॥ सूरि. धनेश्वरे शुभ ध्याने इंम भांखीयुं, पापी अभवीने ए गिरि नवि फरसायजो ॥ विमळाचळ० ॥ ॥ ७ ॥ मूळनायक श्री आदिजीनंदने भेटिये, रायण नीचे प्रणमो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभुना पायजो ॥ बावन जिनाळां चोमुख बिंबने वंदिये, समेत-शिखर अष्टापद रचना आंयजो ॥ विमळाचळ० ॥ ८ ॥ सकल तिरथनो नायक ए गिरि राजोयो, तारण तीरथ भवदधि मांही पोतजो ॥ सवंतां ए गिरिवर बहु रिद्ध पामिये, वरिये शिव पद केवळ ज्योता ज्योतजो ॥ विमळाचळ० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन. ॥

सिद्धचक्रने भजीए रे, के भवियण भाव धरी ॥ मद माननें तजीए रे, के कुमता दूर करी ॥ ए आंकणी ॥ पहेले पदे राजे रे, के अरिहंत श्वेततणुं ॥ बीजे पदे छाजे रे, के सिद्ध प्रगट जाणुं ॥ ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ त्रीजे पदे पीळां रे, के आचारज कहीए ॥ चोथे पदे पाठक रे, के नीलवरण लहीए ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ पांचमे पदे साधु रे, के तप संजम सूरा ॥ शामवरणे सोहे रे, के दर्शन गुण पूरा ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ दर्शन नाण चारित्र रे, के तप संजम शुद्ध वरो ॥ भवि चित्त आणी रे, के हृदयमां ध्यान धरो ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥ सिद्धचक्रने ध्याने रे, के संकट भय न आवे ॥ कहे गौतम वाणी रे, के अमृतपद आवे ॥ सिद्ध० ॥ ५ ॥ इणि ॥

॥ श्री सिद्धचक्रनुं स्तवन बीजुं ॥

(सांभळरे तुं सजनी मारी, रजनी क्यां रमी आवी जी रे. ए देशी.)

श्री वीर प्रभु भविजनने एम कहे, भावदया दिल आणीजी रे;

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरतरु सम सिद्धचक्र आराधो, वरवा शिववधु राणी, सुभविया सुणजोजी. ॥ १ ॥ शिव कार्यनुं मुख्य कारण नवपद छे, गुणी गुण पण चारजी रे; अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाये, साधु वर दर्शन-धार, सुभवि० ॥ २ ॥ ज्ञान चारित्र तप ए नव पदनुं, आराधन एणीपरे कीजेजी रे; आसा चैत्र शुदि सातमथी, आंबिल ओळी मांडीजे, सुभवि० ॥ ३ ॥ चैत्य पूजा गुरुभक्ति करीए, पडिक-मणां दोय धारोजी, त्रण काळ देववंदन करीए, ब्रह्मचर्य भूमि संथारो, सुभवि० ॥ ४ ॥ नोकारवाळी वीशज गणीए, एकेक पदनी रंगे जी रे; पडह अमारि सदा वजडावी, सुणो आगम गुरु संगे, सुभवि० ॥ ५ ॥ कहे धर्मचंद सिद्धचक्र सेवतां, लहोए मंगळ माळजी रे; राज्यऋद्धि रमणी सुख पाम्यो, जेम नरपति श्रीपाळ, सुभवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन त्रीजुं ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजें नव आंबिलनी ओली ॥ ओली करतां आपद जाये, रिद्ध सिद्ध लहियें बहुली ॥ अ० ॥१॥ आसो ने चैत्रें आदरशुं, सातमथी संभाली रे ॥ आलस महेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दीवाली ॥ अ० ॥२॥ पूनमने दिन पूरी थाते, प्रेमेशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ आ० ॥ ३ ॥ देहरे जईने देव जुहारो, आदिश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, भावेशु भगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ बे टंके पडि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपालतणी परें समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथे सचरतां, आवे भवनो अंत ॥अ०॥ ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुं शुदि चैत्रीये, वारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, जे नरनारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्र चतुर्थ स्तवनम् ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो रे भवि भावें नवकार, जंपे श्री गौतम गणधार ॥ भवि सांभलो ॥ हांरे संपद थाय ॥ भ० ॥ हांरे संकट जाय ॥भ०॥ आसोने चैत्रें हरष अपार, आणी गणणुं कीजें तेर हजार ॥ भ० ॥ ॥ १ ॥ चार वरस ने वली षट्मास, ध्यान धरो भावें धरी विश्वास ॥ भ० ॥ ध्यायों रे मयणासुंदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो ततकाल ॥ भ० ॥ २ ॥ अष्ट कमलदल पूजा रसाल, करी न्हवण छांटयुं त ततकाल ॥ भ० ॥ सातशें महिपती तेहनें रे ध्यान, देही पामी कंचनवान ॥ भ० ॥ ३ ॥ महिमा कहेतां एनो नावे पार, समरो तिणे कारण नवकार ॥ भ० ॥ इहभव परभव छे सुखवास, बहु पामे लील विलास ॥ भ० ॥ ४ ॥ जाणी रे प्राणी लाभ अनंत, सेवो सुखदा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यक ए मंत्र ॥ भ० ॥ उत्तमसागर पंडित शिष्य, सेवे कान्तिसागर निशदिश ॥ भवि सांभलो ॥५॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन पांचमुं ॥

॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुंजी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, भवि उतरे भव-पार ॥ आ० ॥ ते भणी नवपद ध्यायशुंजी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुण-गेह, जस गुण अनंत अच्छेह ॥ आ० ॥ समयां संकट उपशमेजी ॥ लहियें वंछित भोग, पामी सवि संजोग ॥ आ० ॥ सुरनर आवी सहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आवे मंगल मालनेजी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टंकनांजी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल जलेजी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगे भणेजी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशि-दीश, कहीये वीशवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिह-रोजी ॥ ए चिंतामणी रत्न, एहनां कीजें जत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एह उपरेजी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष, होजो मुज परतक्ष ॥आ०॥ हुं किंकर छुं ताहरोजी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करुं छुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वलीवलीजी ॥ श्री लक्ष्मीविजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुझ ललीललीजी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री वीशस्थानकनुं स्तवन. ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडापचवीस देश जो—ए देशी. ॥

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलास जो, वीशे रे तप स्थानक महिमा गाइशुं रे लोल; हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस चोवीश जो, बीजे रे सिद्ध स्थानक पंदर भावशुं रे लोल. ॥ १ ॥ हांरे मारे त्रीजे पवयणशुं गणो लोगस सात जो, चउथे रे आयरियाणं छत्रीशनो सही रे लोल; हांरे मारे थेराणं पद पांचमे दश उदारे जो, छट्ठे रे उवझायाणं पचवीशनो सही रे लोल. ॥२॥ हांरे मारे सातमे नमो लोए सव्व साहु सत्तावीश जो, आठमे नमो नाणस्स पंचे भावशुं रे लोल; हांरे मारे नवमे दरिसण सडसठ मनने उदार जो, दशमे नमो विणयस्स दश वखाणीए रे लोल. ॥ ३ ॥ हांरे मारे अग्यारमे नमो चारित्तस्स लोगस सत्तर जो, बारमे नमो बंभस्स नव गणो सही रे लोल; हांरे मारे किरियाणं पद तेरमे वळी पच-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीश जो, चौदमे नमो तवस्स बार गणो सही रे लोल. ॥४॥ हांरे मारे पंदरमे नमो गोयमस्स अट्ठावीश जो, नमो जिणाणं चउवीश गणशुं सोळमें रे लोल; हांरे मार सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन अढारमें रे लोल. ॥५॥ हांरे मारे ओगणीशमें नमो सुअस्स वीश पीस्ताळीश जो, वीशमे नमो तित्थस्स वीश प्रभावशुं रे लोल; हांरे मार ए तपनो महिमा चारशें उपर वीश जो, षट मासे एक ओळा पूरी कीजीए रे लोल. ॥६॥ हांरे मारे तप करतां वळी गणीए दोय हजार जो, नवकारवाळी वीशे स्थानक भावशुं रे लोल; हांरे मारे प्रभावना संघ स्वामीवच्छल सार जो, उजमणा विधि कीजे विनय लीजीए रे लोल. ॥७॥ हांरे मारे तपनो महिमा कहे श्री वीर जिनराय जो, विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामीने रे लोल; हांरे मारे तप करतां वळी तीर्थंकर पद होय जो, देव गुरु इम कांति स्तवन सोहामणो रे लोल. ॥ ८ ॥

॥ दीवाळीनुं स्तवन ॥

(धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे—ए देशी.)

दीवाळीने दहाडे रे वीरप्रभु पामोया रे, अनुपम पद निर्वाण; तेणे दिन देवो रे सौ मळी एकठा रे, आव्या अपापापुरी ठाण. दी० ॥ १ ॥ तिहां प्रभु वीर रे मोक्ष जवा थकी रे, कर्युं पापापुरी नाम; अनुक्रमे आव्या रे नंदीश्वर गिरि रे, करवा कल्याणकनां काम. दी०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ २ ॥ तेणे दिन काशी रे कोशल देशना रे, त्यां गणराय अढार; पोसह कर्यो रे तेणे आहार त्यागनो रे, संसारनो अंतकार. दी० ॥ ३ ॥ ते राजाए मनमां चिंतव्यो रे, भावदीपकनो अभाव; द्रव्य-दीपक रे त्यां प्रकटावीयो रे, थयो दीवाळी प्रभाव. दी० ॥ ४ ॥ तेणे दिन करी रे भवी दीप दीपालिका रे, विधि जयणाए जिन द्वार; तिमिर मीटावी रे निज आतम तणुं रे, करे शिवलक्ष्मी स्वीं-कार. दी० ॥ ५ ॥

॥ श्री पर्युषणनुं स्तवन ॥

॥ बंजारानी देशी ॥

प्रभु वीर जिणंद विचारी, भाख्या पर्व पजुसण भारी; आखा वर्षमां ते दिन मोटा, आठे नहीं तेमां छोटारे; ए उत्तमने उपकारी, भाख्या० ॥ १ ॥ जेम औषधमांहि कहीए, अमृतने सारुं लहीए रे; महामंत्रमां नवकारवाळी, भाख्या० ॥ २ ॥ वृक्षमांहि कल्पतरु सारो, एम पर्व पजुसण धारो रे; सूत्रमांही कल्प भव तारी, भाख्या० ॥ ॥ ३ ॥ तारा गणमां जेम चंद्र, सुरवरमांहि जेम इंद्र रे; सतीओमां सीता नारी, भाख्या० ॥ ४ ॥ जो बने तो अट्ठाइ कीजे, वळी मासखमण तप लीजे रे; सोळ भथानी[1] बलीहारी, भाख्या० ॥ ॥ ५ ॥ नहि तो चोथ छट्ठ तो लहीए, अट्ठम[2] करी दुःख सहीए

१ सात अथवा आठ उपवास. २. एक, बे ने त्रण उप-वास वच्चे बे पारणा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे; ते प्राणी जुज अवतारी, भाख्या० ॥ ६ ॥ ते दिवसे राखी समता, छोडो मोह माया ने ममता रे; समता रस दिलमां धारी, भाख्या० ॥ ७ ॥ नव पूर्वतणो सार लावी, जेणे कल्पसूत्र बनावी रे; भद्रबाहु वीर अनुसारी, भाख्या० ॥ ८ ॥ सोना रुपानां फुलडां भरीए, ए कल्पनी पूजा करीए रे, ए शास्त्र अनोपम भारी, भाख्या० ॥ ॥ ९ ॥ गीत गान वाजिंत्र वजावे, प्रभुजीनी आंगी रचावे रे; करे भक्ति वार हजारी, भाख्या० ॥ १० ॥ सुगुरु मुखथी ए सार, सुणे अखंड एकवीश वार रे; जुए एहिज भवे शिव प्यारी, भाख्या० ॥ ११ ॥ एम अनेक गुणना खाणी, ते पर्व पजुसण जाणी रे; सेवो दान दया मनोहारी, भाख्या० ॥ १२ ॥

॥ श्री गौतम स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ कपूर होये अती उजलो रे—ए देशी ॥

पहेलो गणधर वीरनो रे, शासननो शणगार; गौतम गोत्र तणो धणी रे, गुण मणिरयण भंडार, जयंकर जीयो गौतम स्वाम, गुण मणि केरो धाम, ज० नवनिधि होय जस नाम, ज० पूरे वंछित काम, ज० जीयो० ॥ १ ॥ ज्येष्ठा नक्षत्रे जनमीओरे, गोबर गाम मोझार, विश्वभूति पृथ्वीतणो रे, मानवी मोहनगार, ज० ॥ २ ॥ वीर कने दीक्षा ग्रही रे, पांचसोनो परिवार, छट्ठ छट्ठ करी पारणुं रे, उग्र करे विहार, ज० ॥ ३ ॥ अष्टापद लब्धे करी रे, वांद्या जिन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोवीश; जग चिंतामणि तिहां करी रे, स्तवीआ ए जगदीश; ज० ॥ ४ ॥ पनरसो तापस पारणा रे, खीर खांड घृत आण; अमृत जस अंगुठडे रे, उग्यो केवळ भाण. ज० ॥ ५ ॥ दीवाळी दिन उप-न्युं रे, प्रत्यक्ष केवळ नाण; अक्षय लब्धितणो धणी रे, गुण मणि रयण भंडार. ज० ॥ ६ ॥ पचास वर्ष गृहवासमां रे, छद्मस्थपणाए त्रीश; बार वर्ष लगे केवळी रे, आयु बाणुं जगीश. ज० ॥ ७ ॥ गौतम गणधर सारीखा रे, श्री विजयसेन सूरीश; ए गुरु चरण पसाउले रे, वीर नमे निशदिश. ज० ॥ ८ ॥

श्रीयशोविजयोपाध्यायकृत चोवीशी

श्रीऋषभ जिन स्तवन

(मेरो प्रभुनीको मेरो प्रभुनीको, (अथवा) गिरीवर दरीसन विरला पावे ए देशी)

ऋषभ जिनंदा ऋषभ जिनंदा, तुं साहिब हुं छुं तुज बंदा ॥ तुजश्युं प्रीति बनी मुज साची, मुज मन तुज गुणश्युं रह्यो माची ॥ ऋ० ॥ १ ॥ दीठा देव रुचे न [1]अनेरा, तुज [2]पाखली चितडुं दिये फेरा ॥ स्वामीश्युं कामणडुं कीधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं ॥ ऋ० ॥ २ ॥ प्रेम बंधाणो ते तो जाणो, निरवहश्यो तो होशे वखाणो ॥ वाचक जश विनवे जिनराज, बांह ग्रह्यानी तुजने लाज ॥ ऋ० ॥ ३ ॥

---

१ बीजा. २ आसपास-चोमेर.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीअजित जिन स्तवन।

(कपूर होइ अति ऊजलुंरे, ए देशी)

विजयानंद गुणनीलोजी, जीवन जगदाधार ॥ तेहश्युं मुज मन [1]गोठडीजी, छाजे वारोवार ॥ सोभागी जिन तुज गुणने नहीं पार, तुं तो दोलतनो दातार ॥ सो० ॥ १ ॥ जेहवी कूवा छांहडीजी, जेहवुं वननुं फूल ॥ तुजशुं जे मन नवि मिल्युंजी, तेहवुं तेहनुं शूल ॥ सो० ॥ २ ॥ माहारुं तो मन [2]धुरिथकीजी, हलिउं तुज गुण संग ॥ वाचक जश कहे राखजोजी, दिन दिन चढतो रंग सोभा० ॥ ३ ॥

श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन।

सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे—ए देशी.

सेनानंदन साहिबो साचोरे, परि [3]परि परख्यो हीरो [4]जाचोरे ॥ प्रीति मुद्रिका तेहश्युं जोडीरे, जाणुं में लही कंचन कोडीरे ॥ १ ॥ जेणे चतुरशुं गोठी न बांधिरे, तिणे तो जाण्युं फोकट वाधीरे ॥ सुगुण मेलावे जेह उछाहोरे, [5]मणुअ जनमनो तेहज लाहोरे ॥ २ ॥ सुगुण शिरोमणि संभवस्वामीरे, नेह निवाह धुरंधर पामीरे ॥ वाचक जश कहे मुज दिन वलियोरे, मनह मनोरथ सघलो फलीयोरे ॥ ३ ॥

---

१ दोस्ती. २ पहेलांथीज. ३ वारंवार. ४ खरो. ५ मनुष्य.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीअभिनन्दन जिन स्तवन।

(गोडी गाजेरे, ए देशी)

शेठ सेवोरे अभिनन्दन देव, जेहनी सारेरे सुर किंनर सेव ॥ एहवो साहिब सेवे तेह हजूर, जेहनां प्रगटेरे कीधां पुन्य पंडूर ॥ शे० ॥ १ ॥ जेह सुगुण सनेही साहिब हेज, [1]टगलीलाथी लहीयें सुखसेज ॥ तृण सरखुं लागे सघले साच, ते आगणि आव्युं धरणीराज ॥ शे० ॥ २ ॥ अलवे मैं पाम्यो तेहवो नाथ, तेहथी हूं निश्चय हुओरे सनाथ ॥ वाचक जश कहे पामी रंग रेली, [2] मानुं फलिय अंगणडे सुरतरु वेली ॥ शे० ॥ ३ ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन।

(घूघरीआलो घाट, (अथवा) मन मोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजीरे ए देशी)

सुमतिनाथ दातार, कीजे [3]ओलग तुम तणीरे ॥ दीजे शिवसुख सार, जाणी ओलग जग धणीरे ॥ १ ॥ [4]अखय खजानो तुज, देतां खोडी लागे नहीरे ॥ किसि विमासण [5]गुज्ज, [6]जाचक थाके उभा रहीरे ॥ २ ॥ [7]रयण कोड तें दीध, ऊरण विश्व तदा कियोरे ॥ वाचक जश सुप्रसिद्ध, मागे तीन रतन दिओरे ॥ ३ ॥

---

१ स्हेज कृपानी नजरथी. २ जाणे. ३ विनती–कालांवालां. ४ अखुट खजानो. ५ छानी. ६ मागण. ७ वरसी दान वखते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन ।

(आज अधिक भावे करी, (अथवा) साहेब बाहुजिनेश्वर विनवुं. ए देशी)

पद्मप्रभ जिन सांभलो, करे सेवक ए अरदास हो ॥ [८]पांति बेसारिओ जो तुम्हें, तो सफल करओ आश हो ॥ प० ॥ १ ॥ जिन शासन पांति तें ठवी, मुज आप्युं समकित थाल हो ॥ हवे भाणा खडि खडि कुण खमे, शिव मोदक पीरसे रसाल हो ॥ प० ॥ २ ॥ गज ग्रासन गलित सीथिं करी, जीवे कीडीना वंश हो ॥ वाचक जश कहे इम चित्त धरी, दीजे निज सुख एक अंश हो ॥ प० ॥ ३ ॥

श्रीसुपास जिन स्तवन ।

(ए गुरु वाल्होरे, (अथवा) मारे दीवाळीरे थई आज, प्रभु मुख जोवाने ए देशी)

श्रीसुपास जिनराजनोरे, मुख दीठे सुख होईरे ॥ मानु सकल पद में लह्यांरे, जोतो नेह नजरि भरि जोई ॥ ए प्रभु प्यारोरे, माहारा चित्तनो ठारणहार मोहन गारोरे ॥ १ ॥ [९]सिंचे विश्व

क्रोडो रत्नो आपी जगतने देवाथी मुक्त कर्युं छे. पण मारे तो फक्त त्रण रत्नोज (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) जोइये छे; माटे ते आपो एटले आनंद. ८ पंगतमां. ९ चंद्रमा वेगळो छे छतां अमृत रसथी पृथिवीने सींचे छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधारसेंरे, चन्द रह्यो पण दूररे ॥ तिम प्रभु करुणा दृष्टिथीरे, लहिये सुख महमूर ॥ ए० ॥ २ ॥ वाचक जश कहे तिम करोरे, रहिये जेम हजूररे ॥ पीजे वाणी मीठडीरे, जेहवो सरस खजूर ॥३॥

श्रीचन्द्रप्रभ जिन स्तवन ।

(भोला शंभु, (अथवा) जीरे मारे श्री जिनवर भगवान ए देशी)

मोरा स्वामी चन्द्रप्रभ जिनराय, विनतडी अवधारीयें जीरेजी ॥ मोरा स्वामी तुम्हे छो दीनदयाल, भवजलथी मुज तारीयें जी० ॥ १ ॥ मोरा स्वामी हुं [1]आव्यो तुज पास, तारक जाणी गहगही जी० ॥ मोरा स्वामी जोतां जगमां दीठ, तारक को बीजो नही जी० ॥ २ ॥ मोरा स्वामी अरज करंतां आज, लाज वधें कहो केणि परी जी० ॥ मोरा स्वामी जश कहे [2]गोपयतुल्य, भवजलधी करुणा धरी जी० ॥ ३ ॥

श्रीसुविधिजिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

जिम प्रीति चन्द चकोरने, जिम मोरने मन मेहरे ॥ अम्हने ते तुम्हशुं उल्लशे, तिम नाह नवलो नेह ॥ सुविधि जिणेसरु, सांभलो चतुर सुजाण । अति अलवेसुरु ॥ १ ॥ अणदीठे [3]अलजो

१ तारनार छो एम जाणी हर्षभर तमारी पासे आव्यो छुं.
२ गायनी खरी सरखो. ३ मुंझवण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणो, दीठे ते तृप्ति न होइरे ॥ मन तोहि सुख मानी लियें, वाह-लातणुं मुख जोइ ॥ सु० ॥ २ ॥ जिम विरह कहिये नवि हुये, किजिये तेहवो संचरे ॥ कर जोडी वाचक जश कहे, भांजो ते भेद प्रपंच ॥ सु० ॥ ३ ॥

श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ।

(भोलुडारे हंसा विषय न राचीये· ए देशी)

शीतल जिन तुज मुज विचि आंतरुं, निश्चयथी नहि कोय ॥ दंसण नाण चरण गुण जीवने, सहुने पूरण होय ॥ अंतरयामीरे स्वामी सांभलो ॥ १ ॥ पण मुज मायारे भेदि भोलवे, बाह्य देखा-डीरे वेष ॥ हियडे जूठीरे मुख अति मीठडी, जेहवी धूरत वेष ॥ अं० ॥ २ ॥ एहने स्वामीरे मुजथी वेगली, कीजे दीनदयाल ॥ वाचक जश कहे जिम तुम्हस्युं मिली, लहियें सुख सुविशाल ॥ ॥ अं० ॥ ३ ॥

श्रीश्रेयांस जिन स्तवन ।

(मुखने मरकलडे, ए देशी)

श्रेयांस जिणेसर दाताजी, साहिब सांभलो ॥ तुम्हे जगमां अति विख्याताजी, साहिब सांभलो ॥ माग्युं देतां ते किशुं [1]वि-

१ विचार करो छो·

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मासोजी, साहिब सांभलो ॥ मुज मनमां एह तमासोजी, साहिब सांभलो ॥ १ ॥ तुम्ह देतां सवि देवार्थेजी, साहिब सांभलो ॥ तो अरज कर्यं श्युं थायेजी, साहिब सांभलो ॥ यश पूरण केम लहिजेजी, साहिब सांभलो ॥ जो अरज करिने दीजेजी, साहिब सांभलो ॥ २ ॥ जो अधिकुं द्यो तो देजोजी, साहिब सांभलो ॥ सेवक करि चित्त धरज्योजी, साहिब सांभलो ॥ जश कहे तुम्ह पद सेवाजी, साहिब सांभलो ॥ ते मुज सुरतरु फल मेवाजी, साहिब सांभलो ॥ ३ ॥

श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ।

(विषय न गंजीये, (अथवा) सुतसिद्धारथ भुपनोरे ए देशी)

वासुपूज्य जिन वालहारे, संभारो जिन दास ॥ साहिवश्युं हठ नवि होयेरे, पण कीजे [1]अरदासोरे ॥ चतुर विचारिये ॥ १ ॥ सासपहिला सांभरेरे, मुख दीठे सुख होय ॥ विसारया नवि विसरेरे, तेहश्युं हठ किम होयरे ॥ च० ॥ २ ॥ आमण दुमण नवि टलेरे, खण विण पूरिरे आश ॥ सेवक जश कहे दीजियेरे, निजपद कमलनो वासोरे ॥ च० ॥ ३ ॥

---

१ विनती.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीविमलनाथ जिन स्तवन ।

(ललनानी ढाल (अथवा) देश मनोहर माळवो—ए देशी.)

विमलनाथ मुज मन वसे, जिम सीता मन राम ललना ॥ पिक वंछे [२]सहकारने, [३]पंथी मन जिम [४]धाम ललना ॥ वि० ॥ १ ॥ [५]कुंजर चित्त रेवा वसे, [६]कमला मन गोविंद ल० ॥ [७]गौरी मन शंकर वसे, [८]कुमुदिनी मन जिम चंद ल० ॥ वि० ॥ २ ॥ [९]अलि मन विकसित मालती, कमलिनी चित्त [१०]दिणंद ल० ॥ वाचक जशने वालहो, तिम श्रीविमल जिणंद ल० ॥ वि० ॥ ३ ॥

श्री अनंतजिन स्तवन ।

(ढाल रायादानी)

श्रीअनंतजिन सेवियेरे लाल, मोहनवल्ली कंद ॥ मन मोहनां ॥ जे सेव्यो शिव सुख दियेरे लाल, टाले भव भय फंद ॥ मन० ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुख मटके जग मोहिओरे लाल, रूप रंग अति चंग ॥ म० ॥ लोचन अति अणीयालडांरे लाल, वाणी गंग तरंग ॥ मन० श्री० ॥ २ ॥ गुण सघला अंगे वस्यारे लाल, दोष गया सवि दूर ॥ म० ॥ वाचक जश कहे मुख लहूंरे लाल, देखी प्रभु मुख नूर ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ३ ॥

---

१ कोयल. २ आंबाने. ३ वटेमार्गु. ४ घर. ५ हाथीना मनमां रेवा नदी. ६ लक्ष्मीनां मनमां कृष्ण. ७ पार्वतीना मनमां महादेव. ८ पोयणी. ९ भमरो. १० सूर्य.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीधर्मनाथ जिन स्तवन ।

(राग मल्हार)

देखी कामीनी दोय के, कामे व्यापीयोरे के कामे०—ए देशी.

धरमनाथ तुज सरखो, साहिब शिर थकेरे के साहिब शिर थके ॥ चोर जोर जे फोरवें, मुजश्युं इक मनेरे के मु० ॥ गज निमीलिका करवी, तुजनें नवि घटेरे के तु० ॥ जे तुज सन्मुख जोतां, [१]अरिनुं बल मिटेरे के अ० ॥ १ ॥ [२]रवि उगे [३]गयणंगणि, [४]तिमिर ते नवि रहेरे के ति० ॥ कामकुंभ घर आवें, दारिद्र किम लहेरे के दा० ॥ वन विचरे जो सिंह तो, बीह न गजतणीरे के बी० ॥ कर्म करे श्युं जोर, प्रसन्न जो जगधणी रे के प्र० ॥२॥ सुगुण निर्गुणनो अंतर, प्रभु नवि चित्तें धरेरे के प्र० ॥ निर्गुण पण शरणागत, जाणी हित करे रे के जा० ॥ चंद त्यजें नवि लंछन, मृग अति सामलो रे के मृ० ॥ जश कहे तिम तुम्ह जाणी, मुज अरि बल दलो रे के मु० ॥ ३ ॥

श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ।

॥ सुणिपसुआं वाणी रे (अथवा) चित्रोडा राजारे—ए देशी ॥

जग जन मन रंजे रे, [५]मनमथ बल भंजेरे ॥ नवि राग न दोस तूं, अंजे चित्तश्युं रे ॥ १ ॥ शिर छत्र विराजे रे, देव दुंदुभि

---

१ शत्रुनुं. २ सूर्य. ३ आकाशे. ४ अंधारुं. ५ कामदेव.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाजेरे ॥ ठकुराइ इम छाजे, तोहिं [1]अकिंचनोरे ॥ २ ॥ थिरता [2]धृति सारी रे, वरो समता नारी रे ॥ ब्रह्मचारी शिरोमणि, तो पण तुं सुण्यो रे ॥ ३ ॥ न धरे भवरंगोरे, नवि दोषासंगोरे ॥ मृगलंछन चंगो, तो पण तू सही रे ॥ ४ ॥ तुज गुण कुण [3]आखेरे, जग केवली [4]पाखे रे ॥ सेवक जश भाखे, अचिरासुत जयो रे ॥ ५ ॥

श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन।

(ढाल वीछियानी)

सुखदायक साहिब सांभलो, मुजने तुमश्युं अति रगरे ॥ तुम्हे तो निरागी हुइ रह्या, ए श्यो एकंगो टंगरे ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम्ह चित्तमां वसवुं मुज घणुं, ते तो उंबर फूल समानरे ॥ मुज चित्तमां वसहो जो तुम्हे, तो पाम्या नवे निधानरे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्रीकुथुनाथ अम्ह निरवहु, इम एकंगो पण नेहरे ॥ इणि [5]आकीने फल पामशुं, वली होशे दुखनो छेहरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ आराध्यो [6]कामित पूरवे, चिंतामणि पाषाणरे ॥ वाचक जश कहे मुज दीजिये, इम जाणी कोडि कल्याणरे ॥ सु० ॥ ४ ॥

—:o:—

---

१ त्यागी. २ धीरज-संतोष. ३ कहे. ४ विना. ५ आस्ता. ६ धारेली इच्छा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीअरनाथ जिन स्तवन ।

(प्रथम गोवाला तणे भवेजी–ए देशी)

अरजिन दरिशन दीजियेंजी, [1]भविक कमल वन सूर ॥ मन तरसे मलवा घणुंजी, तुम्हे तो जइ रह्या दूर ॥ सोभागी तुम्हश्युं मुज मन नेह, तुमश्युं मुज मन नेहलोजी, जिम वपइयां मेह ॥ सो० ॥ १ ॥ [2]आवागमन पथिक तणुंजी, नहि शिव नगर निवेश ॥ कागल कुण हाथे लिखूंजी, कोण कहे संदेश ॥ सो० ॥ २ ॥ जो सेवक संभारस्यो जी, अंतरयामी रे आप ॥ जश कहे तो मुज मन तणोजी, टलशे सघलो संताप ॥ सो० ॥ ३ ॥

—:o:—

श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

॥ रसियानी (अथवा) धरम जिणेसर गाउ रंगशुं–ए देशी ॥

मल्लि जिणेसर मुजने तुम्हे मिल्या, जेह मांहिं सुखकंद वाल्हेसर ॥ ते कलियुग अम्हे गिरुओ लेखवुं, नवि बीजा युगवृंद ॥ वाल्हेसर ॥ म० ॥ १ ॥ आरो सारो रे मुज पांचमो, जिहां तुम दरिशण दीठ वा० ॥ [3]मरुभूमि पण थिति सुरतरु तणी, मेरु थकी हुइ इठ ॥ वा० ॥ २ ॥ पंचम आरेरे तुम्ह मेलावडे, रुडो राख्यो रे रंग वा० ॥ चोथो आरो रे फिरि आव्यो गणुं, वाचक जश कहे चंग ॥ वा० ॥ ३ ॥

---

१ भवि जीवोरुपी कमळवनने खीलववा सूर्यसमान छो. २ वटेमार्गीनुं जवुं आववु. ३ मारवाड.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन।

(वीरमाता प्रीतिकारिणी, (अथवा) रे जीव जिन धर्म कीजीये. ए देशा)

आज सफल दिन मुज तणो, मुनिसुव्रत दीठा ॥ भागी ते भावठि भवतणी, [1]दिवस दुरितना नीठा ॥ आ० ॥ १ ॥ आंगणे कल्पवेली फली, घन अमियना [2]वूठा ॥ आप माग्या ते पासा ढल्या, सुर सभकित तूठा ॥ आ० ॥ २ ॥ नियति हित दान सनमुख हुयें, स्वपुण्योदय साथे ॥ जश कहे साहिब मुगतिनुं, करिउं तिलक निज हाथे ॥ आ० ॥ ३ ॥

—:o:—

श्रीनमिनाथ जिन स्तवन।

(ऋषभनो वंश रयणायरु, ए देशी)

मुज मन पंकज भमरले, श्रीनमिजिन जगदीशोरे ॥ ध्यान करुं नित तुम्ह तणुं, नाम जपुं निशदिसोरे ॥ मु० ॥ १ ॥ चित्तथकी कदियें न विसरे, देखीयें आगलि ध्यानिरे ॥ अंतर तापथी जाणियें, दूर रह्यां अनुमानिरे ॥ मु० ॥ २ ॥ तुं गति तुं मति आसरो, तुंहिज बंधव मोटोरे ॥ वाचक जश कहे तुज विना, अवर प्रपंच ते खोटोरे ॥ मु० ॥ ३ ॥

---

१ पापना दिवसो खुटया—नाश पाम्या. २ वरस्या.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ।

(राजा जो मिले, (अथवा) कीसके चेले कीसके पुत ए देशी)

क्या कियो तुम्हे कहो मेरे सांई, फेरी चलें रथ तोरण आई ॥ दिल जानि अरे मेरा नाह, न त्यजिये नेह कछु अजानि ॥ दि० ॥ ॥ १ ॥ अटपटाइ चले धरि कुछ रोष, पसुअनके शिर दे करि दोष ॥ दि० ॥ २ ॥ रंग बिच भयो याथि भंग, सो तो साचो जानो कुरंग ॥ दि० ॥ ३ ॥ प्रीति तनकमिं तोरत आज, किउं नावे मनमें तुम्ह लाज ॥ दि० ॥ ४ ॥ तुम्ह बहु नायक जानो न [१]पीर, विरह लागि जिउं [२]वैरीको तीर ॥ दि० ॥ ५ ॥ [३]हार ठार शृगार अंगार, [४]अशन वसन न [५]सुहाईलगार ॥ दि० ॥ ६ ॥ तुज बिन लागे शूनि सेज, नही तनु तेज न हारद हेज ॥ दि० ॥ ॥ ७ ॥ आओने मंदिर विलसो भोग, बूढापनमें लीजे योग ॥ दि० ॥ ८ ॥ छोरुंगी मैं नहि तेरो संग, गइलि चलुं जिउं छाया अंग ॥ दि० ॥ ९ ॥ इम विलवति गइ गढ गिरनार, देखे प्रीतम राजुल नार ॥ दि० ॥ १० ॥ कंते दीनुं केवलज्ञान, कीधो प्यारी आप समान ॥ दि० ॥ ११ ॥ मुगति महलमें खेले दोइ, प्रणमें जश उल्लसित तन होइ ॥ दि० ॥ १२ ॥

---

१ वेदना. २ शत्रुनुं बाण. ३ गळामानो हार हीम जेवो अने शृंगार अग्निना अंगारा जेवा लागे छे. ४ आहार, वस्त्र. ५ गमे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन।

(ढाल फागनी)

[1]चउ कषाय पाताल कलश जिहां, [2]तिसना पवन प्रचंड ॥ बहु विकल्प कल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड ॥ भव सायर [3]भीषण तारीयें हो, अहो मेरे ललना पासजी ॥ त्रिभुवन नाथ दिलमें ए विनती धारीयें हो ॥ १ ॥ जरत उदाम काम वरवानल, परंत शीलगिरि शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मघर तिमिंगल, करत हे निगम उमंग ॥ भ० ॥ २ ॥ भमरीयाके बीचिं भयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाद पिशाचन सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ भ० ॥ ३ ॥ गरजत अरति फुरति रति बिजुरी, होत बहुत तोफान ॥ लागत चोर कुगुरु मलवारी, धरम जिहाज निदान ॥ भ० ॥ ४ ॥ जुरें पाटियें जिउं अति जोरि, सहस अढार शीलंग ॥ धर्म जिहाज तिउं सज करि चलवो, जश कहे शिवपुरी चंग ॥ भ० ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन।

दुख टलियां सुख दीठें मुज सुख उपनांरे, भेटया भेटया वीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मन मंदिरमां प्रभु आवी वसोरे, पाधुं पाधुं परमानंद रे ॥ दु० ॥ १ ॥ पीठबंध इहां कीधो समकित वज्रनोरे,

---

१ क्रोध, मान, माया, लोभ. २ कृष्ण. ३ बीहामणो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काळ्यो काळ्यो कचरो ने भ्रांतिरे ॥ इहां अति उंचा सोहे चारित्र चंद्रआरे, रुडी रुडी संवर भातिरे ॥ दु० ॥ २ ॥ [1]कर्म विवर गोपी इहां मोती झूंबणांरे, झूलइ झूलइ धीगुण आठरे ॥ बार भावना पंचाली अचरय करेरे, कारि कोरि कोरणि काठरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ इहां आवी समता राणाश्युं प्रभु रमीरे, सारी सारी थिरता [2]सेज रे ॥ किम जइ शकश्यो एक वार जो आवशोरे, रंज्या रंज्या हियडानि हेजरे ॥ दु० ॥ ४ ॥ वयण अरज सुणी प्रभु मनमंदिर आवियारे, आपें [3]तूठा तूठा त्रिभुवन भाणरे ॥ श्रीनयविजय विबुध पय सेवक इम भणेरे, तेणि पाम्या पाम्या कोडि कल्याणरे ॥ दु० ॥ ५ ॥

श्रीयशोविजयोपाध्याय कृत-चौद बोलनी चोवीशी

श्रीऋषभदेव जिन स्तवन।

(आज सखी संखेसरो, ए देशी)

ऋषभदेव नितु वंदिये, शिवसुखनो दाता ॥ नाभि नृपति जेहनो पिता, मरुदेवी माता ॥ नयरी विनीता उपनो, वृषभ लछन सोहें ॥ सोवन्न वन्न सुहामणो, दीठडे मन मोहें ॥ हांरे दीठडे मन

---

१ गुफा. २ पथारी. ३ तुष्टमान थाय.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोहें ॥ १ ॥ धनुष पांचसें जेहनुं, कायानुं मान ॥ चार सहसश्युं व्रत लीये, गुण रयण विधान ॥ लाख चोराशी पूर्वनुं, आउखुं पाले ॥ अमिय समी दायें देशना, जग [1]पातिक टाले ॥ हांरे ज० ॥ २ ॥ सहस चोराशी मुनिवरा, प्रभुनो परिवार ॥ त्रण लक्ष साध्वी कही, शुभ मति सुविचार ॥ अष्टापद गिरि चढी, टाली सवि कर्म ॥ चडी गुणठाणें चउदमें, पाम्या शिव शर्म ॥ हांरे पा० ॥ ३ ॥ गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी, प्रभु सेवा सारे ॥ जे प्रभुनी सेवा करे, तस विघन निवारे ॥ प्रभु पूजायें प्रणमं सदा, नव निधि तस हाथे ॥ देव सहस सेवा परा, चालें तस साथे ॥ हांरे चा० ॥ ४ ॥ युगला धर्म निवारणो, शिव मारग भाखे ॥ भवजल पडता जंतुने, ए साहिब राखे ॥ श्रीनयविजय विबुध जयो, तपगछमां दीवो ॥ तास शीश भावें भणे, ए प्रभु चिरंजीवो ॥ हांरे ए प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्रीअजितनाथ जिन स्तवन ॥

॥ आबु अचल रलीयामणोरे लो—ए देशी ॥

अजित जिणंद जुहारियेंरे लो, जितशत्रु विजया जातरे सुगुण नर ॥ नयरी अयोध्या उपनोरे लो, गजलंछन विख्यातरे सु० ॥ अ० ॥ १ ॥ उंचपणुं प्रभुजीतणुंरे लो, धनुष साढा सें च्यारेरे सु० ॥ एक सहसश्युं व्रत लियेरे लो, [2]करुणारस भंडाररे

---

१ पाप. २ खजानो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु० ॥ अ० ॥ २ ॥ बोहोतेर लाख पूरव धरेरे लो, आउखुं सोवन वानरे सु० ॥ लाख एक प्रभुजीतणारे लो, मुनि परिवारनुं मानरे सु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ लाख त्रण भली [१]संयतीरे लो, ऊपर त्रीश हजाररे सु० ॥ समेतशिखर शिवपद लहीरे लो, पाम्या भवनो पाररे सु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजितबला शासनसुरीरे लो, महायक्ष करे सेवरे सु० ॥ कवि जशविजय कहे सदारे लो, ध्याउं ए जिन-देवरे सु० ॥ अ० ५ ॥

—:०:—

श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन ।

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं, ए देशी)

माता सेना जेहनी, तात जितारी उदार लालरे ॥ हेम वरण हय लंछनो, सावत्थी शिणगार लालरे ॥ संभव भवभय भंजणो ॥ १ ॥ [२]सहस पुरुषशुं व्रत लिये, त्र्यारसें [३]धनुष तनु मान लालरे ॥ साठ लाख पूरव धरें, आउखुं सुगुण निधान लालरे ॥ ॥ सं० ॥ २ ॥ दोइ लाख मुनिवर भला, प्रभुजीनो परिवार लालरे ॥ त्रण लाख [४]वर संयती, ऊपर छत्रीश हजार लालरे ॥ सं० ॥ ३ ॥ समेतशिखर शिव पद लह्युं, तिहां करे महोच्छव देव लालरे ॥ दुरितारी शासनसुरी, त्रिमुख यक्ष करे सेव लालरे ॥ सं० ॥ ४ ॥ तुं माता तुं मुज पिता, तुं बंधव [५]त्रण काल लालरे ॥ श्रीनयविजय विबुध तणो, शिष्य कहे दुख टाल लालरे ॥सं०॥५॥

---

१ साध्वीओ. २ हजार. ३ शरीरनुं प्रमाण. ४ श्रेष्ठ. ५ भूत भविष्य वर्तमान.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीअभिनंदन जिन स्तवन ।

॥ दिन सकळ मनोहर, बीज दीवस सुविशेस—ए देशी ॥

अभिनंदन चंदन, शीतल वचन विलास ॥ संवर सिद्धारथा, नंदन गुणमणि वास ॥ त्रणसें धनु प्रभु तनु, ऊपर अधिक पंचास ॥ एक सहसश्युं दीक्षा, लिये छांडी भवपास ॥ १ ॥ कंचनवान सोहें, वानर लंछन स्वामी ॥ पंचास लाख पूरव, आयु धरे शिवगामी ॥ वर नयरी अयोध्या, प्रभुजीनो अवतार ॥ संमेतशिखर गिरि, पाम्या भवनो पार ॥ २ ॥ त्रण लाख मुनीश्वर, तप जप संजम सार ॥ षट लक्ष छत्रीश, साध्वीनो परिवार ॥ शासनसुर ईश्वर, संघनां विघन निवारें ॥ काली दुख टाली, प्रभुसेवकने तारें ॥ ॥ ३ ॥ तुं भवभय भंजन, जन मन रंजन रूप ॥ मनमथ [1]गद गंजन, अंजन रति हित सरूप ॥ तुं भुवनें [2]विरोचन, गतशोचन जग दीसे ॥ तुज [3]लोचन लीला, लहि सुख नित दीसे ॥ ४ ॥ तुं दोलतदायक, जगनायक जगबंधु ॥ जिनवाणी साची, ते तरिया भवसिंधु ॥ तुं मुनि मन पंकज, भ्रमर [4]अमर नर राय ॥ उभा तुज सेवें, बुध जन तुज जश गाय ॥ ५ ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन ।

(भोलुडारे हंसा रे विषय न राचीये. ए देशी)

नयरी अयोध्यारे माता मंगला, मेघ पिता जस धीर ॥ लंछन क्रौंच करें पद सेवना, सोवन वान शरीर ॥ १ ॥ मुज मन

---

१ रोग. २ सूर्य. ३ आंख्य. ४ देवता.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोह्युंरे सुमति जिणेसरं, न रुचे को पर[1] देव ॥ खिण खिण समरुंरे गुण प्रभुनी तणा, ए मुज लागीरे टेव ॥ मु० ॥ २ ॥ त्रणसें धनु तनु आयु धरें प्रभु, पूरव लाख चालीश ॥ एक सहसशुं दीक्षा आदरी, विचरे श्री जगदीश ॥ मु० ॥ ३ ॥ समेतशिखर गिरि शिव पदवी लही, त्रण लाख वीश हजार ॥ मुनिवर पण[2] लख प्रभुनी संयती, त्रीश सहस वली सार ॥ मु० ॥ ४ ॥ शासनदेवी महाकाली भली, सेवें तुंबरु यक्ष ॥ श्रीनयविजय बुध सेवक भणें, होजो मुज तुज पक्ष ॥ मु० ॥ ५ ॥

श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन ।

(झांझरीआ मुनिवर धन धन तुम अवतार–ए देशी.)

कोसंबी नयरी भलीजी, धर राजा जस तात ॥ मात सुसीमा जेहनीजी, लंछन कमल विख्यात ॥ पद्म प्रभुश्युं लाग्यो मुज मन रंग ॥ १ ॥ त्रीश लाख पूरव धरेजी, आउखुं [3]नव रवि वन्न ॥ धनुष अढीसें उंचताजी, मोहे जगजन मन्न ॥ प० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत लियेजी, समेतशिखर शिव ठाम ॥ त्रण लाख त्रीस सहस भलाजी, प्रभुना मुनि गुणधाम॥प०॥३॥ शीलधारिणी[4] संयतीजी,चार लाख वीश हजार ॥ कुसुम यक्ष श्यामा[5] सुरीजी, प्रभु शासन हितकार ॥ ५० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कामित सुरतरुजी, भवजल तरण जिहाज ॥ कवि जशविजय कहे इहांजी, सेवो ए जिनराज ॥ प० ॥ ५ ॥

---

१ बीजा, २ पांच. ३ उगता सूर्य जेवुं रातुं. ४ साध्वीओ. ५ देवी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

(नंदनकुं त्रिशला हुलरावे, ए देशी)

[1]तात प्रतिष्ठ ने पृथिवी माता, नयर वाराणसी जायोरे ॥ [2]स्वस्तिक लंछन कंचन वरणो, प्रत्यक्ष सुरतरु पायोरे ॥ श्रीसुपास जिन सेवा कीजे ॥ १ ॥ एक सहसश्युं दीक्षा लीधी, बे सय धनुष प्रभु कायारे ॥ वीश लाख पूरवनुं[3] जीवित, सभेतशिखर शिव पायारे ॥ श्री० ॥ २ ॥ त्रण लाख प्रभुना मुनि गिरुआ, चार लाख त्रीश हजाररे ॥ गुण मणि मंडित [4]शील अखंडित, साध्वीनो परिवाररे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ सुर मातंग ने देवी शांता, प्रभु शासन अधिकारीरे ॥ ए प्रभुनी जेणे सेवा कीधी, तेणे निज दुरगति वारीरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मंगल [5]कमला मंदिर सुंदर, मोहनवल्ली कंदोरे ॥ श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, कहे ए प्रभु चिर नंदोरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

श्रीचंद्रप्रभ जिन स्तवन ।

(वादल दह दिशि उनट्यो सखि, ए देशी)

श्रीचंद्रप्रभ जिनराजीओ, मुह सोहे पुनिमचंद ॥ लंछन जस

---

१ पिता. २ साथियानुं. ३ आयुष. ४ सोभित. ५ लक्ष्मी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीपे चंद्रनुं, [1]जग जन नयनानंदरे, प्रभु टाले भवभय फंदरे, केवल कमला [2]अरविंदरे, ए साहिब मेरे मन वस्यो ॥ १ ॥ महसेन पिता माता लक्ष्मणा, प्रभु चंद्रपुरी शिणगार ॥ दोढसें धनु तनु उच्चता, [3]शुचि वरणें शशी अनुकाररे, उतारे भवजल पाररे, करे जनने बहु उपगाररे, दुःख दावानल [4]जलधाररे ॥ ए० ॥ २ ॥ दश लाख पूरव आउखुं, व्रत एक सहस परिवार ॥ समेत शिखर शिवपद लहुं, ध्यायी शुभ ध्यान उदाररे, टाली पातिक विस्तारे, हुआ जगजनना आधाररे, मुनिजन मन [5]धिक [6]सहकाररे ॥ ए० ॥३॥ मुनि लाख अढी प्रभुजी तणा, तेम संयम गुणह निधान ॥ त्रण लाख वर साहुणी वली, असीअ सहसनुं मानरे, कहे कवियण जस गुणगानरे, जिणे जित्या क्रोधने मानरे, जेणे दीधुं वरसीदानरे, वरषाजलधर अनुमानरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ सुर[7]विजय नाम भृकुटी सुरी, प्रभु शासन रखवाल ॥ कवि जशविजय कहे सदा, ए प्रणमो प्रभु त्रिहु कालरे, जस पद प्रणमे भूपालरे, जस अष्टमी शशि सम [8]भालरे, जे टाले भवजंजालरे ॥ ए० ॥ ५ ॥

श्रीसुविधिनाथ जिन स्तवन ।

(भावना मालती चुसीए, ए देशी)

सुविधि जिनराज मुज मन रमो, सवि गमो भवतणो तापरे ॥

---

१ जगना लोकोनी आंख्योने आनंद आपनारा. २ कमळ. ३ उज्वळ. ४ वरसाद. ५ कोयल. ६ आंबो. ७ कपाळ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाप प्रभु ध्यानथी [1]उपशमो, वीशमो चित्त शुभ जापरे ॥ सु० ॥ १ ॥ राय सुग्रीव रामा सुतो, नयरी काकंदी अवतारेरे ॥ मच्छ लंछन धरे आउखुं, लाख दोइ पूर्व निरधारेरे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक शत धनुष तनु उंचता, व्रत लिए सहस परिवारेरे । समेतशिखर शिवपद लहें, फटिक सम कांति विस्तारेरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ लाख दोइ साधु प्रभुजीतणा, लाख एक सहस वली वीशरे ॥ साहुणी चरणगुण धारिणी, एह परिवार जगदीशरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अजित सुर वर सुतारा सुरी, नित करे प्रभुतणी सेवरे ॥ श्रीनयविजय [2]बुध शिष्यनें, चरण ए स्वामि चित्त मेवरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ।

(कपूर होइ अति ऊजलुं रे, ए देशी)

शीतल जिन भद्दिलपुरीरे, दृढरथ नंदा मात ॥ नेउं धनुष तनु उंचताजी, सोवन वान विख्यातरे ॥ जिनजी तुजश्युं मुज मन नेह, जिम [3]चातकने मेहरे, तुं छे गुणमणि गेहरे ॥ जि० तु० ॥ १ ॥ श्रीवत्स लंछन सोहतोजी, आयु पूरव लख एक ॥ एक सहसश्युं व्रत लीयेंजी, आणी हृदय विवेकरे ॥ जि० तु० ॥ २ ॥ समेतशिखर शुभ ध्यानथीजी, पाम्या परमानंद ॥ एक लख चउ साहुणीजी, एक लाख मुनि वृंदरे ॥ जि० तु० ॥ ३ ॥ सावधान

१ नाश थाओ. २ पंडित. ३ वपैयो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रह्मा सदाजी, शासन विघन हरेइ ॥ देवी अशोका प्रभुतणीजी, अहर्निशि भगति करेइरे ॥ जि० ॥ तु० ॥४॥ परम पुरुष पुरुषो त्तमोजी, तूं नरसिंह निरीह ॥ कवियण तुज जश गावतांजी, पवित्र करे निज [1]जीहरे जि० तु० ॥ ५ ॥

श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन ।

(नयरी अयोध्या जयवतीरे, (अथवा) सुत सिद्धारथ भुपनो रे, ए देशी.)

सिंहपुरी नयरी भलीरे, विष्णु नृपति जस तात ॥ माता विष्णु महासतीरे, लीजे नाम प्रभातोरे ॥ जिन गुण गाइए ॥ १ ॥ श्रीश्रेयांस जिनेसरुरे, कनक[2] वरण शुचि काय ॥ लाख चोराशी वरषनुंरे, पाले प्रभु निज आयोरे ॥ जि० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत लीयेंरे, असिय धनुष:तनु मान ॥ खडगी[3] लंछन शिव लहेंरे, समेतशिखर शुभ ध्यानरे॥जि०॥३॥ सहस चोराशी मुनिवरारे, त्रण सहस लख एक॥ प्रभुजीनी वर[4] साहुणीरे, अदभुत विनय विवेकरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ सुर मनुजेश्वर मानवीरे, सेवे पय[5] अरविंद ॥ श्री नयविजय सुशीशनेरे, ए प्रभु सुरतरु कंदरे ॥ जि० ॥ ५ ॥

---

१. जीभ. २. सोना जेवो. ३. गेंडानुं. ४. श्रेष्ट साध्वीओ. ५. चरण कमल.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन.

(ऋषभनो वंश रयणायरु, ए देशी)

श्रीवसुपूज्य नरेसरु, तात जया जस मातारे ॥
लंछन [1]महिष सोहामणो, वरणे प्रभु अति रातारे ॥ गाइयें जिन गुण गहगही ॥ १ ॥ श्रीवासुपूज्य जिणेसरु, चंपापुरी अवतारेरे ॥ वरष बोतेर लाख आउखुं, सत्तरि धनु तनु साररे ॥गा०॥ २ ॥ षट शत साथे संजम लिये, चंपापुरी शिवगामीरे ॥ सहस बहोत्तर प्रभुतणा, नमियें मुनि शिर नामीरे ॥गा०॥३॥ तप जप संयम गुण भरी, साहुणी लाख वखाणीरे ॥ यक्ष कुमार सेवा करे, चंडा देवीमां जाणीरे ॥ गा० ॥ ४ ॥ जनमन कामित सुरमणी, भवदव मेह समानरे ॥ कवी जशविजय कहे सदा, हृदय कमल धरो ध्यानरे ॥ गा० ॥ ५ ॥

—:o:—

श्रीविमलनाथ जिन स्तवन।

सजनी विमल जिनेसर पूजीये, लेइ केसर घोलाघोल ॥ सजनी भगति भावना भाविर्ये, जिम होइ घरे रंग रोल ॥ सजनी विमल जिनेसर पूजीयें ॥१॥ स० ॥ कंपिलपुर कृतवर्मनो, नंदन श्यामाजात ॥ स० ॥ अंक [2]वराह विराजतो, जेहना [3]शुचि अवदात ॥ स० वि० ॥ २ ॥ स० साठ धनुष तनु उच्चता, वरस साठ

१. पाडो. २. सूअर लंछन. ३. निर्मळ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाख आय॥एक सहसश्युं व्रत लिये, कंचनवरणी काय ॥ स०वि० ॥ ३ ॥ स० समेतशिखर शिवपद लहुं, मुनि अडसठ हजार ॥ स० एक लाख प्रभु साहुणी, वली अठशत निरधार ॥ स० वि० ॥ ४ ॥ स० पणमुख दिता प्रभु तणे, शासनधर अधिकार ॥ स० श्रीनयविजय विबुधतणा, सेवकने जयकार ॥ स० वि० ॥ ५ ॥

श्रीअनंतनाथ जिन स्तवन।

(इडर आंबा आंबलीरे, ए देशी)

नयरी अयोध्या ऊपनारे, सिंहसेन कुलचंद ॥ [1]सींचाणो लंछन भलोरे, सुयसा मातानो नंद[2] ॥ भविक जन सेवो देव अनंत ॥ १ ॥ वरष त्रीश लाख आउखुंरे, उंचा धनुष पंचाश ॥ कनक वरण तनु सोहतोरे, पूरे जगजन आश ॥ भ० ॥ २ ॥ एक सहसश्युं व्रत ग्रहीरे, समेत शिखर निरवाण॥ छासठ सहस मुनीश्वररे, प्रभुना श्रुत गुण जाण ॥ ३ ॥ बासठ सहस सुसाहुणीरे, प्रभुजीनो परिवार ॥ शासनदेवी अंकुशीरे, सुर पाताल उदार ॥ भ० ॥ ४ ॥ जाणे निज मन दासनुंरे, तूं जिन जग हितकार ॥ बुध जश प्रेमें विनवेरे, दीजे मुज दीदार ॥ भ० ॥ ५ ॥

१. बाज, २ पुत्र.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीधर्मनाथ जिन स्तवन ।

आबु अचळ रळीयामणोरे लोल–ए देशी

रतनपुरी नयरी हुओरे लाल, लंछन वज्र उदार ॥ मेरे प्यारेरे॥ भानु [1]नृपति कुल केसरीरे लाल, सुव्रता मात मल्हार ॥ मेरे प्यारेरे ॥ धर्म जिनेसर ध्याइयेरे लाल ॥१॥ आयु वरष दश लाखनुंरे लाल, धनु पणयाल[2] प्रसिद्ध ॥ मे० ॥ कंचन वरण विराजतोरे लाल, सहस साथे व्रत लीध ॥ मे० ध० ॥ २ ॥ [3]सिद्धिकामिनी करग्रहेरे लाल, समेतशिखर अतिरंग ॥ मे० ॥ सहस चोसठ सोहामणारे लाल, प्रभुना साधु अभंग ॥ मे० ध० ॥३॥ बासठ सहस सुसाहुणीरे लाल, वली उपरि सत चार ॥ मे० ॥ कंदर्प शासन सुरीरे लाल, किन्नर सुर सुविचार ॥ मे० ध० ॥४॥ लटकाले तुज लोअणेरे लाल, मोह्या जगजन चित्त ॥ मे० ॥ श्रीनयविजय विबुधतगोरे लाल, सेवक समरे नित्त ॥ मे० ध० ॥ ५ ॥

श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ।

(त्रिभुवन तारण तीरथ, (अथवा) देखी कामीनी दोयके कामे व्यापीयोरे के कामे० ए देशी)

गजपुर नयर विभूषण, दूषण टालतोरे के दूषण० ॥ विश्व-

---

१. राजा. २. पिस्ताळीश. ३. मोक्षरुपी स्त्रीनो समेतशिखर उपर हाथ पकड्यो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेन नरनाहनुं कुल अजुआलतोरे के कुल० ॥ अचिरानंदन वंदन, कीजे नेहश्युंरे के कीजे०॥शांतिनाथ मुख पूनिम, शशिपरि उल्लश्युंरे के ॥ श० ॥१॥ कंचन वरणी काया, माया परिहरेरे के ॥ माया० ॥ लाख वरषनुं आउखुं, [1]मृग लंछन धरेरे के ॥ मृग० ॥ एक सहस्सश्युं व्रत ग्रहे, पालिक वन दहेरे के ॥ पा० ॥ समेत शिखर शुभ ध्यान थी,शिवपदवी लहेरे के । शिव०॥२॥ चालीश धनु तनु राजें, भाजे भय घणारे के ॥भा०॥ बासठ सहस मुनीसर, विलसें प्रभुतणारे के ॥ वि० ॥ एकसठ सहस छसें वली, अधिकी साहुणीरे के ॥ अ० ॥ प्रभु परिवारनी संख्या, ए साची मुणीरे के ॥ ए० ॥ ३ ॥ गरुड यक्ष निरवाणी, प्रभु सेवा करेरे के ॥ प्र० ॥ ते जन बहु सुख पावशे, जे प्रभु चित्त धरेरे के ॥ जे० ॥ मद झरता गाजे, तस धरि आंगणेरे के ॥ त०॥ तस जगहिमकर[2] सम, जश कवियण भजेरे के ॥ ज० ॥ ४ ॥ देव गुणाकर चाकर, हुं छुं ताहरोरे के ॥हुं०॥ नेह नजर भरि मुजरो,मानो माहरोरे के ॥मा०॥ तिहुअण भासन शासन, चित्त करुणा करोरे के ॥ चि० ॥ कवि जशविजय [3]पयंपे, मुज भव दुख हरोरे के मु० ॥ ५ ॥

—:०:—

श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल मरकलडानी)

गजपुर नयरी सोहियेंजी साहिब गुणनिलो ॥ श्रीकुंथुनाथ

---

१. हरिण. २. चंद्रमां. ३. कहे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुख मोहियेंजी साहिब गुणीनिलो ॥सूर नृपति कुल चंदोजी सा०॥ श्रीनंदन भावे वंदोजी ॥ सा० ॥ १ ॥ [1]अजलंछन वंछित पूरेजी सा० ॥ प्रभु समरिओ संकट चूरेजी सा० ॥ पांत्रीश धनुष तनु मानेजी सा० व्रत एक सहस अनुमानेजा ॥ सा० ॥ २ ॥ आयु वरष सहस पंचाणुंजी सा० ॥ तनु सोवन वान वखाणुंजी सा० ॥ समेत शिखर शिवपायाजी सा० ॥ साठ सहस मुनिश्वर रायाजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ षटशत वली साठ हजारजी सा० ॥ प्रभु साध्वीनो परिवारजी सा० ॥ गंधर्व वज्रा अधिकारीजी सा० ॥ प्रभु शासन सांनिधकारीजी ॥ सा० ॥ ४॥ सुखदायक मुखने मटकेजी सा० ॥ लाखेणे लोयण[2] लटकेजी सा० ॥ बुध श्रीनयविजय मुणिंदोजी सा० ॥ सेवकने दिओ आणंदोजी ॥सा०॥ ५ ॥

श्रीअरनाथ जिन स्तवन।

(समयाँरे साद दिइरे देव, (अथवा) किसके चेले किसके पुत–ए देशी)

अरजिन गजपुर वर शिणगार, तात सुदर्शन देवी मल्हार ॥ साहिब सेवियें ॥ मेरे मनको प्यारो सेवियें ॥ त्रीश धनुष प्रभु उंची काय, वरष सहस चोराशी आय ॥ सा० ॥ १ ॥ नंदावर्त विराजे अंक, टालें प्रभु भव भावना आतंक[3] ॥ सा० ॥ एक सहसथ्यूं संयम लीध, कनक वरण तनु जगत प्रसिद्ध॥ सा० ॥ २ ॥ समेत शिखर

---

१. बोकडानुं. २. आंख्य. ३. रोग.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिरि सवल उछाह, सिद्धिवधूनो करेरे विवाह ॥ सा० ॥ प्रभुना मुनि पंचास हजार, साठसहस साध्वी परिवार॥सा०॥३॥ यक्ष ईंद्र प्रभु सेवाकार, धारिणी शासननो करे सार ॥ सा० ॥ रवि उगे नासे जिम चोर, तिम प्रभुना ध्यानें करम कठोर ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं सुरतरु चिंतामणि सार, तुं प्रभु भगति मुगति दातार ॥ सा० ॥ बुध जशविजय करे अरदास[1] दीठें परमानंद विलास ॥ सा० ॥५॥

श्रीमल्लिनाथ जिन स्तवन ।

(प्रथम गोवालातणे भवेजी, ए देशी)

मिथिला नयरी अवतर्योंजी, कुंभ नृपति कुलभाण[2] ॥ राणी प्रभावती उर धर्योंजी, पचवीश धनुष प्रमाण ॥ भविक जन वंदो मल्लि जिणंद,जिम होयें [3]परम आनंद भविक जन०॥१॥लंछन कलश विराजतोजी, नील वरण तनु कांति॥संयम लीये शत त्रणश्युंजी भाजे भवनी भ्रांति भ० वं० ॥ २ ॥ वरष पंचावन सहसनुंजी, पालीए पूरण आय ॥ समेतशिखर शिवपद लहुंजी, सुर किन्नर गुण गाय ॥ भ० वं० ॥ ३ ॥ सहस पंचावन साहुणीजी; मुनि चालीश हजार॥ वैरोटया सेवा करेजी, यक्ष कुबेर उदार ॥ भ० वं० ॥ ४ ॥ मूरति मोहनवेलडीजी, मोहे जग जन जाण ॥ श्रीनयविजय सुशीशनेजी, दिये प्रभु कोडि कल्याण ॥ भ० वं० ॥ ५ ॥

---

१. अरज. २. कुळमां सूर्य सरखां. ३ उत्कृष्ट.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन।

रसियानी (अथवा) प्रणमुं पास जिनेसर प्रेमशुं, ए देशी ॥

पद्मादेवी नंदन गुणनिलो, राय सुमित्र कुल चंद, ॥ कृपा-निधि ॥ नयरी राजगृही प्रभुजी अवतर्या, प्रणमें सुरनर वृंद ॥ कृपानिधि ॥ मुनिसुव्रत जिन भावे वंदियें ॥ १ ॥ [1]कच्छप लंछन साहिब शामलो, वीश धनुष [2]तनुमान ॥ कृ० ॥ त्रीश सहस संव-त्सर[3] आउखुं, बहु गुण रयण [4]निधान ॥ कृ० मु० ॥ २ ॥ एक सहस्सयुं प्रभुजी व्रत[5] ग्रहि, समेतशिखर लहि [6] सिद्धि ॥ कृ० ॥ सहस पंचास विराजे साहुगी, त्रीश सहस मुनि प्रसिद्धि ॥ कृ० मु० ॥ ३ ॥ नरदत्ता प्रभु शासनदेवता, वरुण यक्ष करे सेव ॥ कृ०॥ जे प्रभु भगति राता तेहना, विघन हरे नितमेव ॥ कृ० मु० ॥४॥ भावठ भंजन जन मन रंजनो, मूरति मोहनगार ॥ कृ० ॥ कवि जशविजय पयंपे भवभवे, ए मुज एक आधार ॥ कृ० ॥ मु० ॥५॥

श्रीनमिनाथ जिन स्तवन।

(काज सिध्यां सकल हवे सार, (अथवा) प्रभुपासनुं मुखडु जोवा ए देशी)

मिथिलापुर विजय नरिंद, वप्रासुत नमि जिनचंद ॥ [7]नी-

---

१ काचबानुं. २ प्रमाण. ३ वरष. ४ खजानो. ५ दिक्षा. ६ मोक्ष पाम्या ७ नीला कमलनुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुष्पल लंछन राजे, प्रभु सेव्यो भावठ भाजे ॥ १ ॥ धनुष पन्नर उंच शरीर, सोवन वान साहस धीर ॥ एक सहसश्युं लिये निरमाय,[1] व्रत वरष सहस दश आय ॥ २ ॥ समेतशिखर आरोही, पुहता शिवपुर निरमोही ॥ मुनि वीश सहस शुभ नाणी,[2] प्रभुना उत्तम गुण खाणी ॥ ३ ॥ वली साध्वीनो परिवार, एकतालीश सहस उदार ॥ सुर भृकुटि देवी गंवारी, प्रभु शासन सांनिधकारी ॥ ४ ॥ तुज कीरति जगमां व्यापी, तप तपे प्रबल प्रतापी ॥ बुध श्रीनयविजय सुसीस, इम दियें नित नित आसीस ॥ ५ ॥

श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ।

(ढाल फागनी)

समुद्र विजय शिवादेवी, नंदन नेमिकुमार ॥ शोरियपुर दश धनुषनुं, लंछन शंख सफार ॥ एक दिन रमतो आवियो, अतुलीबल अरिहंत ॥ जिहां [3]हरी आयुधशाळा, पूरे शंख महंत ॥ १ ॥ हरी भय भरि तिहां आवे,पेखे नेमि जिणंद॥सरिखें सम बल परखें, तिहां जिते जिनचंद ॥ आज राज ए हरशे, करशे अपयश भूरि ॥ हरी मन जाणी आणी, तव थइ गगने अडूरी ॥२॥ अणपरण्यें व्रत लेशे, देशे जग सुख एह॥हरी मत बीहे ईहे, प्रभुश्युं धर्मसनेह ॥ हरी सनकारी नारी, तव जन [4]मज्जन जंति ॥ मान्युं मान्युं परणवुं, इम सवि नारी कहंति ॥ ३ ॥ गुणमणि पेटी खेटी, उग्रसेन नृप पास॥

१ मायारहित २ ज्ञानी. ३ श्राकृष्णने धारण करवानां शस्त्रोनी जगाए ४ न्हावा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तव हरी [1]जाचें माचें, माथे प्रेमविलास ॥ तूर दिवाजे गाजें, छाजे चामर कंति ॥ हवे प्रभु आव्या परणवा, नवनवा उत्सव हंति ॥४॥ गोखे चढी मुख देखे, राजीमती भर प्रेम ॥ राग अमीरस वरषें, हरषे पेखी नेम ॥ मन जाणे ए टाणे, जो मुज परणे एह ॥ संभारे तो रंभा, सबल अचंभा तेह ॥ ५ ॥ पशुअ पुकार सुणी करी, इणि अवसरे जिनराय ॥ तस दुख टाली वाली, रथ व्रत लेवा जाय ॥ तव बाला दुख झाला, परवशि करेंरे विलाप ॥ कहियें जो हवे हुं छंडी, तो देश्यां व्रत आप ॥ ६ ॥ सहस पुरुषशुं संयम, लिये शामल तनु कंति ॥ ज्ञान लही व्रत आपे, राजीमती शुभ शंति ॥ वरष सहस आउखुं, पाली गढ गिरनार ॥ परण्या पूर्व महोत्सव, भव छांडी शिवनार ॥ ७ ॥ सहस अढार मुनीसर, प्रभुजीना गुणवंत ॥ चालीश सहस सुसाहुणी, पामी भवनो अंत ॥ त्रिभुवन अंबा अंबा, देवी सुर गोमेध ॥ प्रभु सेवामां [2]निरता, करता पाप निषेध॥८॥ [3]अमल [4]कमल दल लोचन,शोचनरहित निरीह।।[5]सिह मदन गज भेदवा, ए जिन अकल अबीह ॥ शृंगारी गुणधारी, ब्रह्मचारी शिर लीह ॥ कवि जशविजय निपुण, गुण गावे तुज निश दीह ॥ ९ ॥

---

१. भागे. २. तत्पर. ३. निर्मळ. ४. कमळनां पांदडां जेवां अणीयाळां नेत्रो. ५. कामदेवरुपी हाथीने मारवा सिंह जेवा छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

नयरी वाराणसी अवतर्यो हो, अश्वसेन कुलचंद ॥ वामानंदन गुणनिलो हो, पासजी शिव तरु कंद ॥ परमेसर गुण नितु गाइयें हो ॥ १ ॥ [1]फणिलंछन नव [2]कर तनु जिनजी, सजल [3]घनाघन वन्न ॥ संयम लियें शत तीनश्युं हो, सवि कहे ज्युं धन धन्न ॥ प० ॥ २ ॥ वरष एक शत आउखुं हो, सिद्धी समेत गिरीश ॥ सोल सहस मुनि प्रभुतणा हो, साहुणी सहस अडतीस ॥ प० ॥ ॥ ३ ॥ धरणराज पद्मावती हो, प्रभु शासन रखवाल ॥ रोग शोग संकट टले हो, नाम जपत जपमाल ॥ प० ॥ ४ ॥ पास आशपूरण अब मेरी, अरज एक अवधार ॥ श्रीनय विजय विबुध पय सेवक, जश कहे भवजल तार ॥ प० ॥ ५ ॥

॥ श्रीमहावीर जिन स्तवन ॥

तारहो तार प्रभु मुज सेवक भणी—ए देशी.

आज जिनराज मुज काज सिध्यां सवे, तुं कृपाकुंभ जो मुज्झ तूठो ॥ कल्पतरु कामघट कामधेनु मिल्यो, अंगणे अमियरस मेह वूठो ॥ आ० ॥ १ ॥ वीर तुं कुंडपुर नयर भूषण हुओ, राय सिद्धार्थ त्रिशला तनुजो ॥ सिंह लंछन कनक वर्ण कर सप्त धनु, तुज समो जगतमां को न दुजो ॥ आ० ॥२॥ सिंह परे एकलो धीर

---

१ साप. २ हाथ. ३ पाणीथी भरेला वादळ सरखो नीलवर्ण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संयम[1] ग्रहें, आयु बोहोत्तेर वरष पूर्ण पाली ॥ पुरी अपापायें निष्पाप शिववहू[2] वर्यो, तिहां थकी सर्व प्रगटी दीवाली ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ सहस तुज चउद मुनिवर महा संयमी, साहुणी[3] सहस छत्रीश राजे ॥ यक्ष मातंग सिद्धायिका वर सुरी, सकल तुज भविकनी भीति भाजे ॥ आ० ॥ ४ ॥ तुज वचन राग सुखसागरे[4] जीलतो, पीलतो माह मिथ्यात्व वेली ॥ आवीओ भाविओ धरमपथ हुं हवे, दीजियें परमपद होइ बेली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सिद्ध निशि दोह जो हृदयगिरि मुज रमें, तुं सुगुणलीह अविचल निरीहो ॥ तो कुमतरंग मातंगना यूथथी, मुज नही कोइ लवलेश बीहो ॥ आ० ॥ ६ ॥ शरण तुज चरणमें चरणगुणनिधि ग्रह्या, भव तरण करण दम शरम राखो ॥ हाथ जोडी कहें जशविजय बुध इश्युं, देव निज भवनमां दास राखो ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीयशोविजयोपाध्याय कृत चौद बोलनी चौविशी संपूर्ण ॥

॥ जुदा जुदा कवीयोना रचेला छुटक स्तवनो ॥

॥ श्रीऋषभजिन स्तवन ॥

आज तो वधाइ राजा, नाभि के दरबाररे ॥ मरुदेवाए बेटो जायो, ऋषभ कुमार रे ॥ आज० ॥ १ ॥ अयोध्यामां ओच्छव होवे, मुख बोले जयकार रे ॥ घननन घननन घंटा वाजे,

१ दीक्षा. २ मोक्ष. ३ साध्वीओ. ४ सुख समुद्रमां न्हातो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देव करे थेइकार रे ॥ आज० ॥ २ ॥ इंद्राणी मळी मंगळ गावे, लावे मोती माळ रे ॥ चंदन चर्चीं पाये लागे, प्रभु जीवो चिर-काळरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ नाभि राजा दानज देवे, वरसे अखंड धार रे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भंडाररे ॥ आज० ॥ ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, देवे रथ तोखाररे ॥ हीर चीर पीतांबर देवे, देवे सवि शणगार रे ॥ आज० ॥ ५ ॥ तिन लोकमें दिनकर प्रगट्यो, घर घर मंगळ माळरे ॥ केवळ कमला रुप निरं-जन, आदीश्वर दयाळरे. ॥ आज ॥ ६ ॥

॥ श्रीअजितनाथ स्तवन. ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो-ए देशी ॥

॥ आजिन जिणंद जुहारीये, साहेबा विजया राणीना नंद ॥ जिणंद मोरा हे ॥ सुर नर किन्नर तुम तणा, साहेबा सेवे पय अरविंद ॥ जिणंद मोरा हे ॥ अजित० ॥ १ ॥ जित शत्रु नृप लाडिलो ॥ साहे० ॥ जित शत्रु भगवान ॥ जिणं० ॥ जितशत्रु मुझ कीजियें ॥ सा० ॥ दीजियें वंछित दान ॥ जि० ॥ अजित० ॥ २ ॥ अंतराय पंचक टल्युं ॥ सा० ॥ हास्य षट्क अज्ञान ॥ जि० ॥ अविरति काम निद्रा तजी ॥ सा० ॥ तेम राग द्वेष अंतवान ॥ जि० ॥ अजि० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व दोष अढारए ॥ सा० ॥ त्यजी करवो तुम गुणसंग ॥ जि० ॥ केवलज्ञान विराजता ॥ सा० ॥ सादि अनंत अभंग ॥ जि० ॥ अजि० ॥ ४ ॥ तुं सकल परमे-सरू ॥सा०॥ तुं निजभूर शिवपद ॥ जि० ॥ तुम पद पद्मनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाकरी ॥ सा० ॥ चाहे चित्त नित्य रूप ॥ जिणं० ॥ अजित० ॥ ५ ॥ इति ॥

—:०:—

॥ श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन ॥

॥ सिद्धगिरी ध्यावो भविका सिद्धगिरी ध्यावो–ए देशी ॥

॥ वंदोरे भविका संभवनाथ जिणंदा, जितारि नरवर वंसे उग्यो दिणंदा ॥ लालन उग्यो दिणंदा[1] ॥ माता सेनादेवी उदरे अवतरिया, करम खपावी प्रभु भवजळ तरिया ॥ लालन भवजळ० ॥ १ ॥ अनोपम साहिब तोरी सेवा में पामी, तो लहि वंछित सुख संपद स्वामी ॥ लालन संपद० ॥ ताहरो दरिशण जिनजी लागे छे प्यारो, एक वार मोहि नेह निजरे निहाळो ॥ लालन निजरे० ॥ २ ॥ जिम दिनकर उग्ये कमळ विकासे, तिम तुम दीठे मोरुं मनडुं हीसे ॥ लालन मन० ॥तुमे निरागी माहरा मनडाना रागी, तुमशुं पुरव भवनी प्रीतडी जागी ॥ लालन प्रीतडी० ॥ ३ ॥ तुं मेरे दिलको जानी तुंही छे ग्यानी, माहरा प्रभुजी ताहरी अकळ [2]कहानी ॥ लालन अकळ० ॥ अकळ सरुप निरंजन कहीये, ताहरी आण[3] सदा शिर वहीये ॥ लालन सदा० ॥ ४ ॥ वाहाल धरी साहिब चाकरि कीजे, तो मन मनाव्या विण किम मन रीझे ॥ लालन किम० ॥ पंडित भेरुविजय गुरु चरणे, सेवक विनीत कहे राखो शरणे ॥ लालन कहे० ५ ॥ इति ॥

---

१ सूर्य. २ वात. ३ आज्ञा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीअभिनंदन जिन स्तवन ॥

॥ धुळेवा नगरमां पधारजो रे–ए देशी ॥

॥ बेकर जोडी विनवुं रे, अभिनंदन अवधाररे ॥ दयालराय॥ अंतरयामी माहरोरे, आवागमन निवाररे ॥ दयालराय ॥ बेकर ॥ १ ॥ आगम वचने आकरोरे, सांभळी करम विपाकरे ॥ दया० ॥ हुं शरणागत ताहरोरे, शरणे आयो ताकरे[1] ॥ द० ॥ बेकर०॥ २ ॥ मीट अमीणी जो करेरे, तो भाजे भवना भीडरे ॥ दया० ॥ परमेसर पीहर[2] पखेरे, कुण जाणे पर पीडरे ॥ दया० ॥ बेकर० ॥ ३ ॥ थे उपगारी शिर सेहरोरे, भयभंजण भगवंतरे ॥ दया० अरियण तोहिज औहटेरे, जो पखो करे बलबंतरे ॥ दया० ॥ बेकर० ॥ ४ ॥ हुं अपराधी उपरेरे, महिर करो महाराजरे ॥दया०॥ मेघ न जोवे वरसतोरे, सम विसमी जिनराजरे ॥ दया० ॥ बेकर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीसुमतिनाथ स्तवन ॥

॥ गरबानी देशी ॥

॥ हांरे वालहो सुमति जिणंद जुहारीरे, वारी जाउं भामणे रेलो ॥ हांरे प्रभु सुरतरु[3] फळीओ माहरेरे, गुणनिधी आंगणे रेलो ॥ १ ॥ हांरे मेंतो देवनो देव निहाळीरे, जीवन जगधणी रेलो ॥ हांरे प्रभु तेजे झळामल दीपेरे, ओपी जेम ओपणीरेलो

---

१ ताकीने. २ मावित्र. ३ कल्पवृक्ष.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ २ ॥ हांरे वाहला नयण रह्या लोभाइरे, मोह्युं मुज मनडुंरेलो ॥ हांरे प्रभु वाणी सरस रस पीधेरे, भाजे भव भूखडीरेलो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु जीवन जगदाधार रे, वाहला छो पतिरेला ॥ हांरे प्रभु महोदय पदवी आपो रे, कापो [1]दुरगतिरेलो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु अरज करे अरदासरे, आश ते पूरीयेरेला ॥ हांरे वाल्हा रसभर रसीओ कहावेरे, चतुर दुःख चूरीयेरेलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन ॥

॥ कमळरसझुमकडुं (अथवा) यात्रा नवाणु करीए सलुणा ए देशी ॥

श्री पद्मप्रभुजीने सेवियेरे, शिवसुंदरी भरतार ॥ कमळदळ आंखडीयां; मोहनशुं मन मोही रह्युंरे,रूप तणो नाह पार ॥ भमुहधनुं वांकडीयां ॥१॥ [2]अरुण कमळ सम देहडीरे, जगजीवन जिनराज ॥ वियणरस सेलडीयां; त्रीस पूरव लख आउखुंरे, सारो वंछित काज ॥ मोहन सुख वेलडीयां. ॥ २ ॥ सहिरो सवि टोळे मळीरे, सोळ सजी शिणगार, मळी सखी सेरडीयां; गुण गाती घुमरी दीयेरे, करे चूडी खलकार ॥ कमळमुख [3]गोरडीयां ॥ ३ ॥ मात सुसीमा उरे धर्योरे, मुज दिलडामां देव ॥ वस्यो दिन रातडीयां; कासंबीनयरी तणोरे, नाथ नमो नितमेव ॥ सुणा सखी वातडीयां ॥४॥ धनुष अढीसें शोभतोरे, उंचपणे जगदीश ॥ नमो साहेलडीयां; रामविजय प्रभु सेवतांरे, लहीये सयल जगीस ॥ वधे सुख वेलडीयां ॥५॥

१ खोटी गति. २ राता कमळ जेवी. ३ स्त्रीओ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ निंदामकरजो कोईनी पारकीरे–ए देशी ॥

॥ मुझ मन भमरो प्रभु गुण फूलडेरे, रमण करे दिन रातरे ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहामणारे, करजोडी कहुवातरे ॥ १ ॥ मनडुं ते चाहे प्रभु मलवा भणीरे, पण दीसे छे अंतरायरे ॥ जीव प्रमादीरे कर्म तणे वशेरें, ते केम मलवुं थायरे ॥ मनडुं० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवा योनिमांरे, भव अटवी गति चारेरे ॥ काल अनादि अनंत भमतां थकांरे, किमही न आवे पाररे ॥ मनडुं० ॥ ॥ ३ ॥ मारग बतावोरे साहेब माहेरारे, जेम आवुं तुम पायरे ॥ लाज वधारोरे सेवक जाणीनेरें, थो दरिसण जिनरायरें ॥ मनडुं० ॥ ॥ ४ ॥ मूर्ति ताहारी रूपें रूअडीरें, अनुभव पद दातारेरे ॥ नित्य लाभ प्रभुशुं प्रेमें वीनवेरे, तुमथी लहुं सुखसाररे ॥ मनडुं० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

——:०:——

॥ श्रीचंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

॥ कुंवर गंभारो नजरे देखताजी–ए देशी ॥

॥ तुं मनमोहन जिनजी माहरोजी, जगबंधव जगभाणरे ॥ करुणा नजरे निहालतांजी, होवे ते कोड कल्याणरे ॥ तुं मन० ॥ ॥ १ ॥ प्रगट्या ते पुरव पुन्यनाजी, अंकुरा आधाररे ॥ शशि शिरोमणी छे भलोजी, लंछन तस साधाररे ॥ तुं० ॥ २ ॥ खिण खिण मुलकने कारणेजी, महोदय मोटो थायरे ॥ अवलंब्या इच्छा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणीजी, जिनगुण जिनजी सहायरे ॥ तुं० ॥ ३ ॥ आव्या विलुद्धा जे रह्या जी, [1]याचक जन वलि दासरे ॥ माधुरता मधुर स्वरेजी, पूरीजे तेहनी आशरे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ तुजमुज अंतर छे नहिजी, जिम कस्तुरी घनवासरे ॥ चंदनता सुचंदनेजा, प्रेमे चतुर प्रकाशरे ॥ तुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीसुविधिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ आंखडीयेरे में आज शत्रुंजय दीठोरे–ए देशी ॥

॥ताहारी अजब शी जोगनी मुंद्रारे, लागे मुने मीठीरे॥ ए तो टाळे मोहनी निद्रारे, परतक्ष दीठीरे ॥ ए आंकणी ॥ लोकोत्तरथी जोगनी मुद्रा ॥ वाल्हा मारा ॥ निरुपम आसन सोहेरे ॥ सरस रचित शुकल ध्याननी धारे, सुरनरना मन मोहेरे ॥ लागे० ॥१॥ त्रिगडामां रतन सिंहासन बेसी, ॥ वाल्हा मारा ॥ चिहुं दिशे चामर ढळ वेरे ॥ अरिहंत पद प्रभुतानो भोगी, तो पण जोगो कहावेरे ॥ लागे० ॥ २ ॥ अमृत झरणि मीठी तुज वाणि ॥वा०॥ जेम आषाढो गाजेरे ॥ कान मारग थइ हियडे पेसी, संदेह मनना भांजे रे ॥ लागे० ॥ ३ ॥ कोडि गमे उभा दरबारे ॥ वा० ॥ जय-मंगल सुर बोलेरे ॥ त्रण भुवननि रिद्ध तुज आगे, दीसे इम तृणा तोले रे ॥ लागे० ॥ ४ ॥ भेद लहुं नहि जोग जुगतिनो

---

१ मागण–याचना करनार.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ वा०॥ सुविधी जिणंद वतावोरे ॥ प्रेमशुं कांति कहे करि करुणा, मुज मन मंदिर आवोरे ॥ लागे० ॥ ५ ॥ इति ॥

—:०:—

॥ श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ हीरजीगुरुवंदो (अथवा) विमलाचल वेगे वधावो–ए देशी ॥

॥ शीतलजिन सहजानंदी, थयो मोहनी कर्म निकंदी ॥ पर जाथि बुद्धि निवारी, परणामिक भाव समारी ॥ मनोहर मित्र ए प्रभु सेवो, दुनिआमांहि देव न एवो ॥ मनोहर० ॥ १ ॥ वरकेवलनांण विभासी, अज्ञान तिमिर भर नासी ॥ जयो लोकालोक प्रकाशी, गुण पज्जव वस्तु विलासी ॥ मनो० ॥ २ ॥ अक्षय थिति आव्याबाध, दानादिक लब्धि अगाध ॥ जेह साश्वत सुखनो स्वामी, जड इंद्रिय भोग विरामी ॥ मनो० ॥ ३ ॥ जेह देवनो देव कहावे, योगीश्वर जेहने ध्यावे ॥ जसु आणा सुरतरु वेली, मुनि हृदय आरामे फेली ॥ मनो० ॥ ४ ॥ जेहनी शीतलता संगे, सुख प्रगटे अंगो अंगे ॥ क्रोधादिक ताप समावे, जिन विजयाणंद सभावे ॥ मनो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रीयांसनाथ जिन स्तवन ॥

॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए–ए देशी ॥

वंदु जिन श्रेयांस, हंस तणी परे ॥ मुनिजन मन कमलें रमेए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १ ॥ मुज मन तरुअर छांह, स्वामी अनुसरो ॥ जनम सफल माहरो करो ए ॥२॥विश्नु नरेसर वंश, धजा तणी परे॥जेणे कीधो जगे गाजतो ए ॥ ३ ॥ निसुणि वयण मुज तात, हुं भमीयो घणुं। भव सायरनां पुरमांए ॥ ४ ॥ हवे निज पासे राखो, दाखो शुभ मति ॥ विनय करे इम विनती ए ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

॥ अनेहारे वाहालो वसे विमलाचलेरे—ए देशी ॥

॥ अने हारे म्हारो प्रभु दिये छे देशनारे, ते तो सांभळे छे भविजन्न ॥ समवसरण बेठा शोभतारे, भांखे चार मुखे सुप्रसन्न ॥ प्रभु दिये छे देशनारे ॥ १ ॥ अने हारे बारे परखदा तिहां मळीरे, सवि बेसे आपणे ठाय ॥ वाणी जोजन गामिनीरे, ए तो सुणतां आवे दाय ॥ प्रभु० ॥२॥अने हारे रुडां वयणडां नीकळेरे, धुनी मेघ परे गंभीर ॥ पामर वचने न मिले कइरे, उंचे शब्दे साहस धीर ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अने हारे पडछंदा उठे बोलनारे, अति सरलपणे अभिराम ॥ मालव कोशिक रागथीरे, जे आणे हियडुं ठाम ॥ प्रभु० ॥४॥ अने हारे श्रीवासुपूज्य जिन साहिबारे, महारी मिथ्या मतिने टाळ ॥ खुशाल मुनिने नित आपणोरे, तुमे जाणीने थाज्यो दयाळ प्रभु० ॥ ५ ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री विमलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ अबधु एसो ज्ञान विचारी–ए देशी ॥

॥ प्रभुजी मुज अवगुण मत देखो ॥ ए आंकणी ॥ राग दिशाथी तुं रहि न्यारो, हुं मन रागे घालूं ॥ द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालूं ॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ मोह लेश फरश्यो नही तुंहि, मोह लगन मुज प्यारी ॥ तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, ए पण रहिणी न्यारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ तुंहि निराश भाव पद साधे, हुं आशा संग विलुद्धो ॥ तुं निश्चल हुं चल तुं सूधो, हुं आचरणें उंधो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ तुज स्वभावथी अवळा माहरा, चरित्र सकळ जगें जाण्या॥ भारेखमा प्रभुने ते कहेतां, न घटे मुहढे आण्या ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रेम नवल जो होय सवाइ, विमलनाथ मुख आगे ॥ कांति कहे भव वन उतरतां, तो वेळा नवि लागे ॥प्रभु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री अनंतजिन स्तवन ॥

मूरतिहो प्रभु मूरति अनंतजिणंद, ताहरीहो प्रभु ताहरी मुज नयणे वसीजी; समताहो प्रभु समतारसनो कंद, सहजेहो प्रभु सहजे अनुभव रसलसीजी ॥ १ ॥ भवदवहो प्रभु भवदवतापित जोव, तेहनेहो प्रभु तेहने अमृतघन समीजी; मिथ्याविषहो प्रभु मिथ्या विषनी खीव, हरवाहो प्रभु हरवा जांगुलमणी रमीजी ॥ २ ॥ भा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहो प्रभु भावचिंतामणी एह, आतमहो प्रभु आतमसंपती आपवाजी; एहिजहो प्रभु एहिज शीवसुखगेह, तलीहो प्रभु तलालंबन थापवाजी ॥ ३ ॥ जायेहो प्रभु जाये आश्रव चालि; दीठेहो प्रभु दीठे संवर वधेजी; रतनहो प्रभु रतन त्रयी गुणमाळ, अध्यातमहो प्रभु अध्यातम साधन सधेजी ॥ ४ ॥ मीठीहो प्रभु मीठी सूरति तुज, दीठी हो प्रभु दीठी रुचि बहु मानथीजी; तुज गुणहो प्रभु तुज गुण भासन युक्त, सेवेहो प्रभु सेवे तसु भय भय नथीजी ॥ ५ ॥ नाभेहो प्रभु नामे अद्भुत रंग, ठवणाहो प्रभु ठवण दीठां उल्लसेजी; गुणआस्वादहो प्रभु गुणआस्वाद अभंग, तन्मयहो प्रभु तन्मयताए जे धसेजी ॥ ६ ॥ गुणअनंतहो प्रभु गुणअनंतनो वृंद, नाथहो प्रभु नाथ अनंतने आदरेजी; देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आणद, परमहो प्रभु परम महोदय ते वरेजी ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

॥ मोतीडानी-देशी ॥

॥ धरम जिणंद तुमे लायक स्वामी, मुज सेवकमां पण नहि खामी ॥ साहिबा रंगीला हमारा, मोहना रंगीला ॥ [1]जुगति जोडि मळी छे सारी, जोज्यो हियडे आप विचारी ॥ साहिबा० ॥ १ ॥ भगतवत्सळ ए विरुद तुमारो, भगति तणो गुण अचळ अमारो ॥ सा० ॥ तेहमां को विवरो[2] करि कळशे, तो मुज गुण अवरयमां भळशे ॥ सा० ॥ २ ॥ मूळ गुण तुं निराग कहावे, ते किम राग

१ जोइए तेवी. २ फोड.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुवनमां आवे ॥ सा० ॥ वळी छोटे[1]घट मोटो न मावे, ते में आण्यो सहज स्वभावे ॥ सा० ॥ ३ ॥ अनुपम अनुभव रचना कीधी, इम शाबाशी जगमां लीधी ॥ सा० ॥ अधिकुं ओछुं अति आसंगे, बोल्युं खमज्यो प्रेम प्रसंगे ॥ सा० ॥ ४ ॥ अमथी होड हुये किम भारी ॥ आश घरुं अम नेट तुमारी ॥ सा० ॥ हुं सेवक तुं जग विसराम, वाचक विमळ तणो कहे राम ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री शांतिजिन स्तवन ॥

(घेरे आवोजी आंबो मोरीओ–ए देशी.)

श्रीशांतिजिनेसर साहिबा, तुज नाठे किम छूटाय्ये; में लीधी केडज ताहरी, तेह प्रसन्न थयें मुकाय्ये ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं वीतरागपणुं दाखवी, भोळा जनने भूलावे; जाणीने कीधी प्रतिगन्या, तेहथी कहो कुण डोलावे ॥ श्री० ॥२॥ कोइ कोइने केडें मत पडो, केडे पडयां आणे वाज; निरागी प्रभु पण खिंचीआ, भगते करी में सात राज ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मनमांहिं आणी वासीओ, हवे किम निसरवा देवाय; जो भेद रहित मुजशुं मिळे, तो पलकमांहि छुटाय ॥ श्री० ४ ॥ कबजे आव्या किम छूटशो, कीधा विण कहण कृपाळ; तो श्युं हठवाद लेई रह्या; कहे मान करो खुसियाळा॥श्री०॥५॥

---

१ न्हाना घडामां.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

॥ लाल सुरंगीरे साहीबोरे–ए देशी ॥

॥ जिनजी रात दिवस नित सांभरेरे, देखी ताहरु रुप लाल॥ लाल गुलाल आंगी बनी रे ॥ तुज गुण ज्ञानथी माहरुंरे, जाण्युं शुद्ध स्वरुप लाल ॥ लाल० ॥ १ ॥ जिनजी तेह स्वरुपने साधवारे, कीजे जिनवर सेव लाल ॥ द्रव्यभाव दुभेदथीरे, द्रव्यथी जिम करे देवलाल ॥ लाल० ॥ २ ॥ जिनजी मोगर मालती केवडोरे, ल्यो म्हारा कुंथुजिनने काज लाल ॥ लाखेणोरे टोडर[1] करीरे, पूजो श्री जिनराज लाल ॥ लाल० ॥ ३ ॥ जिनजी केसर चंदन धूपणांरे, अक्षत[2] नैवेदनीरे लाल ॥ द्रव्यथी जिननी पूजा करोरे, निरमल करीने शरीर लाल ॥ लाल० ॥ ४ ॥ जिनजी द्रव्यथी इम जिन पूजा करीरे, भावथी रुपातीत स्वभाव लाल ॥ निःकर्म्मा ने निःसंगतारे, निःकामी वेद अभाव लाल ॥ लाल० ॥ ५ ॥ जिनजी आवर्ण सवि थया वेगळा रे, घाती अघाती स्वरुप लाल ॥ बंध उदय ने सत्ता नहि रे, निज गुणना थया भूप[3] लाल ॥ लाल० ॥६॥ जिनजी मुज आतम तुज सारिखोरे, करवाने उजमाल लाल ॥ ते जिन उत्तम सेवथीरे, पद्मने मंगल माळ लाल ॥ लाल० ॥ ७ ॥ इति ॥

—o—

१ हार. २ अखंड चौखा. ३ राजा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री अरनाथजिन स्तवन ॥

(गायजोरे गुणनी रास–ए देशी.)

गायजोरे धरी उल्लास, अर जिनवर जगदीशरुरे; मानजोरे एह महंत, महियलमांहिं वालेसरुरे ॥ १ ॥ धाइयोरे दृढ करी चित्त, मनवंछित फळ पूरशेरे; वारजोरे [1]अवरनी सेव, एहीज संकट चूरशेरे ॥ २ ॥ सिंचजोरे सुमतनी वेल, जिनगुण ध्याननीरे; घणुं संपजेरे समकितफूल, केवळफळ रळियामणुंरे. ॥ ३ ॥ पुन्यथीरे देवीनंद, नयणे नरखो नेहथीरे; उपनोरे अति आणंद, दुख अलगां थयां जेहथीरे॥४॥शोभतीरे त्रीश धनुषनी काय, राय सुदरिशन वंशनोरे; आउखुंरे जिनजीनुं सार, सहस चोराशी वरसनुंरे ॥ ५ ॥ जिनराजनेरे करुं प्रणाम, काज [2]सरे सवि आपणुंरे; भावथीरे भगति प्रमाण, दरिशण फळ पामे घणुंरे ॥ ६ ॥ सेवजोरे अरपद [3]अरावद, जो शिवसुखनी [4]कामनारे; राखजोरे प्रभु रदय मोझार, राम वधे जग नामनारे ॥ ७ ॥

॥ श्री मल्लीनाथजिन स्तवन ॥

(कौण भरे रो जल कौण भरे दल वादलीरो पाणी
कौण भरे–ए देशी.)

कौन रमे चित कौन रमे, मल्लिनाथजी विना चित कौन रमे;
माता प्रभावती राणी जायो, कुंभनृपतिसुत [5]कामदमे ॥म० ॥ १ ॥

---

१ बीजानी, २ फतेह थाय. ३ अरनाथजीनां चरणकमळ, ४ इच्छा, ५ कामदेवने नाश करनार.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामकुंभ जिम [२]कामित पूरे, कुंभलंछन जिन मुख गमे ॥म० ॥२॥ मिथिलानयरी जनम प्रभुको, दर्शन देखत दुःख शमे ॥ म० ॥ ३॥ घेबरभोजन सरसां प्रीस्यां, कुकस बाकस कौण जिमे ॥ म० ॥४॥ नील वरण प्रभु कांतिके आगे, मरकति मणि छवि दूर भमें ॥ म० ॥ ५ ॥ न्यायसागर प्रभु जगनो पामी, हरि हर ब्रह्मा कौण नमे ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ घोडी ता आइ थांरा देशमे मारुजी–ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत शुं मोहनी ॥ साहिबजी ॥ लागी मुज मन [२]जोर हो ॥ शामलडी सूरती मन मोहियो साहिबजी ॥ व्हालपणुं प्रभुथी सहि ॥ साहिबजी ॥ कलेजानी कोरहो ॥ शाम० ॥ १ ॥ अमने पूरण पारखुं ॥ सा० ॥ ए प्रभु अंगीकार हो ॥ शाम० ॥ देखी दिल बदले नहि ॥ सा० ॥ [३]अमचा दोष हजार हो ॥ शाम० ॥२॥ निरगुण पण बांहि ग्रह्या ॥ सा० ॥ गिरुआ छंडे केमहो ॥शाम०॥ विषधर[४] काळा कंठमे ॥ सा० ॥ राखे इश्वर जेम हो ॥ शाम० ॥३॥ गिरुआ साथे गोठडी ॥ सा० ॥ ते तो गुणनो हेतहो ॥ शाम० ॥ करे चंदन निज सारिखो ॥ सा० ॥ जिम तरुअरनो खेतहो ॥ शाम० ॥ ४ ॥ ज्ञानदशा परगट थइ ॥ सा० ॥ मुज घट मिलियो इश हो ॥ शाम० ॥ विमल विजय उवज्झायनो ॥सा०॥ राम कहे शुभ शिष्य हो ॥ शाम० ॥ ५ ॥ इति ॥

१ मनकांमना, २ बहुज. २ अमारा. ३ काळा नागने. ४ महादेव.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री नमिजिन स्तवन ॥

॥ दोसीडाने हाटे जाज्यो लाल, लाल कसूंबो भींजे छे–ए देशी ॥

विजयनरेसर नंदन लाल, विप्रासुत मन मोहे छे; [1]नीलोत्पल लंछन पाए लाल, सोवनवान तनु सोहे छे ॥१॥ मिथुलानयरीनो वासी लाल, शिवपुरनो मेवासी छे; मुनी वीश सहस जस पासे लाल, तेज कळा सुविलासी छे ॥ २ ॥ प्रभु पंनर धनुष परिमाणे लाल, जगमां कीरत व्यापी छे; प्रभु जीवदयानें थाणें लाल, सुमतिलता जिने थापी छे ॥ ३ ॥ नमिनाथ नमो गुणखाणी लाल, अक्षय वळी अविनासी छे; तेणे वात सकळ ए जाणी लाल, जेहने आशा दासी छे ॥४॥ श्री सुमतिविजय गुरु नामे लाल, अविचळ लीला लाधी छे; कहे रामविजय जिन ध्याने लाल, कीरत कमळा वाधी छे ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

॥ सुग गोवाळणी गोरसडावाळी रे उभी रहेने–ए देशी ॥

॥ शामळीया लाल तोरणथी रथ फेरयो कारण कहोने, गुण गिरुआ लाल मुनने मूकी चाल्या दरिसण द्योने ॥ ए आंकणी ॥ हुं छुं नारि ते तमारी, तुम्हे सें प्रीति मूकी अम्हारी ॥ तुम्हे संयम स्त्री मनमां धारी ॥शामळीया०॥१॥ तुम्हे पशु उपर किरपा आणी, तुम्हे माहरी वात न को जाणी ॥ तुम्ह विण परणुं नहीं को प्राण

---

१ नीला कमळनुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ शाम० ॥ २ ॥ आठ भवोनी प्रीतलडी, मूकीने चाल्या रोतलडी ॥ नहीं सज्जननी ए रीतलडी ॥ शाम० ॥ ३ ॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, तो कर[1] मूकावुं हुं मांथे ॥ पण जावुं प्रभुजीनी साथे ॥ शाम० ॥ ४ ॥ इम कही प्रभु हाथे व्रत लीधो, पोतानो कारज सवि कीधो ॥ पकडयो मारग एणे शिव सीधो ॥ शाम० ॥ ५ ॥ चोपन दिन प्रभुजी तप करीओ, [2]पणपन्ने केवल वर धरीओ ॥ पण सत [3]छत्रिशथुं शिव वरिओ ॥ शाम० ॥६॥ इम त्रण कल्याणक गिरनारे, पाम्या ते जिन उत्तम तारे॥ जो पाद पद्म तस शिर धारे ॥ शाम० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीये, जास सुगंधीरे काय–ए एशी॥

॥ नयरी वणारसी साहेवो, प्रभुजी पार्श्व जिणंद ॥ जग दा नंदन चंद, जगतगुरु राजतो, भविजन नयणानंद ॥ १ ॥ कामित[4] पूरण सुरतरु, प्रभुजी परम आधार ॥ दुःख दावानल वार, जगतगुरु तुं जयो, सजल जलद सुखकार ॥ २ ॥ तुज दरिसणथी रुची रागथी, प्रभुजी परम कृपाल ॥ पामुं ग्यान रसाल, जगतगुरु सेवतां, चरित्र गुण सुविशाळ ॥ ३ ॥ मुख मटके जग वस्य करयो, प्रभुजी परम पुनीत ॥ वामादेवी सुत प्रीत, जगतगुरु माहरो, अश्वसेन सुविनीत ॥ ४ ॥ अतित अनागत जिनपति, प्रभुजी जे

---

१ हाथ. २ पंचावन. ३ पांचशे छत्रीशथी. ४ मनना इच्छा पूरण करवाने कल्पवृक्ष सरखा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्तमान ॥ तुज वंदन गुन ग्यान, जगतगुरु ते सवे, प्रणमुं परम निधान ॥ ५ ॥ गणधर मुनिवर प्रमुख जे, आद्य अंत परिवार ॥ ते वंदु सुविचार, जगत गुरु ध्याइए, [1]फणिपति लंछन सार ॥६॥ पार्श्वप्रमुख जे यक्ष छे, प्रभु तीरथ रखवाळ ॥ दीजे दीनदयाळ, जगतगुरु चतुरने, चरणरी सेवा रसाळ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

॥ गायो गायोरे शंखेश्वर साहिब गायो-ए देशी ॥

॥ त्रिशला नंदन चंदन शीतल, सरीस सोहे शरीर ॥ गुण मणि सागर नागर गावे, राग धन्याश्री गंभीररे ॥ प्रभु वीर जिनेसर पाम्यो ॥१॥ शासन वासित बोधे भविकने, तारे सयल संसार ॥ पावन भावना भावति कीजे, अमो पण आतम सारेरे ॥ प्रभु वीर० ॥२॥ नायक लायक तुम विण बीजो, नवी मळियो आकाळ ॥ तारक पारक भव भय केरो, तुं जग दीन दयाळरे ॥प्रभु०॥३॥ अकळ[2] अमाय[3] अमल[4] प्रभु ताहरो, रुपातीत विलास ॥ ध्यावत लावत अनुभव मंदिर, योगीसर शुभ भासरे ॥प्रभु०॥४॥ वीर धीर शासन पति साधो, गातां कोडि कल्याण ॥ कीरति विमल प्रभु परम सोभागी, लक्ष्मी वाणी प्रमाणरे ॥ प्रभु वीर जिनेसर पाम्यो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री रुषभदेव जिन स्तवन ॥

॥ हाररो हीरो-ए देशी ॥

प्रथमजिणेसर पूजवा, सहियर म्हारी अंग उलट धरी आवी

---

१ साप. २ न कळी शकाय एवो. ३ माया रहित. ४ निर्मळ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो, केसर चंदन [1]मृगमदे, स० सुंदर आंगी बनावीहो ॥ १ ॥ सहज सलूणो म्हारो, शमसुखलीनो म्हारो, ग्यानमां भीनो म्हारो साहिबो, सहियर म्हारी जयो जयो प्रथमजिणंदहो॥ए आंकणी॥ धन्य मरुदेवी कुखने स० वारीजाउं वार हजारहो; सर्वशिरोमणीनें तजी, स० जिहां प्रभु लीए अवतारहो ॥ सह० ॥ २ ॥ दायक नायक जन्मथी, स० लाज्यो [2]सुरतरु वृंदहो, युगला धरम निवारणो स० जे थयो प्रथम नरिंदहो ॥ सह० ॥ ३ ॥ लोकनीति सहु शीखवी, स० दाखवा मुक्तिनो [3]राहहो; राज्य भळावी पुत्रने, स० ॥ थाप्यो धर्म प्रवाह हो. ॥ सह० ॥ ४ ॥ संयम लेइ संचर्यो, स० वरस लगे विणआहारहो; शेलडी रस [4]साटे दीओ, स० श्रेयांसने सुख सारहो ॥ सह० ॥ ५ ॥ मोटा महंतनी चाकरी, स० निष्फळ कदिय न थायहो ॥ मुनिपणे नमि विनमी कर्या, स० खिणमां खेचरराय हो. ॥ सह० ॥ ६ ॥ जननीनें कीओ भेटणो, स० केवळरत्न अनूपहो; पहिली माता मोकली, स० जोवा शिववहु रुपहो ॥ सह० ॥ ७ ॥ पुत्र नवाणुं परिवर्यो, स० भरतना नंदन [5]आठहो; आठकरम [6]अष्टापदे, योगनिरोधे नाठहो ॥ सह० ॥ ८ ॥ तेहनो बिंब सिद्धाचले, स० पूजो पावन अंगहो; क्षमाविजय जिन निरखतां, स० उछळे हरख तरंगहो ॥ सह० ॥ ९ ॥

---

१ कस्तूरी. २ कल्पवृक्ष. ३ मार्ग. ४ बदले. ५ पुत्र ६ अष्टापद तीर्थ उपर.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ आवो आवो पासजी मुज मलीआरे–ए देशी ॥

शांति प्रभु विनति एक मोरी रे, तारी आंखडी कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे; राणी अचिरादेवी माय रे ॥ तुं तो गजपुर नगरीनो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांति विराजे रे, मुकुटे हीरा मणि छाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रभु चालीश धनुषनी काया रे, भवि जनना दिलमां भाया रे ॥ कांइ राज राजेसर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रभु माहारा छो अंतरजामी रे, करुं विनति हुं शिरनामी रे ॥ चउद राजना छो तुमे स्वामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ प्रभु पर्षदा बारे मांहे रे, दीये देशना अधिक उच्छाहें रे ॥ प्रभु अंगीए भेटया उमाहे ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका बहु पुण्यवंता रे, शुभ करणी करे महंता रे ॥ शांतिनाथना दरिसण करता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अढार अट्ठाणुंओ सार रे, मास कल्प कर्यो तिणि वाररे ॥ सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमिजिन स्तवन ॥

॥ सखी तुमे देखोरे साम बना–ए देशी. ॥

सेहेसावनमां एक दिन स्वामी, नेमि समोसर्या ॥ श्री पति साथे राजुल वंदी, बोले पीयु प्यारारे ॥ वालाजी अमे आव्यारे आश भर्यो ॥१॥ जान सजी करी जादव जुत्ते, तोरण रण रझळ्या ॥ मंदिर देखी मोहन चाल्या, मेली आशभर्या रे ॥ वालाजी० ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आठ भवंतर प्रेम प्रकाशी, नवमे निराश कर्या ॥ संयम साधन सांइ सलुणा, अमने निराश कर्या रे ॥ वालाजी० ॥३॥ परहरी प्रीतम नेम रसीले, राजुल रोष भर्या ॥ निधणीआती नारी सुणीने, अबुध जनम उधर्या रे वालाजी० ॥ ४ ॥ दिन पंचावन प्रेम विलुधा, वरस विजोग वल्या ॥ दिन दयालु दरशन फरीने, पुरण आज उर्या रे ॥ वालाजी० ॥ ५ ॥ भोग सरोग विजोग भवोभव, देखी दिलमां उर्या ॥ सासय सुख सगपण मेल्युं, शिरपर हाथ धर्या रे ॥ वालाजी० ॥६॥ प्रितम पालव पलक न छोडुं, पतिव्रताए वर्या ॥ समता स्वामिणी भोगवे भामनि, न रहे खीजव छर्या रे ॥वालाजी० ॥ ७ ॥ केवळलच्छीमां भाग हमारो, अंतर हेळे हल्या ॥ एम वदंति पुनःपनोति, संजम लेइ विचर्या रे ॥ वालाजी० ॥ ८ ॥ केवळ पामी राजुल नेमि,सादि अनंत मल्या॥श्री शुभवीर रसिला साहेब, समरे काज सर्या रे ॥ वालाजी० ॥ ९ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

मोहन मुजरो लेजो राज, तुम सेवामां रेहेशु ॥ वामानंदन जगदा वंदन, जेह सुधारस खाणी ॥ मुख मटके लोचनके लटके, लोभागी इंद्राणी ॥ मोहन० ॥ १ ॥ भव पटण चीहु दीशी चारे गति, चोराशी लाख चौटा ॥ क्रोध मान मायाने लोभादिक, चोवटीआ अति खोटा ॥ मोहन० ॥ २ ॥ मिथ्या मेतो कुमति पुरोहित, मद-नसेनाने तोरे ॥ लांच लइ लाख लोक संतापे, मोहकंदर्पने जोरे ॥ मोहन० ॥ ३ ॥ अनादि निगोदनो बंधी खाणो, तृष्णा तापे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राख्यो ॥ संज्ञा चारे चोकी मेली, वेद नपुंसक वांको ॥ मोहन० ॥ ४ ॥ भवस्थिति कर्म विवर लइ नाठो, पुन्य उदय पण वाधो ॥ स्थावर विकलेंद्रीपणुं ओलंगी, पंचेंद्रीपणुं लाधो ॥ मोहन० ॥ ५ ॥ मानवभव आरज कुळ सद्गुरु, विमळ बोध मल्यो मुजने ॥ क्रोधादिक रिपु शत्रु विणाशी, तेणे ओलखाव्यो तुजने ॥ मोहन० ॥६॥ पाटणमांहे परम दयालु, जगत विभुषण भेटया ॥ सतर वाणुं शुभ परिणामे, कर्म कटीन बल मेटया ॥ मोहन० ॥ ७ ॥ समकित गज उपसम अंबाडी, ज्ञान कटक बल कीधुं ॥ क्षमाविजय जिन चरण रमण सुख, राज पोतानुं लीधुं ॥ मोहन० ॥ ८ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

॥ तोरण आइ क्युं चले रे-ए देशी ॥

सुत सिद्धारथ भूपनो रे, त्रिशला नंदन वीर सलुणा; हरि लंछन प्रभु राजतो रे, कंचनवान शरीर सलुणा ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम नव निधि थाय, स० ॥ १ ॥ शासन नायक वीरजी रे, जन्म्या श्री जगदीश स०; चरण अंगुठे कंपावीओ रे, तव इंद्र करे रीस स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम संपत्ति आय. स० ॥ २ ॥ तेहना तेजथुं त्रासीउं रे, तम जइ पेठुं गुहंत स०; अवधिनाणे करी नीरखे रे, बहु बळ वीर कहंत स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम कर्मनो नाश स० ॥ ३ ॥ मोहवशे करी माहरा रे, रह्या प्रभु घरवास स०; भोग तजी दीक्षा लहे रे, आज्ञा लइ नंदी पास स०॥ जिम जिम ए प्रभु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवीए रे, पाप पटल सवि जाय स० ॥ ४ ॥ काउसगध्याने प्रभु रह्या रे, मांड्युं कर्मशुं युद्ध स०; सवि उपसर्ग हठावीआ रे, शिव सुंदरीशुं लुब्ध स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम लहे बहु मान स० ॥ ५ ॥ क्रोड देव सेवा करे रे, जळनिधि रंग तरोल स०, मुज मन मंदिर दीपशुं रे, करता रंग झकोल स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम पूजनिक थाय स० ॥ ६ ॥ खडां खडां केवळ लह्या रे, शिवरामाना कंत स०; समवसरण देवे रच्युं रे, देशना सुणी हरखंत स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम धर्म सनेह स० ॥ ७ ॥ चार अघाती क्षये करी रे, पाम्या भवनो पार स०; राग द्वेष करी खुंचीओ रे, कृपा करी मुज तार स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम वंछित थाय स० ॥ ८ ॥ हुं फंदी मोहे पीडीओ रे, मोह निद्रामांहे सुप्त स०; परमेश्वर सन्मुख जुओ रे, हुं मागुं तुम हेत स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम देव हजुर स० ॥ ९ ॥ श्री गुरु क्षेमना शासनने रे, जे सेवे ते धन्य स०; तस विनय करी वीनवे रे, हर्ष धरी एक मन स० ॥ जिम जिम ए प्रभु सेवीए रे, तिम तिम सुख विशेष स० ॥ १० ॥

॥ श्री साधारण जिन स्तवन ॥

॥ भलाजी मेरो नेम चल्यो गीरनार–ए देशी ॥

मेरे दिल आय वसो, माहरी अरज सुणो जिनराज ॥ मेरे दिल आय वसो ॥ ए आंकणी ॥ सकल सुरासुर नर विद्याधर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आय खडे तुम पाय ॥ मेरे दिल आय वसो ॥ १ ॥ दास सभाव करी जो देखो, तो भव भवनां दुःख जाय ॥ मेरे० ॥ २ ॥ दीन उद्धार धुरंधर तुम सम, अवर न को कहेवाय ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुझ सम करुणा ठाम न कोइ, इयें न करो सुपसाय ॥ मेरे० ॥ ॥ ४ ॥ देतां दाम न वेसे कांइ, उणीम कांइ न थाय ॥ मेरे० ॥ ॥ ५ ॥ जे जेहना ते तेहना आखर, जिहां तिहां चित्त न बंधाय ॥ मेरे० ॥ ६ ॥ पग कावे एक सावे बोले, सुणी मनमां सुख थाय ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ माहरे छे ते प्रगट करतां, प्रभु तुज नाम सुहाय ॥ मेरे० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल प्रभुस्युं इम विनति, करतां पाप पलाय ॥ मेरे० ॥ ९ ॥ अनुभव लीला सुंदरी सहेजे, धाइ मिले गले आय ॥ मेरे० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ श्री साधारण जिन स्तवन ॥

॥ चंद्राप्रभुजीसे ध्यानरे मोरी लागी लगनवा–ए देशी ॥

॥ लग गइ अखीयां मेरीरे, म्हारो नाथजी जागे ॥ पेखी मूरतियां तेरीरे ॥ म्हारो० ए आंकणी ॥ प्रभु गुणनंदन वनहनि कुंजमां, खेलत चेतना प्यारीरे ॥ म्हारो० ॥१॥ [1]विकसित कज परे होवत छतीयां, प्रसरति मन सुखकारीरे ॥ म्हारो० ॥२॥ रोम रोम तनु कंचुक उल्लसित, निकसित भ्रांति विचारीरे म्हारो० ॥३॥ [2]रसना गुण पार न पावत, करत विनतीयां धारीरे ॥ म्हारो० ॥ ४ ॥ रहत

---

१ विकस्वर कमलनी पेरे. २ जीभ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न दुश्मन दाव न फावत, तुम्ह सूरतीयां भारीरे ॥ म्हारो० ॥५॥ अनुभव नयणे जिम जिम जोवत, प्रगट न पतीयां अरीआरीरे ॥ म्हारो० ॥ ६॥ गति छति थिति भगत वसुधाना, धारत न [1]भत्तीया भारीरे ॥ म्हारो० ॥ ७ ॥ ज्ञानविमल गुण उदय अहोनिश, होवत [2]नतिया सारीरे ॥ म्हारो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री साधारण जिन स्तवन ॥

॥ कनक कमल पगलां ठवेंए-ए देशी ॥

॥ श्री जिनवरने वंदनाए, करतां लाभ अनंत तो ॥ स्वामि सोहामणाए ॥ भव भयनां दुःख भांजवाए, समरथ तुमे गुणवंततो ॥ स्वामि० ॥ तारक तुम सम कोइ, न दीठो भूतलेए ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुमे उपकार घणा कर्याए, कहेतां नावे पारतो ॥स्वामि०॥ आ संसार विहामणो ए, उतारों तस पार तो ॥ स्वामि० ॥ २ ॥ जाण कने शुं याचीए ए, जे जाणे त्रिण कह्ये वाततो ॥स्वामि०॥ पण एम कहे माग्या विनाए, नवि पीरसे निज मात तो ॥स्वामि० ॥ ३ ॥ ते माटे हुं विनवुं ए, आपो तुम पद सेवतो ॥ स्वामि० ॥ ढील किशी करो एवडीए, दायक छो स्वयमेव तो ॥ स्वामि० ॥४॥ ज्ञानविमल सुख संपदाए, शुभ अनुबंधी जाणतो ॥ स्वामि० ॥ अधिक हुवे हवे आजथीए, प्रभु तुम वचन प्रमाण तो ॥ स्वामि०॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

---

१ भक्ति. २ नमस्कार.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री साधारण जिन स्तवन ॥

॥ संभव जिन अवधारीये–ए देशी ॥

॥ निस्नेही शुं नेहलो, कांइ कीधो केणीपेरे जाय हे मित्त ॥ एक पखो केम कीजते, कांइ जनमां हांसी थाय हे चित्त ॥ कांइ जाणे क्युं बनी आवहि, कांइ त्रिभुवन जननो नाथ हे चित्त ॥ कांइ मुगति पुरीनो साथ हे मित ॥ कांइ जाणे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लौकिक गुण गणजो होवे, तो रसनाए कह्या जाय हे चित ॥ पण लोकोत्तर गुणवंत छो, किम ते वर्ण न थाय हे मित्त ॥ कांइ० ॥२॥ तरीये लघु नदी बांह्यशुं, कांइ स्वयंभू रमण न तराय हे चित्त ॥ लघु नंग होय तो तोळीए, कांइ मेरु न तोल्यो जाय हे मित ॥ कांइ० ॥ ३ ॥ यद्यपि सुरनी सानिधे, कांइ ते पण सोहिलुं थाय हे चित्त ॥ पण प्रभु गुण अनंत अनंत छे, कांइ ते केम बोल्या जाय हे मित्त ॥ कांइ० ॥ ४ ॥ ज्ञानकला तेहवी नहि, कांइ संयम शुद्ध न थाय हे चित ॥ संघयणादिक दोषनो, कांइ अंतर बहु एम थाय हे मित ॥ कांइ०॥ ५ ॥ पण तुज भक्ति रीझशे, कांइ मुक्ति खेंचाने तेणहो चित्त ॥ चमक उपल जिम लोहने, कांइ कुमुदने चंद महेण हे मित ॥ कांइ० ॥ ६ ॥ एवुं जाणी बनी आवेलोने, नेक नजरशुं निरखतां, कांइ तुमशु लागे दाम हे चित्त ॥ ज्ञानविमल चढती कळा, कांइ वाधे जगे जश माम हे मित ॥ कोइ० ॥ ७ ॥ इति ॥

——×——

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री साधारण जिन स्तवन ॥

॥ राग–केदारो. आवो आवो जसोदाना कंथ अम घर आवोरे–ए एशी ॥

॥ भलुं कीधुं रे माहरा नाथ, मुज मन आव्या रे ॥ मिलीयो शिवपुर साथ, सविसुख पाव्यारे ॥ सुप्रसन्न थइने आज, दरिसन दीधुंरे, आ मानवना अवतार, तणुं फल लीधुं रे ॥१॥ तुज शासन प्रतीते, में हित जाणीरे ॥ छे यदि अगम अथाह, पणे चित आणी रे ॥ अनेकांत नयरूप, जे तुम वाणीरे ॥ भाषक अवर न कोइ, अनोपम नाणीरे ॥ २ ॥ करुणावंत कृपाल, कृपा हवे कीजे रे ॥ भव भव एहिज रंग, अभंगे दीजे रे ॥ श्री जिनवर महाराज, साहिब सुणीये रे ॥ भाव मने[1]मन जाणी, घणुं शुं भणीयेरे ? ॥ ३ ॥ शुं बहु भाख्ये होइ, सेवक गणीयेरे ॥ देखी दोष अनेक ए, नवि अवगणीयेरे ॥ सेवकनी सवि लाज, स्वामी वधारेरे ॥ भक्ति आतुरता भाव, ए व्यवहारेरे ॥४॥ आप सरुप न कोइ, केने आपेरे ॥ पण सहायने हेत, ध्याने थापे रे ॥ जेम रविथी पंकजवास, बंधन विघटेरे ॥ तेम ज्ञानविमल गुण वृद्धि, प्रभुथी प्रगटेरे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जिन सहस्रनाम वर्णन छंद ॥

॥ भुजंग प्रयात वृत्तं ॥ जगन्नाथ जगदीश जगबंधु नेता, चि-

---

१ मति इत्यपि.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दानंद चित्कंद चिन्मूर्ति चेता ॥ महामोह भेदी अमायी अवेदी, तथा गत तथा रूप भव भय उच्छेदी ॥ १ ॥ निरातंक निकलंक निर्मल अबंधो, प्रभो दीनबंधो कृपानीर सिंधो ॥ सदातन सदाशिव सदा शुद्ध स्वामी, पुरातन पुरुष पुरुष वर वृषभ गामी ॥ २ ॥ प्रकृति रहित हित वचन माया अतीत, महा प्राज्ञ मुनि यज्ञ पुरुष प्रतीत ॥ दलित कर्म भर कर्म फल सिद्धि दाता, हृदय पूत अव-धूत नूतन विधाता ॥ ३ ॥ महा ज्ञान योगी महात्मा अयोगी, म-हाधर्म संन्यास वर लच्छिभोगी ॥ महाध्यान लीनो समुद्रो अमुद्रो, महाशांत अतिदांत मानस अरुद्रो ॥ ४ ॥ महेंद्रादि कृत सेव देवाधि देव, नमो ते अनाहुत चरण नित्य मेव ॥ नमो दर्शनातीत दर्शन समूह, त्रयी गीत वेदांत कृत अखिल उह ॥ ५ ॥ वचन मन अगो-चर महा वाक्य वृत्तें, कृता वेद्य संवेद्य पद सुप्रवृत्तें ॥ समापत्ति आपत्ति संपत्ति भेदी, सकल पाप सुगरीठ तुं दीठ छेदी ॥ ६ ॥ नतूं दृग दृग मात्र इति वेद वादी, समापत्ति तुज दृष्टि सिद्धांत वादो ॥ विभूता विना अनुभवि सकल वादि, लखी एक सिद्धान्त धर अममादी ॥ ७ ॥ कुमारी दयिता भोगसुख जेम न जाणे, तथा ध्यान विण तुज मुधा लोक ताणे ॥ करी कष्ट तुज कारणे बहुत खोजी, स्वयं तुं प्रकासी चिदानंद मोजी ॥ ८ ॥ रटे अटपटे झट-पटें वाद ल्यावे, नित्या तुं रमे अनुभवें पास आवे ॥ महाचर न हठ योग मांहें तुं ज्युं जागे, विचारें होइ सांइ आगें जो आगें ॥ ९ ॥ तथा बुद्धि नहीं शुद्ध तुज जेणि वहिये, कलौनाम मांही एक थिर थोभ रहियें ॥ सहस्रनाम मांही दप्प पण अप्प जाणुं, अणंते गुणे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम णंतां वखाणुं ॥ १० ॥ अनेकांत संक्रांत बहु अर्थ शुद्ध, जिके शब्द ते ताहरा नाम बुद्ध ॥ निराशी जपे जेह ते सर्व साचुं, जपे जेह आशायें ते सर्व काचुं॥११॥ नको मंत्र नितंत्र नियंत्र मोटो, जिस्यो नाम ताहरो सम अमृत लोटो ॥ प्रभु नाम तुज मुज अक्षय निधान धरुं चित्त संसार तारक प्रधान ॥ १२ ॥ अनामी तणा नामनो शो विशेष, एतो मध्यमा वैखरीनो उल्लेख ॥ मुनिरूप पश्यंति कांइ प्रमाणे, अकल अलख तुं इम हुवो ध्यान टाणे ॥ १३ ॥ अनवतारनो केइ अवतार भांखी, घटी तेहनो देवनी कर्म पाखी ॥ तनुग्रह नहीं भूत आवेश न्यायें, प्रथम योग छे कर्म तन्मिश्र पायें ॥१४॥ अछे शक्ति तो जननी उदरें न पेशी, तनुग्रहग वली पर अदृष्टें न वेशी ॥ तुरंग शृंग सम अर्थमां जेह युक्ति, कही सदहि तेह अप्रमाण उक्ति ॥ १५ ॥ यदा जिनवरें दोष मिथ्यात्व टाल्यो, ग्रह्युं सार सम्यकत्व निजवान वाल्यो ॥ तिहांथी हुआ तेह अवतार लेखी, जगत लोक उपगार जगगुरु गवेखी ॥ १६ ॥ अहो योग महिमा जगन्नाथ केरो, टले पंच कल्याणके जग अंधेरो ॥ तदा नारकी जीव पण सुख पावे, चरण सेववा धसमस्यां देव आवे ॥ १७ ॥ भजी भोग लै योग चारित्र पाले, धरी ध्यान अध्यात्म घन घाति टाले ॥ लही केवल ज्ञान सुरकोडि आवे, समवसरण मंडाइ सब दोष जावे ॥ १८ ॥ घटे द्रव्य जगदीश अवतार एसो, कहो भाव जगदीश अवतार केसो रमे अंश आरोप धरी ओघ दृष्टि ॥ लहे पूर्ण ते तत्व जे पूर्ण दृष्टि ॥ १९ ॥ त्रिकालज्ञ अरिहंत जिन पारगामी, विगत कर्म परमेष्टि भगवंत स्वामी ॥ प्रभू बोधिदा भयद आप्त स्वयंभू,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयो देव तीर्थंकरो तुंज शंभू ॥ २० ॥ इश्यां सिद्ध जिननां कह्यां सहस्र नाम, रह्यो शुद्ध झगडो लहो शुद्ध धाम ॥ गुरु श्री नयविजय बुध चरण सेवी, कहे शुद्ध पदमांहि निज दृष्टि देवी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

शारद माय नमुं शिर नामि, हुं गाउं त्रिभुवनको स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारी निवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, रुद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति भाइ ॥ जो कछु वंछे सोई पूरे, दारिद्र दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरुप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अचरिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सबहीं हथियारा, जीत्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥६॥ महा बलवंत कहिजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ रुद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककुं सम भायक, पण सेवकहीकुं सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भये जगनायक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रुमित्र सम चित गणीजें, नामदेव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरिहंत भणीजें, सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी माहा-
पद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंभीरा, दुषण एक न मांहे
शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण
ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहुं
न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा
॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं
लय लाई ॥ लोभ विना गुणराश ग्रहीजें, भिरकु भये त्रिगडो से-
वीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर
ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले
अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजें, करम
सबें को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लच्छी घणी
देखे नवी आपे ॥१४॥ वीनयवंत भगवंत कहावे, न कहूं कुं शीश
नमावे ॥ अकिंचनको विरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे
॥ १५ ॥ राग नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥
तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥
॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुनको पार न ल-
हीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥१७॥
तूं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथी तुं रे दयाल ॥ तुं शर-
णागत राखणधीर, तुं प्रभू तारक छो वडवीर ॥ १८ ॥ तुंहि
समोवड भागज पायो, तो मेरो काज चड्यों रे सवायो ॥ कर
जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥
जनम मरणना दोष निवारो, भव सागरथी पार उतारो ॥ श्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीहथ्थिगाउरमंडण सोहे, तिहां श्री शांति सदा मन मोहे ॥२०॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन भाया ॥ नर-नारी जे चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ भुजंग प्रयात वृत्तं ॥ वंदो देव वामेय देवाधि देवं, सुरा आसुरा भासुरी सारे सेवं ॥ नवे खंडमां आण अखंड जेहनी, प्रभु कांति शी भांति नहीं विश्व केहनी ॥ १ ॥ महादुष्ट जेह धिष्ट पापिष्ट पूरा, प्रभू नामथी ते दोषी जाय दूरा ॥ आवी वाट घाटें बांधे जेह ओडा, थाये आंधला ते घणा तो न थोडा ॥ २ ॥ धरा धीश धोखो धरी धीज दाखे, रागी सेवकोनी प्रभु लाज राखे ॥ वैरिनाथ जे वातनो जोर वाध्यो, बहु नामी बंधू पलिपास बांध्यो ॥ ३ ॥ जुठी वात जंपी हियानी उपाई, मेहलें साधुनें असाधु पजाई ॥ साचो तो वेली छे प्रभु तुं सदाई, स्वामी तुं सधारे वधारे वडाई ॥ ४ ॥ पडि वात वांधे प्रभु पार पीछो, धिठां जिहां रूठां तिहां प्रभुजी धणी छो ॥ साचुं करी जूठुंकरयो जोर सांसो, वेहेरी थया वांसे राखो नाथ वांसो ॥ ५ ॥ गुडा जे गुमानी लिये गुज्जामांथी, भुंडा जे भंभेरचा भरी तीरभाथी ॥ करी क्रोधने जे करे पातकेना, तमें वारज्यो तातजी नाक तेनां ॥ ६ ॥ गति गोबरा तोबरा मुखें तुच्छा, वली वांकडा आंकरा दार ओछा ॥ मलेच्छा यथेच्छा गच्छें मच्छराला, प्रभु पार्श्वध्यानें नमे ते मदाला ॥७॥ क्रोधाला भूपाला हठाला कराला, वडा धिंग त्रिसिंग महासिंघ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला ॥ रोसाला दोसाला मोसाला ते रूठा, तोसाला पोसाला हुवे पास तूठा ॥ ८ ॥ करी केसरी दाव दो जीहवाला, रणें आर्णवं रोग महाराण पाला ॥ पड्यां तास पास भांजि पासपास, त्रोडी सर्व त्रास आवे ते आवास ॥ ९ ॥ पूरें दास आशा प्रभु पास पूरी, सदा संपदा खेल सिंचे सभूरी ॥ टले आपदाने करे सार टाणे, जयकार पामे भजी जेह जाणे ॥ १० ॥ उदय उवज्झाया वदे आज पाया, विलासा सवाया सवासें वसाया ॥ लीला लहेर वाधे प्रभु नाम लीधा, बोली सर्व बाधा लह्यांशं अगाधा ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो लघु छंद ॥

॥ सुख कारण भवियण, समरो नित्य नवकार ॥ जिन शासन आगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो महिमा, कहेतां न लहुं पार ॥ सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ भुविमंडल विचरे, तारै भवियण कोड ॥ सुर छंदे विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पेहेले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे भेदें, सिद्ध थया भगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरूपी, पंचानंतक तेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह ॥ ३ गच्छभार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करे सारण वारण, गुण छत्रीसें थोम ॥ श्रुत जाण शिरोमणी, सागर जेम गंभोर ॥ त्रीजे पद नमियें, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुण आगर, सूत्र भणावे सार ॥ तप विधि संयोगें, भांखे अर्थ विचार ॥ मुनिवर गुण जुत्ता, कहीयें ते उवज्झाय ॥ चोथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहे जे साध ॥ त्रिविधें ते प्रणमुं, परमारथ जिणे लाध ॥६॥ अरि करि हरि सायणी, डायणि भूत वैताल ॥ सवि पाप पणासे, बाधे मंगल माल ॥ एणें समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंपे जिनप्रभ, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्महित विनति छंद ॥

॥ भुजंग प्रयात वृत्तं ॥ प्रभु पाय लागी करुं सेव ताहरी, तमे सांभलो श्रीजिन राव माहरी ॥ मने मोह वैरी पराभव करे छे, चिहुं गति तणां दुःख नहि विसरे छे ॥ १ ॥ हुंतो लक्ष चोराशी जिव जोनि मांहे, भम्यो जन्म मरण केरे प्रभावें ॥ घणां में कीधा कर्म जे धर्म छांडी, कहुं ते सर्व सांभलो स्वामी मांडी ॥ २ ॥ मेंतो लोभें लंपट थइ कपट कीधां, घणां भोलवी परतणां द्रव्य लीधां ॥ मेंतो पिंड पोख्यो करि जीव हिंसा, करी पारकी कूथली स्वप्रशंशा ॥ ३ ॥ मेंतो बोलीया परतणा मर्म मोसा, नहि भांखिया आपणा पाप दोषा ॥ सदा संग कीधो परनारी केरो, नहीं पालियो धर्म जिनराज तेरो ॥ ४ ॥ पडयो घर तणे पाप आशा विलुद्धो, नहिं सांभल्यो जिनराज उपदेश सुधो ॥ हुंतो पुत्र परिवारशुं रंग रातो, नहीं जाणियो जिनवर काल जातो ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणुं आरंभनुं पाप करी पिंड भारयो, में मूरखें नरभव फोक हारयो ॥ गयो काल संसार एलें भमंतां, सह्या तेहथी दुर्गति दुःख अनंतां ॥ ६ ॥ घणे कष्टें जिनराज हवे देव पाम्यो, त्यारे सर्व संसारनां दुःख वाम्यो ॥ ज्यारें श्री जिनराजनुं रूप दीठुं, माहरे लोचनें रूवडुं अमीय वुठयुं ॥७॥ आवी कामधेनु घरमांहि चाली, भरी रत्न चिंतामणि हेम थाली ॥ माहरे घर तणे आंगणे कल्पवृक्ष, फल्यो आपवा वांछित दानदक्ष ॥ ८ ॥ गयो रोग संताप ते सर्व माठो, जरा जन्म मरणां तणो त्रास नाठो ॥ तोरे शरण आव्या तणी लाज कीजें, करया अपराध ते सर्वे खमीजें ॥ ९ ॥ घणुं विनवुं छुं जिनराज देवा, मुने आपजो भवोभव स्वामी सेवा ॥ यह विनति भावथी जेह भणशे, सकल चंदनो स्वामी सदा सुख करशे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ प्रभातमां भाववानी भावना ॥

आबु अष्टापद गिरनार, समेतशिखर शेत्रुंजो सार;
पांचे तीरथ उतम ठाम, सिद्धिवर्या तेने करु प्रणाम–१

॥श्री सिद्धाचलने विषे आदीश्वर भगवान पूर्व नवाणुं वार समोसर्या, तेने मारी क्रोडक्रोडवार वंदना होजोजी ॥ १ ॥ पुंडरिकस्वामी पांच क्रोड मुनि साथे सिद्धिपदने वर्या, तेने मारी क्रो० ॥ २ ॥ राम भरत त्रण क्रोड साथे सिद्धि वर्या; तेने मारी क्रो० ॥३॥ नारदजी एकाणुं लाख साथे सिद्धि वर्या, तेने मारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रो० ॥ ४ ॥ वसुदेवनी पांत्रीस हजार स्त्री सिद्धि वरी तेने मारी क्रो०॥५॥ ए गिरिराजने विषे शांतिनाथ प्रभुए घणा मुनिराज साथे चोमासु कीधुं, तेने मारी. क्रो० ॥ ६ ॥ थावच्चा पुत्र एक हजार साथे सिद्धि वर्या, तेने मारी. क्रो० ॥७॥ सुभद्र मुनि सातसें साथे सिद्धि वर्या, तेने मारा. क्रो० ॥ ८ ॥ नमिविनमि विद्याधर बे क्रोड मुनि साथे सिद्धि वर्या, तेने मारी. क्रो० ॥ ९ ॥ द्राविड अने वारिखिल्यजी दश क्रोडी साथे सिद्धि वर्या, तेने मारी. ॥१०॥ सांब, प्रद्युम्न साडा आठ क्रोडी साथे सिद्धि वर्या, तेने मारी. क्रो० ॥११॥ देवकीना षट् पुत्रो सिद्धि वर्या, तेने मारी. क्रो० ॥१२॥ वळी ए गिरिराजने विषे कांकरे कांकरै अनंता सिद्धिपदने वर्या, तेने मारी. क्रो० ॥१३॥ गिरनारजीने विषे श्री नेमीनाथ भगवान बाळब्रह्मचारीपणे आ संसार दुःख रुप, दुःखे भरेलो, दुःखनी खाण, हळाहळ विष जेवो जाणीने, बळती आग जेवो जाणीने, राजेमतीने छोडी सेसावन जइ दीक्षा लेइ केवळज्ञान पामी मोक्षपदने पाम्या, तेने मारी. क्रो० ॥ १४ ॥ वळी गिरनारजीने विषे मूळनायक श्रीनेमिनाथजी आदि जिनेश्वर भगवाननी अनेक प्रतिमाओ छे, तेने मारी. क्रो० ॥ १५ ॥ आबुजी उपर आदीश्वर भगवानना तथा नेमनाथजीनां देरां घणांज सुंदर छे, तेमां कोरणी कारिगरीए घणीज उत्तम करेली छे; तथा देराणी जेठाणीना करावेला गोखला, के जेमां घणीज नाना कदनी नाजुक प्रतिमाओ छे, तेने मारी. क्रो० ॥ १६ ॥ तथा अचळगढ उपर चौदसो ने चुंवाळीस मणनी सोनानी चौद प्रतिमा, तेने मारी. क्रो० ॥१७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्मेत शिखरजीने विषे वीस तीर्थंकर मोक्षपदने पाम्या, ते विशे जिनेश्वर भगवाननां पगलां छे, तेने तथा सामळीआ पार्श्वनाथजीनुं देरुं छे तेमां रहेली जिनेश्वर भगवाननी प्रतिमाजीने मारी. क्रो० ॥ १८ ॥ अष्टापदजी उपर आदिश्वर भगवान् दश हजार मुनियो साथे सिद्धि वर्या तेने मारी. क्रो० ॥ १९ ॥ भरत राजाए सोनानो प्रासाद कराव्यो, तेमां रत्नमयी प्रतिमा चोवीस तीर्थंकरोनी भरावी तेने मारी. क्रो० ॥ २० ॥ गौतमस्वामीए प्रभुनी आज्ञा लेइ पोतानी लब्धिए करी अष्टापदनी यात्रा करी, तथा त्रीझंभक देवताने प्रतिबोध करींने पंदरसे त्रण तापसोने खीरनां पारणां कराव्यां, ते पण फक्त एकज पात्रामां थोडी खीर वोरी लाव्या, पण ते पात्रामां पोतानो अंगुठो राख्यो, तेथी तेनी लब्धिए करीने एटला बधा तापसोने खीरथी तृप्त कर्या, अने ते तापसोने एवुं आश्चर्य जोइ खीर भोजन करतां तेमांना पांचसोने केवळज्ञान थयुं, तथा प्रभु पासे आवतां रस्तामां भावना भावतां बाकीना पांचसोने केवळज्ञान थयुं बाकीना तापसोने प्रभुनुं समवसरण जोतांज केवळज्ञान थयुं, माटे एवा लब्धिवंत गौतमस्वामिने तथा पंदरसें त्रण तापसोने मारी. क्रो० ॥ २१ ॥ गोखले, गभारे, जाळीये, माळीए, जळमां, थळमां, मोतीमां, माणिकमां, पानामां पुस्तकमां, धातुमां, काष्टमां, चित्रामणमां, परवाळामां, भोंयमां, भंडारमां उर्ध, अधो, तीर्च्छा लोकने विषे, अंगुठाथी मांडी पांचसें धनुषनी जे कोइ जिनेश्वर भगवाननी नानी मोटी प्रतिमा होय; तेने मारी. क्रो० ॥ २२ ॥ चोसठ इंद्रना पूजनीक, बार गुण सहित,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोत्रीस अतिशयें करी विराजमान पांत्रीस गुणयुक्त वाणीए करी भाविक जीवोने प्रतिबोधे, सर्वत्र सर्व वस्तुना देखण हार, त्रिभुवनमां मांगळिकदायक, कल्पवृक्ष समान, सात भयथी रहित, त्रिभुवन गुरु, परम ठाकुर, दयावंत, जगतना बांधव, संसार समुद्रमां, द्वीप समान, त्रणे भुवनमां दीपक सरिखा,जगतमां चिंतामणी रत्न सरीखा, त्रिभुवनमां मुगट सरीखा जिनराज, मोक्षमार्गने विषे रथ समान, अशरणना शरणभुत, भवसंसारना भयटाळक, भाविक लोकोने प्रीति भोजन समान, आठ कर्मरुप अंगाध समुद्रतारण. वहाण समान, समयक्रिया अनुष्ठानादिक गुणनी मंजुषा समान, जयवंता विषम जे कंदर्प तेनां जे बाण तेने वारवाने सनाह समान, एवा जे श्री अरिहंत भगवान तेने मारी ॥ क्रो० ॥ ॥ २३ ॥ हुं धन्य, हुं पुन्यवंत पवित्र थयो, मारो मनुष्यभव सफळ थयो, जे कारणे श्री वीतरागना चरणकमळनी मने भेट थइ. ए दिवस धन्य, कृतार्थ ए प्रहर मुमुहुर्त्त सुपवित्र जाणवो जे वेळा जगतगुरु जिनराजने हुं भेटयो. आज मारे रत्नचिंतामणी कल्पवृक्ष; कामधेनु कामकुंभ ए सर्व सुर्लभ थयां, आजे मने अपूर्व वस्तु मळी, मारा मोटा भाग्यनो उदय थयो. अढार दोषरहित होय तेने तीर्थंकर कहीये, रागद्वेष जीत्या छे जेणे तेने वीतराग कहीए, आठ कर्मना मंथनहार, मोक्षनगरना सार्थवाह, कर्मपीडा रहित एवा जगन्नाथने स्तवुं छुं. भरतक्षेत्रे अतीत चोवीशीमां प्रथम तीर्थंकर, केवळज्ञानी, निर्वाणी आदि तथा वर्त्तमान प्रथम ऋषभदेव प्रमुख चोवीस तीर्थंकरने, अनागत चोवीसी श्री पद्मनाभ श्री श्रेणीक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजानो जीव आदि बोहोतेर तीर्थ कर्ता, वीस वीहरमान ए सर्वेने मारी. ॥ क्रो० ॥ २४ ॥ श्री अरिहंत भगवान तथा श्री सिद्ध भगवान तथा श्री आचार्य भगवान तथा श्री उपाध्यायजी भगवान तथा श्री साधु मुनिराज भगवान ए सर्वेने मारी. ॥ क्रो० ॥ ॥ २५ ॥ ते अनंत ज्ञानमय तथा अनंत दर्शनमय तथा अनंत चारीत्रमय तथा अनंत तपमय तथा अनंत वीर्यमय एवा पंच परमेष्ठी भगवान छे वळी एवुं अनंत ज्ञान; अनंत दर्शन; अनंत चारीत्र; जे महारी सत्तामां छे ते प्रगट थाओ तथा सर्व जीवनी सत्तामां छे ते प्रकट थाओ एटलुंज हुं मागुं छुं वळी हे जीव ! तुं विचार तो कर ! जे आ संसार दुःखरुप दुःखे भरेलो छे. हळाहळ विष जेवो छे, बळती आग समान छे. वास्ते हे जीव ! तुं जाग, जाग, जो, जो, चेत, चेत, समज, समज, शुं आळस, प्रमाद करी मुइ रह्यो छे. तने कोण हितकारी छे के जे तने धर्ममां सहाय करशे ? माटे धर्म साधन करवुं एज तारे करवा योग्य छे. बीजुं कांइज नथी. सर्वे असार छे.

(श्लोक) जन्म दुःखं जरा दुःखं, मृत्यु दुःखं पुनः पुनः।
संसार सागरे दुःखं, तस्मात् जागृत जागृतः॥

वळी जे जीवे महारा जीवने नीगोदमांथी बहार काढयो तेने मारी क्रोड क्रोड वार वंदना होजो. ॥२६॥ तथा मने जेणे धर्ममां जोडयो तथा सुदेव, सुगुरु, सुधर्म तेनी साची प्रतीत करावी एवा महारा धर्माचार्य भगवानने मारी० ॥ २७ ॥ तथा सर्व कर्मने क्षय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करवावाळुं एवुं चारित्र ते पंचमहाव्रत आपी संसारमांथी बहार काढयो; एवा महारा गुरु महाराजने मारी क्रोड क्रोडवार वंदना होजो ॥ २८ ॥ धन्य छे जे दान दे छे तेने, धन्य छे जे शीयळ पाळे छे तेने, धन्य छे जे रुडी तपस्या करे छे तेने, वळी धन्य छे जे रुडीं भावना भावे छे तेने, ए सौने मारी क्रोड क्रोडवार वंदना होजोजी. ॥ २९ ॥

श्लोक.

श्रीशांतिनाथादुपरोनदानी, दशार्णभद्रादुपरोनमानी !
श्रीशालिभद्रादुपरोनभोगी. श्रीस्थूलिभद्रादुपरोनयोगी,

धन्य छे श्री शांतिनाथ भगवानने, के जेने एक पारेवो उगारवा माटे पोतिकी काया उपरथी सर्वथा मुर्छा उतारी दीधी, ने पारेवाने उगार्यो, अने जे देवता एमनी परीक्षा लेवा आव्यो हतो ते देवता नमस्कार करी समकीत नीरमळ करी देवलोकमां गयो. माटे एवी दृढता तो श्री शांतिनाथ भगवानना जीवनेज रहे बीजा कोइने पण एवी दृढता रहेवी दुर्लभ. माटे श्री शांतिनाथ जेवा कोइ दानेश्वरी नहीं.

श्री दशार्णभद्र जेवा कोइ मानी नहीं, केमके इंद्रनी रिद्धि जोइ पोते अहंकार उतारी दीधो, ने संसार सर्वथा छोडी दइ दीक्षा लीधी. तेथी धर्मनुं मान बहुज वधार्युं. एवुं आश्चर्य जोइने इंद्रमहाराज पोते पगे लागी कहेवा लाग्या के हे दशार्णभद्र तारी मानदशा जोइने ते उतारवाने तारा करतां घणीज ऋद्धि में वीकुर्वी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शक्ति तो महारामां हती पण आ वखते तें जे चारित्ररुपी अनंत गणी ऋद्धि तारी पासे राखी छे, एवी ऋद्धि विकुर्वानी महारी शक्ति नथी. माटे हे दशार्णभद्र तने धन्य छे. माटे दशार्णभद्र जेवो कोइ मानी नहीं के जेने आत्मीक धर्मनुं खरेखरुं मान राख्युं माटे धन्य छे, दशार्णभद्रराज ऋषिने.

शालिभद्र जेवो कोइ बीजो भोगी नहीं. केमके घणाए मोटा मोटा राजा थइ गया, तथा चक्रवर्ति तथा बळदेव वासुदेव, वगेरे थइ गया पण कोइनी कथामां एवुं नथी सांभळ्युं के आजे जे आभुषण देवतइ पहेर्यां तथा देवदुष्य वस्त्र पहेरीने पाछा दररोज तेने निर्माल्य करी कुवामां नांखी दे, अने वळी ए शालीभद्र शिवाय बीजा घणाए भोगी पुरुषो थोडा भोगमां पांचे इंद्रीना तेवीस विषयो भोगवीने आर्तरौद्र ध्याने करी नर्कादिक चारे गतिमां खुंचाइ गया, ते हजु केटलाएक नीगोदमां पण हशे, ने ते कइ वखते मोक्षे जशे तेनुं कंइज नक्की नथी अने श्री शालीभद्रे तो संसारनां सुख संपुर्ण भोगव्यां अने ते सुखने एकदम छांडी, अने बहुज दुष्कर एवो संजमनो मेरु पर्वत जेटलो भार सहेजमां उपाडी लीधो. वळी बीजां एने केटलां आश्चर्यो कीधां छे, ते तो कहेतां पार आवे नहीं, माटे एना शरीरनुं सुकुमाळपणुं केटलुं हतुं, तेज क्विार करवो के एज राजग्रही नगरीनो राजामहारुपवंत श्रेणिक राजा तथा चेलणाराणी जेवारे वीर भगवानने वांदवाने गयां ते वखत, चेलणानुं रुप जोइने केटलाएक साधु चलायमान थया, श्रेणिकराजानुं रुप जोइने केटलीक साधवी चळायमान थइ गइ, एवुं अद्भुत श्रणिकराजानुं रुप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हशे. के जेथी वीरभगवानना समोवसरणमां साधवीओ हती, ते चळायमान थइ गइ, पण एवा रुपवाळो ने सुकुमाळ कायावाळो श्रेणिकराजा जेवारे शालीभद्रने मळवा गयो, ने भद्रामाताए तेने भद्रासनमां बेसाडयो ते वखते शालीभद्र सातमी अटारीए भोगनी लीलामां हता, पण भद्रामाताना कहेवाथी तेने नीचे आववुं पडयुं अने जेवा श्रेणिकराजाए ते शालीभद्रने पोताना खोळामां घणा हेतथी बेसाडयो ते वखते ए शालीभद्रने एवुं लाग्युं के मने केद-खानामां घाल्यो. वळी ते श्रेणीकराजाना हाथनो तथा शरीरना स्पर्श तेने गधेडाना जेवो लाग्यो. त्यारे ए शालीभद्रजीना शरीरनी सुकुमाळता केटली हशे ? ते कही शकाय नहीं. माटे एवा सुकुमाळ शरीरवाळा शालीभद्रजीए संसारना भोग जलदी तजी दीधा ते दीक्षा लेइने बार वरस प्रभुनी साथे वीचर्या घणी घणी आकरी तपस्या करी शरीर बळेला लाकडांना कोयला जेवुं करी नांख्युं, अने महा शुरवीरपणे प्रभुनी आज्ञा लइने अनशन पण कीधुं. एका-वतारी सरवार्थसिद्धमां देव थयो. माटे संसारना सुंदर भोग भो-गवी तेने छोडतां पण वार लागी नहीं. अने पोताना आत्मानुं साधन पण रुडी रीते कीधुं माटे शालीभद्र जेवो बीजो कोइ भोगी नहीं माटे धन्य छे शालीभद्रना वैराग्यने ! !

स्थुलीभद्र जेवो बीजो कोइ जोगी नहीं, केमके साधु तो घणाए थइ गया,पण वेश्याना घरमां रहीने कामने जीत्यो, ए बहुज दुष्कर. बीजा कोइज साधुथी नहीं थाय. केमके ते वेश्यानुं देवांगना जेवुं रुप तथा स्थुलीभद्र उपर घणोज राग तथा वर्षाऋतु तथा चीत्रा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणशाळा तथा कामना वीकार जागे एवो सरस अहार तथा अप-छराना जेवां वेश्याए आभुषण पहेरी शणगार सजेलो तथा तेना कटाक्षणबाण काम जागे तेवां, वळी रागना वचन सदाए बोले, एटला बधा अनुकुळ परीसह जीतवाने केशरीसिंह जेवा श्री स्थु-लीभद्र जेवा कोइ जोगी नहिं. माटे धन्य छे श्री स्थुलीभद्रजी जो-गीने, के जेनुं नाम देतां कर्म छुटी जाय.

इति भावना संपूर्ण

॥ अथ प्रभातनां पच्चरकाण ॥

॥ प्रथम नमुक्कारसहि मुठसहिनुं ॥

॥ उग्गएसूरे, नमुक्कारसहिअं, मुठिसहिअं पच्चरकाइ ॥ चउ-व्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभो-गेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ १ ॥

॥ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गएसूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं मुठि-सहिअं, पच्चरकाइ ॥ उग्गएसूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ त्रीजुं अथ पुरिमड्ढ अवड्ढनुं पच्चरूखाण ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमड्ढं अवड्ढं मुट्ठिसहिअं पच्चरूखाइ. सूरे उग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ३ ॥

॥ चोथुं अथ विगइ निविगइनुं पच्चरूखाण ॥

॥ विगइओ [1]निविगइअ पच्चरूखाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेणं उरिखत्तविवेगेणं पडुच्चमरिखएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारैणं वोसिरे ॥ ४ ॥

॥ पांचमुं बियासणाएकासणानुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गएसूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं मुट्ठिसहिअं, पच्चरूखाइ ॥ उग्गएसूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारैणं, [2](विगइओ पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उरिकत्तविवेगेणं, पडुच्चमरिकएणं, पारिठावणियागारैणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिव[3]त्तियागारेणं,)

---

१ सर्व विगयनो त्याग करवो होय तो ए आगार कहेवो.

२–३ कोंसवाला आगार विगइनुं पच्चखाण करवुं होय तो कहेवा. विगयत्यागन करवी होय तो ए आगार कहेवानी जरुर नथी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बियासणं पच्चरकाइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरु अब्भुठाणेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागरेणं ॥ पाणस्स लेवेणवा, अलेवेण वा, अच्छेण वा बहुलेवेण वा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चरकाण करवुं होय तो, बियासणने ठेकाणे एकासणंनो पाठ केहेवो ॥ इति बियासणा एकासणानु पच्चरकाण समाप्त ॥५॥

॥ छठ्ठु आयंबिलनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गएसूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चरकाइ ॥ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उरिकत्तविवेगेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ एगासणं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटण पसारेणं, गुरुअभ्भुठाणेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरे॥ इति आयंबिलनुं पच्चरकाण॥६॥

॥ सातमुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरेउग्गए अभ्भत्तठं पच्चरकाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं,असणं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥इति॥ चउविहार उपवासनुं ॥ ७ ॥

॥ आठमुं तिविहार उपवासनुं ॥

सूरेउग्गए, अभत्तठं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चरकाइ ॥ उग्गए सूरे पुरिमड्ढं, अवड्ढ, पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अत्थेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा, वोसिरे ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥ ८ ॥

॥ नवमुं चउत्थ छठ भत्तादिकनुं पच्चरूखाण आवी रीते कहेवुं ॥

सूरे उग्गए चउत्थभत्तं अभत्तठं पच्चरूखाइ. सूरे उग्गए छठभत्तं अभत्तठं पच्चरूखाइ, सूरे उग्गए अठमभत्तं अभत्तठं पच्चरूखाइ, इत्यादिप्रकारें आगार सहित कहेवुं ॥ ९ ॥

॥ दशमुं छठ अठमादिक तप करे अने बीजा दिवसादिकें पाणी वावरवुं होय त्यारें पाणहारनुं पच्चरूखाण करे, ते कहे छे. ॥

॥ पाणहार पोरिसिं मुठिसहिअं पच्चरूखाइ. अन्नत्थणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेणवा, वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अगीआरमुं गंठसहियं आदि अभिग्रहोनुं पच्चरूखाण ॥

॥ गंठसहिअं वेढ़सहिअं दिवसहिअं थिवुगसहिअं मुठिसहिअं पच्चरूखाइ. अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ११ ॥

॥ बारमुं चउदनियम धारनारने देसावगासिकनुं पच्चरूखाण ॥

देसावगासियं उवभोग परिभोगं पच्चरूखाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे इति ॥ १२ ॥

॥ अथ सांझना पच्चरकाण ॥

॥ तिहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, निविगइ, आयंबिल, तिविहार उपवास अने छठ अटमादि जा करे तो तेणे पाणहारनुं पच्चरकाण करवुं, ते आवी रीतेः-

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ बाजुं चउव्विहारनुं पच्चरूखाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरूखाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चख्खाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्काइ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नथ्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ३ ॥

॥ चोथुं दुविहारनुं पच्चख्खाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चख्खाइ ॥ दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नथ्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तगागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे इति ॥ ४ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासियनुं पच्चख्खाण करवुं तेनो पाठ ॥

॥देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चख्खाइ ॥ अन्नथ्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ५ ॥

—:o:—

श्री रत्नाकर पच्चीशीना

गुजराती अनुवादना काव्यो.

॥ हरिगित छंदनो चाल उपर ॥

मंदिर छो मुक्तितणी मांगल्य क्रिडाना प्रभु ।
ने इन्द्र नर ने देवता सेवा करे तारी विभु ॥
सर्वज्ञ छो स्वामी वळी शिरदार अतिशय सर्वना ।
घणुं जीव तुं घणुं जीव तुं भंडार ज्ञान कळा तणा ॥१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रण जगतना आधार ने अवतार हे करुणा तणा ।
वळी वैद्य हे दुर्वार आ संसारनां दुःखो तणा ॥
वीतराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरुं ॥
जाणो छतां पण कही अने आ हृदय हुं खालो करुं ॥२
शुं बाळको मावाप पासे बाळक्रिडा नव करे ।
ने मुखमांथी जेम आवे तेम शुं नव उच्चरे ॥
तेमज तमारी पास तारक आज भोळा भावथी ।
जेवुं बन्युं तेवुं कहुं तेमां कशुं खोटुं नथी ॥३॥
में दान तो दीधुं नहि अने शियळ पण पाळ्युं नहि ।
तपथी दमी काया नहि शुभ भाव पण भाव्यो नहि ॥
ए चार भेदे धर्ममांथी कांइ पण प्रभु नव कर्युं ।
म्हारुं भ्रमण भवसागरे निष्फळ गयुं निष्फळ गयुं ॥४॥
हुं क्रोध अग्नियी बळ्यो वळी लोभ सर्प डश्यो मने ।
गळ्यो मान रुपी अजगरे हुं केम करी ध्यावुं तने ? ॥
मन मारुं माया जाळमां मोहन ! महा मुंझाय छे, ॥
चडी चार चोरो हाथमां चेतन घणो चगदाय छे. ॥५॥
में परभवे के आ भवे पण हित कांइ कर्युं नहि ।
तेथी करी संसारमां सुख अल्प पण पाम्यो नहि ॥
जन्मो अमारां जिनजी ! भव पूर्ण करवाने थया ।
आवेल बाजी हाथमां अज्ञानथी हारी गया ॥६॥
अमृत झरे तुज मुखरुपी चंद्रथी तो पण प्रभु ।
भिजाय नहि मुज मन अरेरे ! शुं करुं हुं तो विभु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्थरथकी पण कठण मारुं मन खरे क्यांथी द्रवे।
मरकट समा आ मनथकी हुं तो प्रभु हार्यो हवे ॥७॥
भमता महा भवसागरे पाम्यो पसाए आपना।
जे ज्ञान दर्शन चरणरुपी रत्न तो दुष्कर घणां॥
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु कहुं छुं खरुं।
कोनी कने किरतार आ पोकार हुं जइने करुं! ॥८॥
ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यनां रंगो धर्यां।
ने धर्मना उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या॥
विद्या भण्यो हुं वाद माटे केटली कथनी कहुं।
साधु थइने ब्हारथी दांभिक अंदरथी रहुं॥
में मुखने मेलुं कर्युं दोषो पराया गाइने।
ने नेत्रने निंदित कर्यां परनारीमां लपटाइने॥
वळी चित्तने दोषित कर्युं चिंती नठारुं परतणुं।
हे नाथ! मारुं शुं थशे चाल्लाक थइ चुक्यो घणुं॥ १०॥
करे काळजाने कतल पीडा कामनी विहामणी।
ए विषयमां बनी अंध हुं विडंबना पाम्यो घणी॥
ते पण प्रकाश्युं आज लावी लाज आप तणी कने।
जाणो सहु तेथी कहुं कर माफ मारा वांकने॥ ११॥
नवकार मंत्र विनाश कीधो अन्य मंत्रो जाणीने।
कुशास्त्रनां वाक्योवडे हणी आगमोनी वाणीने॥
कुदेवनी संगतथकी कर्यों नकामां आचर्यां।
मति भ्रमणथी रत्नो गुमावी काच कटका में ग्रह्या॥ १२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवेल दृष्टि मार्गमां मूकी महावीर आपने ।
मे मूढधिये हृदयमां ध्याया मदनना चापने ॥
नेत्रबाणो ने पयोधर नाभी ने सुंदर कटी ।
शणगार सुंदरीओ तणा छटकेल थइ जोया अति ॥ १३ ॥
मृगनयणी सम नारीतणां मुखचंद्र नीरखवा वती ।
मुज मन विषे जे रंगलाग्यो अल्प पण गूढो अति ॥
ने श्रुतरूप समुद्रमां धोया छतां जातो नथी ।
तेनुं कहो कारण तमे बचुं केम हुं आ पापथी ॥ १४ ॥
सुंदर नथी आ शरीर के समुदाय गुणतणो नथी ।
उत्तम विलास कळातणो देदीप्यमान प्रभा नथी ॥
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अकड फरुं ।
चोपाट चार गतितणी संसारमां खेल्या करुं ॥ १५ ॥
आयुष्य घटतुं जाय तोपण पापबुद्धि नव घटे ।
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे ॥
औषध विषे करुं यत्न पण हुं धर्मने तो नव गणुं ।
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनानां घर चणुं ॥ १६ ।
आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशुं नथी ।
मिथ्यात्विनी कटुवाणी में धरी कान पीधी स्वादथी ॥
रवी सम इता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे ।
दीवो लइ कुवे पडयो धिक्कार छे मुजने खरे ॥ १७ ॥
में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही ।
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाम्यो प्रभु नरभव छतां रणमां रडवा जेवुं थयुं ।
धोबी तणा कुत्ता समुं मम जीवन सहु एळे गयुं ॥१८॥
हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां ।
खोटां छतां झंख्यो घणुं बनी लुब्ध आ संसारमां ॥
जे प्रगट सुख देनार तहारो धर्म ते सेव्यो नहि ।
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कंइ ॥१९॥
में भोग सारा चिंतव्या ते रोगसम चिंत्या नहि ।
आगमन इच्छयुं धनतणुं पण मृत्युने प्रीछयुं नहि ॥
नहि चिंतव्युं में नर्क कारागृह समी छे नारीओ ।
मधुबिंदुनी आशामहीं भय मात्र हुं भुली गयो ॥२०॥
हुं शुद्ध आचारोवडे साधु हृदयमां नव रह्यो ।
करी काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्यो ॥
वळी तीर्थना उद्धार आदि केइ कार्यो नव कर्यां ।
फोगट अरे ! आ लक्ष चोराशीतणां फेरा फर्यां ॥२१॥
गुरुवाणीमां वैराग्य केरो रंग लाग्यो नहि अने ।
दुर्जनतणां वाक्यो महीं शांति मळे क्यांथी मने ? ॥
तरुं केम हुं संसार आ अध्यात्म तो छे नहि जरी ।
तुटेल तळीयानो घडो जळथी भराये केम करी ॥२२॥
में परभवे नथी पुण्य कीधुं ने नथी करतो हजी ।
तो आवता भवमां कहो क्यांथी थशे हे नाथजी ? ॥
भूत भावी ने सांप्रत त्रणे भव नाथ हुं हारी गयो ।
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं आकाशमां लटकी रह्यो ॥२३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथवा नकामुं आप पासे नाथ शुं बकवुं घणुं ?।
हे देवताना पूज्य ! आ चारित्र मुज पोतातणुं ॥
जाणो स्वरुप त्रण लोकनुं तो म्हारुं शुं मात्र आ ।
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां पाइनी तो वात क्यां? ॥२४॥
तहाराथी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु ।
म्हाराथी नहि अन्यपात्र जगमां जोतां जडे हे विभु !॥
मुक्ति मंगळस्थान ! तोय मुजने इच्छा न लक्ष्मी तणी ।
आपो सम्यगरत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी ॥२६॥

॥ १ ॥ आदिजिन आरती ॥

पहेली आरती प्रथम जिणंदा, शेत्रुंजा
मंडण ऋषभ जिणंदा ॥ आरती कीजे जिनराज तुमारी ॥१॥
दुसरी आरती मारू देवी माता, युगला धर्म निवार करंदा. ॥ आ.२॥
तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंघासण मारा प्रभुजीने सोहे॥आ.३
चोथी आरती नित्य नवी पूजा, देव निरंजन अवर न दुजा ॥आ.॥४॥
पांचमी आरति प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे॥आ.५इति

॥ २ ॥ श्री वर्द्धमानजिन आरति.

श्री सरस्वती माइ, कृपा करो आइ;
सरस वचन सुखदाइ, द्यो मुज चतुराइ–जय देव, जय देव १
श्रीवर्द्धमान देवा, जगमां नहि एवा; पातक दूर करेवा, करे इंद्र सेवा. जय०२
रत्नत्रयराया, त्रिशलाना जाया; सिद्धारथ कुळ आया, कंचनमय काया. ज.३
शासन बहु सारो, लागे मुज प्यारो; संकट दूर निवारो, भवसायर तारो. ४
त्रिभुवन तुम स्वामी, कर्म मेल वामी; केवलज्ञान सुपामी, शिवपुरना स्वामी ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव आरत टाळो, नेह नजर न्याळो; मया करी मुज उपर, कृपा करी मुज उपर,
मुज कर तुम झालो. --जय० ६

॥ १ ॥ मंगळ दीवो.

दीवो रे दीवो मंगळिक दीवो; आरति उतारण बहु चिरंजीवो--दीवो० १
सोहामणुं घेर पर्व दीवाळी; वर खेले अमरावाळी--दीवो० ॥ २ ॥
दीपाळ भणे एणे कुळ अजुआळी; भावे भक्ते वदन निहाळी--दीवो०॥३॥
दीपाळ कवि कहे इण कलिकाले; आरति उतारी राजा कुमारपाले--दी०४
अम घेर मंगळिक तम घेर मंगळिक; सकळ संघ घेर मंगळिक होजो--दी०५

॥ २ ॥ मंगळ दीवो.

चारो मंगळ चार आजे मारे, चारो मंगळ चार,
देख्यो दरश सरस जीनजीको, शोभा सुंदर सार. आजे० १
छीनुं छीनुं छीनुं मनमोहन चरच्यो, घसी केशर घनसार. आ० २
विविध जातीके पुष्प मंगावो, मोगर लाल गुलाल. आजे० ३
धुप ऊखेखोने करो आरती, मुख बोलो जयकार. आजे० ४
हर्ष धरी आदेश्वर पुजो, चौमुख प्रतीमा चार. आजे० ५
हैये धरी भाव भावना भावो, जीम पामो भवपार. आजे० ६
सांकळचंद सेवक जीनजीको, आनंदघन उपकार. आजे० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाहेर खबर.

निचे लखेला पुस्तको किंमत अने पोष्ट पेकिंग खर्च साथे पैशा आगाऊ मोकलनारने निचेना सरनामेथी मळी शकशे. व्ही. पी. थी मंगावनारे डीपाझीट तरीके आगाऊ आठ आना मोकलशे तो तेमने बाकी रकम बाबद व्ही. पी. करी मोकलवामां आवशे.

नंबर.	पुस्तकनुं नांम	किंमत. रु.आ.पै.	पोष्ट पें. खर्च रु.आ.पै.
१	चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह	०-१०-०	०-२-६
२	चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह भाग पहेलो	०-६-०	०-२-०
३	,, ,, भाग बीजो आकृती बीजी	२-०-०	०-८-०
४	दंडकादी (४०) द्वार पाकापुठानी	०-६-०	०-३-०
५	,, ,, काचापुठानी	०-४-०	०-२-६
६	सुक्त मुक्तावली पाकापुंठानी	१-०-०	०-४-०
७	श्री शत्रुंजय महा तीर्थादि यात्रा-विचार पाका पुठानी	०-६-०	०-२-०
८	,, ,, काचापुठानो	० ४-०	०-१-६
९	,, ,, गुजराती टाईपनी	०-४-०	०-२-०
१०	संगीत स्तवनावली भाग पहेलो	०-२-०	०-०-६
११	गुंहली संग्रह भाग पहेलो	०-१-०	०-०-६
१२	अष्टप्रकारी तथा स्नात्र पूजा	०-३-०	०-१-०

वेताळ पेठ घर नं० ३५६ पुना सिटी. } शा. शेवनाथ लुंबाजी जैनपुस्तकालय पोरवाल एन्ड कपनी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुं तमारे ताकात अने तंदुरस्ति वधारवी छे के ?

होय तो; पोरवाल ब्लॅक टुथ पावडर अने

मदन मस्त चूर्ण दररोज वापरो.

पोरवाल ब्लॅक टुथ पावडर-आ पावडर देशी वनस्पतिमांथी बनाव्यो छे. तेना वपरासथी दांत स्वच्छ अने घणाज मजबुत बनी दांतोना दरेक प्रकारना रोगोने नाबुद करे छे. त्रण महिना चाले तेटली बाटलीनी कींमत पांच आना अने एक वर्ष चाले तेवडी मोटी बाटलीनी कींमत सवा रुपीओ पोस्ट खर्च जुदु.

मदन मस्त चूर्ण.

आ एक लोही सुधारनार अने शक्तिवर्धक वनस्पतीमांथी बनावेलुं उत्तम चूर्ण छे-माटे तेनो दररोज उपयोग करवाथी अजीर्ण अशक्तता आदि तमाम रोगो नाबुद करी शरीरमां ताकाद अने लोहीने पुरता प्रमाणमां वधारे छे अने बुद्धिने तेजस्वी करी भूखने वधारे छे बाटली एकनी कींमत आना दस. रतल एकना रुपीया अढी.

पोरवाल ऑइन्टमेन्ट-दादर अने खरजवा माटे घणीज अकसीर छे कीं. बा. १ ना आना चार.

पोरवाल बॉम—शरीरना सांधाओ तथा मांथाना दुखावा पर चोळवाथी तरत आराम थाय छे. कीं बा. १ ना आना आठ.

पोरवाल एन्युरपेसिफीक-सरवे जातना ताव उपर रामबाण ओषध कीं. बा १ ना. बार आना.

आ सिवाय बीजा रोगो उपर खात्रीनी दवाओ अमारा त्यां तैयार मळशे

(दरेक ठेकाणे एजन्टोनी जरुर छे.)

मुंबई एजन्टः-जसवंतराज तेजराज एन्ड को.

गिरगाव बेकरोड मुंबई नं. ४

सोल एजन्ट-पोरवाल एन्ड को. (रजिष्टर्ड)

३५६ वेतालपेठ पुनासिटी.

For Private And Personal Use Only